# सुभिमानी जिनगी

# सुभिमानी जिनगी

**जगदीश प्रसाद मण्डल**



पल्लवी प्रकाशन
बेरमा/निर्मली

**SUBHIMANI JINGI** (सुभिमानी जिनगी)
Collection of Maithili Stories by Shri Jagdish Prasad Mandal

**ISBN:** 978-93-87675-65-0
**दाम:** 251/- (भा.रु.)

**दोसर संस्करण:** 2023 (पहिल संस्करण: 2018)

**प्रकाशक:** पल्लवी प्रकाशन
तुलसी भवन, जे.एल.नेहरू मार्ग, वार्ड नं.: 06, निर्मली
जिला- सुपौल, बिहार: 847452
**मुद्रक:** पल्लवी प्रकाशन (मानव आर्ट)

**वेबसाइट:** http://pallavipublication.blogspot.com
**ई-मेल:** pallavi.publication.nirmali@gmail.com
**मोबाइल:** 6200635563; 9931654742

**फोण्ट सोर्स:** https://fonts.google.com/,
https://github.com/virtualvinodh/aksharamukha-fonts
**आवरण:** श्रीमती पुनम मण्डल, निर्मली (सुपौल), बिहार: 847452
**अक्षर संयोजन:** डॉ. उमेश मण्डल

# समर्पण भाव

गत-मत मीत मनुज मन
मन-मन्दिर भव भवन भवै छइ।
तखने मन भवन भव
देव-दनुज मीलि तान तनै छइ।
देव-दनुज...।
भविते भव भवन खिल-खिल
बाइन वाणी बिचैड़ बिचड़ै छइ।
वाणी वणिक करैण पकैड़
करैण-धरैण धड़ि धड़ै छइ।
करणी-धरणी धीर धड़ै छइ।
विवेक विचार विचरण करै छइ।
विचैड़ विचार विवेक बनि
पाप-पुनक पुल बनै छइ।
पाप-पुनक...।

# अनुक्रम:

# केकरा-ले केलौं

मास दिनसँ शीतलहरी चलि रहल अछि। ऐ बेरक शीतलहरी एक दशमलव दू डिग्रीक तापमानमे पहुँच गेल। लोको, मालो-जाल आ जीवो-जन्तुक तापमान केतेक निच्चाँ उतरत से तँ शीतलहरी जानए जे अपना संग आनो-आनकेँ केतेक निच्चाँ उतारलक। ओना, निच्चोँ उतरब तँ मृत्युक कारण छीहे। जहिना ऊपर एक साए आठ डिग्रीक तापमान मृत्युक लक्षण छी, तहिना चौरानबे डिग्रीसँ निच्चाँ उतरब सेहो तँ छीहे। ओना, थर्मामीटर बनने, एक साए आठ डिग्रीक नापकेँ लोक बुझए लगल जे ई मृत्युक तापमान छी, मुदा ई तापमान थर्मामीटर बनला पछातिये आएल से बात नहि, नापक यंत्र पछाइत आएल। पहिने अनुमानित छल, पहिने बेसियो तापमानकेँ लोक कमे कहै छल किए तँ मृत्युक तापमान शेष अछि। खाएर जे अछि, जेतए अछि से तेतए रहह।

तिला-संकराँतिसँ एक दिन पहिने घूर लगा कऽ आगि तपैत रही। भिनसुरका समय रहइ, शीतलहरीक पाला सघन रूपमे पसैर अन्हारो केने आ पानिक झीसी जकाँ सेहो झिसिआइत छल। आगू दिससँ आगि तापी तँ पाछू दिस ठंढा जाइत रहए आ पाछू घुमि तापी तँ आगू दिस ठरि कऽ पानि-पानि भऽ जाइत छल। मन कछ-मछ करैत रहए। तहीकाल सिंहेश्वर भाय थरथराइत पहुँचला। लहकल घूर देखिते सिंहेश्वर भाइक देहक कनकनी तँ नहि कमलैन मुदा मनक जरूर कमलैन। अबिते घूर लग बैस बजला- “किसुन! भोगीलाल

भाय अब-तबमे छैथ, देखैले चलह।"

ओना, अपनो बुझल अछि जे भोगीलाल भाय अढ़ाइ-तीन बर्खसँ ओछाइन धेने छैथ। पहिने बुधि विभ्रमित भेलैन जइसँ होशमे कमी एलैन, पछाइत विक्षिप्त जकाँ बजै-भुकैमे भँसियाए लगला। छोट-मोट डॉक्टरी परीक्षण सेहो भेलैन मुदा जेहेन रोग गरसने रहैन तेहेन नइ भेलैन। जइसँ रोग निच्चाँ-मुहेँ नै उतैर ऊपरे-मुहेँ चढ़ैत गेलैन। जेना-जेना रोग शरीरमे बढ़ैत गेलैन तेना-तेना शरीरक क्रिया प्रभावित होइत गेलैन।

सिंहेश्वर भायकेँ कहलयैन-

"भाय, भोगीए भाइक जान टा अब-तबमे छैन तेतबे किए कहै छिऐ। समैये तेहेन बिगैड़ गेल अछि जे सबहक जान अब-तबमे अछि। तखन तँ यएह ने जे भोगीलाल भाय अढ़ाइ-तीन बर्खसँ रोगाएल छैथ तँए ओ बेसी आक्रान्त हेता आ आन-आन शीतलहरीए भरिसँ छैथ तँए कनी कम हेता, सएह ने?"

जखन सिंहेश्वर भाय पहुँचल छला आ ठंढसँ सिरसिराइत छला तखुनका विचार आगि तपला बाद जखन देहक सिरसिरी कमलैन तेकर पछातिक विचारमे मोड़ एलैन। जइसँ बातमे कनेक लोच सेहो आबए लगलैन। ओना, ई बात सभ बुझिते छी जे केकरो कियो प्राण नहियेँ दए सकैए, तखन बँचल प्राणक रक्षा किछु समैयक लेल तँ कइये सकैए। सिंहेश्वर भाइक भीतुरका मनमे थोड़ेक दलदली रहबे करैन। बजलौं-

"भाय, जखन जे हेबाक हेतै से हेबे करत। पहिने एक घोंट चाह पीबू।"

बजैक क्रममे तँ बाजि गेलौं जे 'एक घोंट चाह पीबू' मुदा लगले मनमे दोसर बात उठि गेल। उठि ई गेल जे शीतलहरी कि

कोनो हमरे आकि सिंहेश्वरे भाय टा ले थोड़े अछि, सभ-ले अछि। परिवारक आनो-आन-ले अछिए। तखन जँ पत्नीकेँ चाह बनबए कहबैन से केहेन हएत। जहिना अपना-ले ठण्ढी अछि तहिना तँ हुनको-ले ने छैन। ओना, पत्नी एतेक अदब तँ रखनहि छैथ जे जँ कहबैन तँ जरूर चाह बनेबे करती। मुदा...। 'मुदा'क माने ई जे एककेँ सुख-ले दोसरकेँ कष्ट देब नीक नहि। लगले मन पाछू उनैट गेल। पाछू उनैटते एकटा विचार मनमे आएल। आएल ई जे जखन चाहक ओरियान परिवारसँ अलग अपनो रखनहि छी तखन पत्नीए-केँ किए कष्ट देबैन। बजलौं- "भाय, जमाना बदैल गेल!"

'जमाना' सुनिते सिंहेश्वर भाय चौंकला। चौंकते बजला-

"से की, से की किसुन?"

जहिना लहरल आगिमे पानि ढारलासँ एकाएक आगिक लहैर दबि जाइए तहिना जिनगीमे बालपनक क्रिया-कलापक चर्च सेहो सियानीक गरमाएल मनमे पानि ढारिते अछि। बजलौं-

"भाय, अहूँ बड़ बिसराह छी..!"

'बिसराह' सुनिते सिंहेश्वर भाइक मन मानि लेलकैन जे अपनासँ किसुन छबे मासक ने छोट अछि, मुदा साठि बर्खक जिनगी तँ संगे-संग बितैबते आबि रहल छी। जे बिसैर गेलौं ओ अपने मन केना पड़त, तँए किसुन कियो आन थोड़े छी, संग-तुरिये छी, तखन पुछैयेमे कोन हर्ज..! सिंहेश्वर भाय बजला-

"से की बिसैर गेलौं किसुन?"

गड़ देखि बजलौं-

"भाय, जखन दुनू भाँइ बैसले छी तखन धड़फड़ीए कथीक अछि। चाहक जोगार घूरे लग करै छी, दुनू गोरे गपो-सप्प करब आ चाहो बना-बना जेतेक मन फुरत तेतेक पीब। भनसियाक कोन

आशा! एक कप पिऔती सएह ने।”

सिंहेश्वर भाय सेहो अपना ऐठाम चाहक जोगार अपनो रखने छैथ। अपन बनौल चाहो आ भोजनो मनोनुकूल होइते अछि। भाय! अपने केहेन लीकरबला चाह पीबै छी से तँ अपने मन ने जानत। पत्नी किए बुझती। तहूमे चाह सनक पेय पदार्थ! कहबो केहेन हएत। अपने मने तँ पत्नियोँ जनिते छैथ जे हार्ड लीकर चाह या तँ पातर पेशाब करौत नइ तँ पेशाबे जरा देत, जइसँ पेशाबे बन्न भऽ जाएत। तहिना जखन अपनो गाढ़ चाह पीबैक मन बनि जाएत तखन चीनीकेँ थोड़े मोजर देबै जे मीठगर चाह भेल कि नहि। मुदा से ओ थोड़े बुझती, ओ तँ सदिखन मीठगर मुँह बना राखए चाहती, जइसँ चीनी चाहमे बेसी देबे करती जे सदिकाल मीठगर गप मुहसँ सुनती...।

..मुदा सदिकाल जँ पत्नीसँ मीठगरे गप करब तँ तीतगर, नोनगर गप छुटिये जाएत किने। भाय! जिनगी छी किने। जखन दुनू परानी मिलि जिनगी भरिक संगी छी तखन जिनगीक जे तीत-मीठ क्रिया अछि, ओइ सभटाकेँ ने संगे सहैत खाइत-पीबैत जीबैत-मरैत नेने चलब।

चाहक नाओं सुनिते सिंहेश्वर भाय बजला-

“बड़बढ़ियाँ विचार किसुन केलह। भने घूरे लग बैसले छी, घूरेपर चाहो बना लेब आ अहीठाम बैसल दुनू भाँइ मनसँ पीबो करब आ गपो-सप्प करब।”

ओना सिंहेश्वर भाइक मन अपना घरेपर सँ छगाएल छैन तँए विचारमे जोर देलैन। छगाएल ई जे रोगही भौजी–माने सिंहेश्वर भाइक पत्नी–केँ अखन धरि–माने पचपन-साठि बर्खक उमेर धरि–चाह बनबैक इलम नीक जकाँ नइ एलैन अछि। जेना तीमन-

तरकारीमे नोन-मिरचाइ अन्दाजोसँ दए कऽ बना लइ छैथ तेना चाह बनबैक ठेकान नइ छैन। ओना, सिंहेश्वर भाइक चपचपीक दोसरो कारण अछि। जहिना कोनो जीबलाह पुरुख जिनगीक प्रमुखसँ प्रमुख काजकेँ छोड़ि खाइ दुआरे पत्नीकेँ चुल्हिक पाछूमे बैसा अपने भानस करै छैथ तहिना सिंहेश्वरो भायकेँ छैन्हे। मुदा जे छैन से घरे भरिमे छैन से नहि, घरसँ बाहर समाजमे एहेन मानि नइ छैन सेहो नहियेँ कहल जा सकैए। तैसंग सामाजिक लोक नहि छैथ सेहो कहब सिंहेश्वर भाइक प्रति गरदैनकट्टी हएत।

गप-सप्पक क्रममे चाहो बनल आ बंगाली दादा जकाँ दू-दू गिलास चाह दुनू गोरे पीबो केलौं। ई डर मनमे किए रहत जे जेठक दुपहरियाक सफर कऽ रहल छी तँए जँ भिनसुरका तोरक अधकिलौआ गिलासक चाहक घानीपर सँ पान साए नम्बर जर्दाक पानक घानी लगा देब तखन कौल्हुक तेल जकाँ पसेना चुबबे करत। मुदा ऐठाम से बात नहि अछि, शीतलहरी-पालाक पलाएल समय अछि, एहेन समयमे सवारी तँ तखने ने सहीसँ सवार कसाएत जखन ओकर मेकप समतूल हएत। दू कप चाह पीला पछाइत मौसमक अनुकूल दुनू भैयारीक भेकम बैलेंस भेल। ओना, सिंहेश्वर भाइक मनसँ भोगीलाल भाइक ऐठाम जाएब, हेरा कऽ गप-सप्पमे बोहिया गेल छेलैन।

चाह पीलाक पछाइत अपना मनमे भोगीलाल भाय नाचए लगला। मनमे उठल भोगी भाय अब-तबमे छैथ। अब-तब भेल- कखन छैथ कखन नहि छैथ। जिनगीक अन्तिम क्षण। तहूमे जखन सिंहेश्वर भाय सुनौलैन तेकर पछातियो केते समय बीत गेल। मन आगू बढ़ल। बढ़िते मनमे विचार उठल जे अपनोकेँ तँ सामाजिक लोक बुझिते छी, अढ़ाइ-तीन बर्खसँ भोगीलाल भाय बीमार चलि रहला अछि, तइमे अपने की सभ योगदान देलिऐन। जखन

सामाजिक लोक बनि समाजमे जीबै छी तखन अपनो ते किछु दायित्वक संग कर्तव्यो बनिते अछि। कोन मुँह लऽ कऽ देखए जाएब आ देखबए जाएब...।

'देखए जाएब आ देखबए जाएब' मनमे अबिते सौनक मेघ जकाँ विचार हूमरल।

साठिक दशकमे भोगीलाल भाय आयुर्वेदसँ स्नातक केलैन। एक डॉक्टरक रूपमे अपनाकेँ समाजक बीच ठाढ़ करए चाहला। करीब पाँच बर्ख गाम-समाजक बीच डॉक्टरक रूपमे जीवनो बितौलैन। 1962 इस्वीक चुनावमे पंचायितक मुखिया पदक उम्मेदवार भेला। नवयुवक बुझि समाज भोँटो देलकैन, मुखिया बनला। क्रमश: भोगीलाल भाय अपन डॉक्टरी पेशाकेँ कमबैत गेला आ राजनीतिकेँ बढ़बैत गेला। बिनु चुनावेक जहिना सभ मुखिया बनल रहला तहिना भोगी भाय सेहो रहला। किए तँ बीस-पचीस बर्ख तक चुनावे ने भेल।

आइ, करीब अस्सी बर्खक उमेर भोगीलाल भाइक छैन। सम्पन्न परिवार लोको बुझै छैन आ अपनो परिवार बुझिते छैन। मुदा केहेन सम्पन्नता अछि ओ तँ जिनगीए-मे भेटैए। ओना, भोगीलाल भाइक अपनो भैयारी नमगर-चौड़गर रहलैन मुदा भिनौज भेने छोट भइये गेल छैन। मुदा जे छैन, तीन बेटा आ पाँच बेटी तँ अपनो छैन्हे।

आगू बढ़ैसँ पहिने सन्तानक दुनू पक्ष माने बेटा-बेटीक रूपपर थोड़ेक विचार कऽ ली। अपना समाजमे बेटी-जातिक ओहन रूप नहि अछि सेहो नहियेँ कहल जा सकैए, जहिना माता-पिताक परिवार अपनासँ दूर हटल बुझैए तहिना आब बेटो-जातिमे एहेन विचार नइ अछि सेहो नहियेँ कहल जा सकैए। मुदा प्रश्न तँ आगूमे अछिए जे सन्तानकेँ माता-पिताक सेवा करब धर्म छी की नहि? मुदा

से की बेटेटा लेल आकि बेटियो लेल।

ओना दिन बहुत ऊपर चढ़ि गेल मुदा सुर्जक धाही नइ उगने शीतलहरीक जबरदस आक्रमण समैयक मुँह-कानकेँ टेँढ़ कइये देने अछि। जइसँ भिनसुरका समैयक कोन बात जे तहूसँ पहिलुका समय जकाँ अनरोख अखनो बनले अछि। तही बीच रस्ते-रस्ते चलैत लगमे अबिते लबहदवाली भौजी बजली- “भोगी भैया मरि गेला..!”

‘भोगीलाल भैया मरि गेला’ सुनि सिंहेश्वर भाय चौंकला। चौंकैत बजला-

“जा! किसुन ई की भेल? आँखि तकैत एक मुँह गपो-सप्प ने भेल!”

ओना, समय दुआरे मन अखनो असकताइते छल मुदा गरदैनमे ढोल तँ बन्हाइये गेल। बजलौं-

“हुनकर विचारमे एते गुण तँ छैन्हे जे जहिना छकट्टी बोली जनै छला तहिना छकट्टी बोल नइ बुझै छला, सेहो नहियेँ कहल जा सकैए।”

परसुका बात सिंहेश्वर भायकेँ मोन पड़लैन। बजला-

“किसुन, परसू बेरूपहर जे भोगी भायसँ भेँट करए गेल रही आ गप-सप्प जे भेल तइसँ बुझि पड़ल जे टुटल जिनगीक सनकी रूप पकैड़ लेलकैन, तँए एहेन जिनगीसँ मृत्युए नीक।”

ओना किसुन भाय आ अपने एक्के क्लासक संगी छी, विद्यार्थीए जीवनसँ दुनू गोरे संग रहलौं। अपने समाजक संग परिवारो आ बेकतियोक ओझराएल जाल कहियौ आकि पोखरिक लीढ़-समाढ़, आकि ओकरे घाट कहियौ कि बाट, तेकरे सोझरबै पाछू लगि गेलौं आ सिंहेश्वर भाय अमरलत्ती जकाँ गाछक ऊपरका फुनगीपर देने पसरैत रहला। ओना, दुनू गोरेक बीच कोनो झगड़ा-झंझट

कहियो ने भेल, से मिलान सभ दिन रहबे कएल, अखनो अछिए। झगड़ा-झंझट किए होएत, जहिना राजनीति, समाजनीति आ सत्तानीति मुखौटी बनि मुहेँमे लागल अछि तहिना ने मुखौटिये कारोबार तीनूक हएत। तइले झगड़ा किए आ झंझट किए...। बजलौं-

"सिंहेश्वर भाय, गाममे जखन मैयत भऽ गेल आ अपना सभ बैस कऽ गप-सप्प कऽ रहल छी, एकरा समाज की कहत?"

सिंहेश्वर भाइक विचारक आगू हमर बाते दहा-भँसिया गेल। सिंहेश्वर भाय बजला-

"समाजक आँखिमे की गेजर छै जे नइ देखत, अखनो हुनके देखैले जा रहल छी, रस्तेमे छी, तइ बिच्चेमे मरि गेला, तइमे हमर कोन दोख?"

विचार बदलैत बजलौं-

"भाय, भोगी भाइक उमेर केते भेल हेतैन?"

'उमेर' सुनि सिंहेश्वर भाइक मन फेर उधियेलैन, बजला-

"उमेर की कोनो मरैबला भेल छेलैन, अपना ऐठाम साए बर्खक उमेर ठेकल अछि। तइ बीचक मरब या तँ खिच्चा मरब भेल वा कोशाएल-डम्हाएल भेल, मुदा ओकरा पाकल तँ नहियेँ कहल जाएत, तहूमे सुपक पाकल तँ आरो नइ कहल जाएत।"

सिंहेश्वर भाइक बहकैत विचारकेँ समधानि कऽ पकैड़ बजलौं-

"भाय, तैयो एकटा ठेकान तँ करै पड़त किने? किएक तँ जँ कहियो समाजक डायरी लिखाएत तइमे उमेरोक हिसाब ने हएत जे समाजमे मृत्युक उमेरक की हिसाब अछि। मरबेक उमेरसँ ने जिनगीक उमेर पएब।"

सिहेश्वर भाय भोगी भायसँ अपन बराबरी करैत बजला-

"अखने बिसैर गेलह किसुन, जखन बाले-बोध बिसैर जेबह तखन तँ जिनगीए चौपट भऽ जेतह..!"

'जिनगी चौपट भऽ जाएत..!' सुनि देह झनझना गेल। झुनझुनाइत मने पुछलयैन-

"से की भाय?"

सरती हाथ मारैत सिंहेश्वर भाय बजला-

"जहिना बालपनोमे बालपन होइए तहिना अछरोमे अछर तँ होइते अछि। सभसँ पहिने जे 'अ आ' पढ़लह सएह जँ बिसैर जेबह तखन मोटका-मोटका पोथी केना पढ़ि पेबह!"

बजलौं-

"भाय, अखन दुनियाँ जहानक बात छोड़ू, अखन जे समयक समय आगूमे आबि गेल अछि तैपर किछु विचारि लिअ।"

फेर सरती हाथ मारैत सिंहेश्वर भाय बजला-

"आब अखन आगू-मुहेँ नहि बढ़ब, माने भोगी भाय ऐठाम नइ जाइसँ नीक हएत जे अँगना-घरक काज सम्हारि एक्के बेर जाएब आ असमसान घाट होइते घुमि कऽ आएब। तैबीच पत्नीकेँ सेहो ने जानकारी दऽ देब जरूरी अछि जे असमसान होइत आएब।"

पत्नीक नाओं सुनि बजलौं-

"बिनु घरवालीक विचारे जरणो-मरणमे ने जाइ छिऐ?"

नहलापर दहला फेकैत सिंहेश्वर भाय बजला-

"जँ चेता नइ देबैन जे हम साँझ धरि घुमि कऽ आएब तैबीच अहाँ घरक फल्लाँ-फल्लाँ काज सम्हारि लेब, हम असमसानमे रहब आ ओ घरमे चुल्हि लग बैस कानिते रहती किने। अनके मरबमे ने

लोक कनैए। अपना मरबमे थोड़े कानि पौत।"

पाशा बदलैत बजलौं-

"अच्छा छोड़ू, घर-परिवारक गप। जँ भोगी भाइक जन्मकुण्डली लिखित हेतैन तखन तँ सएह पक्का भेल, जँ से नहि हेतैन तखन एकटा जन्मतिथि समाजक डायरीमे तँ कायम करए पड़त किने?"

हमर बातकेँ सूहकारैत सिंहेश्वर भाय बजला-

"अपना सभ जखन मिडिल स्कूलमे पढ़ैत रही तखन भोगी भाय आयुर्वेद कौलेजमे पढ़ैत रहैथ। अपनो सभ विद्यार्थी रही आ ओहो विद्यार्थीए छला, तँए एक उमेरिये ने सभ भेलौं।"

पुछलयैन-

"तखन तँ ऐगला नम्बर आब अहींक अछि?"

एकाएक सिंहेश्वर भाइक मन बदैल गेलैन। बजला-

"राम-नाम तँ सत् छीहे मुदा से बुझत के! अखन ई सभ छोड़ह।"

सिंहेश्वर भाइक विचार सुनि मनमे भेल जे फेर सिंहेश्वर भाय भँसिया रहला अछि। बजलौं-

"भाय, भोगी भायकेँ ओना हमहूँ देखैत आएल छिऐन मुदा हुनका ऐठाम आएब-जाएब आ भेँट-घाँटक सम्बन्ध अहाँक बेसी रहल अछि। तँए अहाँ कोन नजरिये भोगी भायकेँ देखि रहलयैन हेन, से किछु कहियौ।"

सिंहेश्वर भाय बजला-

"किसुन, बजैमे भँसिया जाइ छी। बच्चेसँ देखैत एलह जे व्याकरण पढ़ब हमरा कहियो नीक नइ लागल। तँए तूँ प्रश्न पुछह हम

जवाब दैत चलै छिअ। तइमे जे कम-बेसी भऽ जाए तँ ओकरा अपवाद बुझि मन हेतह ते मानिहह नइ तँ नइ मानिहह।"

पुछलयैन-

"भाय, प्रश्न केना पुछब से कनी बुझा दिअ।"

सिंहेश्वर भायकेँ गुरुत्वक आभास भेलैन। बजला-

"तूँ ते खेत-पथार आ परिवार छोड़ि सभ किछु बिसैर गेलह। जहिना गुरुजी बच्चामे कहै छेलखुन ने जे समाजक कसौटी भेल समाजक रहन-सहन तहिना बेकतीक सेहो ने भेल...।"

अपना जनैत सिंहेश्वर भाय नीके कहलैन मुदा अपने किछु ने बुझलौं। कहलयैन-

"भाय, पेरासूत जकाँ तेना अहाँ ओझराएल बात कहलौं जे हम बुझबे ने केलौं। अहाँ ने चौक-चौराहा आ हाट-बजार घुमै छी, हम तँ भरि दिन माटि खोधैत रहै छी जइसँ बुधियो ने मटिया गेल अछि।"

दुनू हाथे इशारा करैत सिंहेश्वर भाय बजला-

"देखहक, पहिने तूँ भोगी भाइक उमेरेक चर्च केलह, तँए अन्दाज ई कए लएह जे अपना-सभसँ दस बर्ख बेसी हुनकर उमेर रहल हेतैन।"

पुछलयैन-

"माने?"

सिंहेश्वर भाय बजला-

"सत्तैर-एकहत्तैर बर्ख ते अपनो-सभकेँ ने भेल अछि, ओ अस्सी-एकासी बर्खक भेला।"

'अस्सी-एकासी' सुनि मन मानि गेल। बजलौं- "हँ, अहिना

सोझरा-सोझरा बजियौ।"

सिंहेश्वर भाइक मनमे नव बिसवास जगलैन। बिसवास ई जगलैन जे अनेरे नोन-मिरचाइ मिला कोनो काज वा विचारकेँ बढ़ा-चढ़ा कऽ बाजब वा नोन-मिरचाइ घटा घटी-बढ़ी करि कऽ बाजबसँ नीक जे जे जहिना अछि तेकरा तहिना बाजब...। बजला-

"परसु जे भोगी भाय भेँट भेला तँ पुछलयैन जे 'भाय, की हाल अछि?"

अपनो मनसूबा जागल, बिच्चेमे बजलौं-

"तैपर ओ की कहलैन?"

सिंहेश्वर भाय बजला-

"सौंसे जिनगीक इतिहास उनटा कऽ राखि देलैन!"

फेर भकचका गेलौं। भकचका ई गेलौं जे उन्टा इतिहास की भेल? पुछलयैन-

"की उन्टा इतिहास कहलिऐ, भाय?"

सिंहेश्वर भाय बजला-

"भोगी भाय कहलैन, ओना अपनो देखैत आएल छी जे अढ़ाइ-पौने तीन बर्खसँ ओछाइन पकैड़ लेलैन। शुरूक किछु दिन तँ अपना जिनगीक किछु नित्य-कर्म तँ अपने होशे करै छला मुदा छह मास जाइत-जाइत ओ  खतम भऽ गेलैन।"

अपनो मुहसँ बजा गेल-

"एकरा के काटत।"

'के काटत' सुनि आकि सिंहेश्वर भाइक मनमे अपने किछु उचरलैन, मिरचाइक कड़ू लगलाहा जकाँ पहिने कनी सुसुएला आ सुसुएला पछाइत च्यू-च्यू करैत बजला- "किसुन, जेना भोगी भाय

आयुर्वेद शास्त्र पढ़ने छला तेना अपन आयुकेँ संयमित नहि रखि सकलाह!”

सिंहेश्वर भाइक ‘च्यू-च्यू’ सुनि बजलौं-

“आयुर्वेद की कोनो मुखौटी शिक्षा पद्धति छी, ओ तँ गीता जकाँ जिनगीक क्रियाक पद्धति छी किने। तैठाम..?”

आगू बजैले पेटमे बात रहबे करए कि बिच्चेमे सिंहेश्वर भाय बजला-

“जिनगीक पद्धति तँ जीता-जिनगी-ले अछि, आब ओकरा छोड़ह। जहिना समाजक नापी-जोखी ओकर जिनगीक बेवहारमे अछि तहिना ने पारिवारिक जिनगीमे बेकतीक सेहो अछि। तइमे भोगी भायकेँ कोताही भेलैन।”

बजा गेल-

“की कोताही भेलैन, भाय?”

“अपने मुहेँ कहलैन जे केकरा-ले एतै केलौं! सभ केलहा जेना परिवारक सभ बिसैर गेल!”

सिंहेश्वर भाइक बात सुनि बजलौं-

“भाय, समय केतबो खराप किए ने अछि मुदा अपनो-सभ तँ समाजे भेलिऐ किने, तँए गप-सप्प छोड़ू आ चलू हुनके ओइठाम।”

‘हुनके ओइठाम’ सुनिते सिंहेश्वर भाइक आगूमे परसुका देखल एकटा आरो बात आबि गेलैन। बजला-

“किसुन, जेना समांग सभसँ सम्पन्न भोगी भाइक परिवार रहलैन, तइ हिसाबे सेवा कम भेलैन..!”

बजलौं-

“से केना बुझै छी भाय?”

सिंहेश्वर भाय बजला-

“सुमित्रा भौजीक  चेहरा सुखा कऽ खढ़ सन भऽ गेल छैन। दुनू आँखिसँ पैछला जिनगीक सभ सुख नोरक धारसँ निकैल-निकैल दुखक धारमे डुमि रहल छैन। बेचारी असगरे की करती! तहूमे जे काज करैक साध छैन सएह ने करती। जे असाध छैन से केना करती। कहैले तीन बेटा तीन पुतोहु, पाँच बेटी आ पाँच जमाए छैन मुदा ने कियो एक घोंट पानि दइबला आ ने..!”

बजलौं-

“तखन तँ भोगी भाइक मरबे नीक भेलैन?”

सिंहेश्वर भाय बजला-

“नीक की नीक जकाँ भेलैन, नीकोमे नीक भेलैन।”



शब्द संख्या : 2649, तिथि : 23 जनवरी 2018

# सुभिमानी जिनगी

भोरे सुति-उठि जीवन काका दरबज्जासँ गाम दिसक रस्ता जे फुटल अछि तैठाम अपन डेढ़हत्थी ठेंगासँ डाँरि खिंचैत बुदबुदेला-

“परिवार आकि समाज एक दिस जुटि आगूमे किए ने ठाढ़ हुअए मुदा एक्को इंच पाछू अपन विचारसँ नइ घुसकब।”

ओना, जहिना आन दिन तीन बजे भोरे नीन तोड़ि ओछाइनेपर पड़ल-पड़ल जीवन काका अपन बीतल दिनक हिसाब जोड़ि अबैबला दिनक मुँह-मिलानी करैत भरि दिनक हिसाब लगा लइ छला तहिना आइयो केलैन। मुदा आन दिनक हिसाब आ औझुका हिसाबमे किछु अन्तर आबि गेल छैन। माने ई जे आन दिन जीवन काका अपन भरि दिनक हिसाब परिवारक लीलामे रखै छला मुदा आइ से नइ केलैन। परिवारक संग समाजोक चलैक रस्तापर ठाढ़ भऽ अपन विचारक डाढ़ि खिंचलैन। ओना, जीवन कक्काक अपन विचार ई छैन जे जहिना सभ दिन नव सुर्जक उदय होइए तहिना अपनो जिनगीमे सभ दिन हुअए। जखने दूध नवनीत  बनि घृत बनैक दिशामे ऐ आशाक संग बढ़ैए जे अपनो जिनगी घीवाह बनत आ जखन जिनगी घीवाह बनत तखने ने ओकर सार्थकता हएत।

अपन संकल्पक विचार मनमे रोपि जीवन काका डेढ़ियापर डेढ़हत्थी ठेंगासँ डाँरि खींचि दरबज्जाक चौकीपर आबि बैसला। बैसते व्रती जकाँ अपन व्रत मनमे रोपि दृढ़ हुअ लगला जे दुनियाँ किए ने एकभाग भऽ जाए मुदा पर्वतेश्वर  जकाँ एक्को डेग पाछू नइ

घुसकब। पाछू नइ घुसकैक दृढ़ विचार मनमे रोपाइते जीवन कक्काक नजैर अपन तेसर सन्तान- श्यामापर गेलैन। श्यामा..! श्यामा मनमे अबिते विचड़लैन- 'श्यामो तँ हमरे सन्तान छी..!'

श्यामाक प्रति विचार मनमे जगिते जीवन कक्काक देहमे जेना उमंगक फुनफुनी जगलैन। फुनफुनी जगिते देह कँप-कँपा उठलैन जइसँ एक दिस दुनियाँ क भय आगूमे ठाढ़ भेलैन तँ दोसर दिस अपन दृढ़ संकल्प सेहो समकक्ष भऽ जिनगीक सोझमे ठाढ़ भेलैन।

जीवन कक्काक तेसर सन्तान 'श्यामा'क लिंग परिचय अखन धरि स्पष्ट नहि भेल छल। बालपनक जिनगी रहने श्यामाकेँ ने खाइ-पीबैमे कोनो तरहक असोकर्ज आ ने मल-मूत्र तियाग करैमे। बच्चा सबहक संग खेलबो करैए आ पढ़ैले स्कूलो जाइते अछि। ओना, रंग-रंगक समाचार अखबार-रेडियोमे अबिते रहैए जे अमुख डॉक्टर ऐठाम लड़का-लड़की भऽ गेल आ लड़की लड़का...।

दस बर्ख बीतला पछाइत आने बाल-बच्चा जकाँ श्यामाक शरीरमे सेहो किशोरी-रूप झलकी दिअ लगल। शरीरो फौदाए लगलै आ मनक झुकाव सेहो लड़की सभ दिस झुकए लगलै। ऐठाम एकटा प्रश्न अछि, प्रश्न अछि जे बच्चा बाल-बुधि धरि लड़का-लड़की संग-संग संगी जकाँ खेलबो-धुपबो करैए आ खाइतो-पीबितो अछिए। ओकरा सभमे लिंग-भेदक कोनो आशंका मनमे रहिते ने छइ। तत्पश्चात लड़काक झुकाव लड़का दिस आ लड़कीक झुकाव लड़की दिस हुअ लगै छइ। ई अवस्था लड़का-लड़कीक प्रेम-मिलनक अवस्थासँ पूर्वक छी। ओना, श्यामाक शरीर-गठनमे नवपन आएल मुदा आनसँ भिन्न रूपमे। अखनो ई स्पष्ट नहि भेल जे श्यामा लड़का छी आकि लड़की। ओना, श्यामाक अपन उमेरक आकर्षण लड़की दिस बढ़ि रहल छल जइसँ केश बढ़ाएब, कनियाँ-पुतराक खेल-

खेलाएब इत्यादि-इत्यादि श्यामाक मनक संग बेवहारमे आबए लगलै। अखन धरि परिवारोक नजैरमे श्यामाक असल रूप आ गामो-समाजक नजैरमे झँपाएल छल।

आइ आठ दिनसँ जीवन काकाकेँ हुनक पत्नियोँ आ दुनू बेटो मुँह फोरि कऽ तँ नहि, मुदा कात-करोटसँ सुना-सुना बाजए लगलैन-

'श्यामा हमरा परिवारक नहि, हिजरा परिवारक भेल..!'

मंगली काकी–माने श्यामाक माए–जखन असगरमे बैस विचारै छेली तँ देखै छेली जे जहिना जेठ दुनू सन्तानकेँ पेटमे नअ मास सेवलौं तहिना ने श्यामाकेँ सेहो सेवने छी। मुदा..!, ऐमे हमर कोन दोख अछि..? सभ लीला तँ भगवानक छिऐन..!

मुदा लगले जखन बेटा-पुतोहु वा सर-समाज श्यामाक प्रति कहैन जे ई अपना सबहक सन्तान नहि, तखन मंगली काकी सेहो ओही विचारमे भँसिया समाज दिस तकैत श्यामाकेँ अपन नहि बुझि तियाग करैले तैयार भऽ जाइथ..! 'माइक दिल', 'माइक दिल' तँ दिन-राति अनघोल होइते अछि, मुदा ओकर बेवहारिक पक्ष की अछि से के देखत..!

श्यामाक प्रति अखन धरि समाजक अधिकांश लोकक यएह धारणा बनल रहल छल जे श्यामा लड़का छी। ओना दुनू परानी जीवन काकाक मनमे बच्चेसँ शंका उठलैन जइसँ केतेको डॉक्टर आ केतेको ओझा-गुनीसँ श्यामाकेँ देखा-सुना चुकल छला। ओझा-गुनी तँ घरक देवताक दोख लगा अपन-अपन पल्ला झाड़लक। मुदा डॉक्टरी जाँच-परताल करौला पछाइत अपन हारि कबुल कऽ डॉक्टर सभ जीवन काकाकेँ कहि देलकैन जे हमरा साधसँ बाहर अछि मुदा अहाँक तँ सन्तान छी, अहाँकेँ ते केतौ भगैक रस्ता नहि...।

डॉक्टरी विचारक पछाइत जीवन काका लड़का-लड़कीकेँ

मनसँ हटा सन्तानक सीमापर ठाढ़ भऽ गेला। मनमे कखनो काल किन्नर परिवारक रूप-रेखा अबैन। किन्नर परिवारक रूप-रेखा देखि मनक संग देहो काँपि उठैन जे ओ परिवार तँ समाजक हँसियापर अछि! अपना परिवारमे बाप-पुरखाक देल बीस बीघा जमीन अछि, किसान परिवार छी, किसानी जीवन अछि। जेकर धर्म रहलै जे अपन परिवारक भरण-पोषणक कोन बात जे दरबज्जापर आएल आनो-आन खगलोकेँ आ बाटो-बटोहीकेँ खाइ-पीबैक परहेज नहि अछि। धार्मिक वृत्ति समाजक परिवारमे रहबे कएल अछि जे जिनका जएह विभव छैन ओ ओहीमे परिवारक सभ मीलि-बैस खाइ-पीबी। व्यास बाबाक समाज तँ आइ अछि नहि, जे बुझत- लूटि लाउ, कुटि खाउ, प्रात भने फेर जाउ...।'

अप्पन आइ धरिक परिवारक जिनगीक धाराकेँ देखि जीवन कक्काक मनमे भोरेसँ जहिना दृढ़ता उठलैन जे अपन आँखिक सोझमे अपन सन्तानकेँ भिखमंगा परिवारमे किन्नौं नइ जाए देब, चाहे ऐ खातिर जे हुअए। परिवारे आकि समाजे की कहत। की समाज ई नइ जनैए जे श्यामा हमर तेसर सन्तान छी..?

दरबज्जाक ओसारक चौकीपर जीवन काकाकेँ अकलवेरा मे उमंगित बैसल देखि मंगली काकीक मनमे ओहिना हुमरलैन जहिना जेठ मासक रौदक जरल मेघमे हनहनाइत तूफानी दौरमे करिया मेघ ऊपर चढ़ए लगैए जइसँ धरतियोपर हवा-बिहाड़ि, पानि-पाथर अबैक सम्भावना बनियेँ जाइए तहिना भेलैन। मुदा लगले मन थीर भऽ गेलैन। तैबीच दरबज्जापर पहुँच मंगली काकी जीवन काकाकेँ पुछलकैन-

"चाहे पीब आकि पानियोँ पीब?"

ओना आजुक परिवेशमे एहेन विचार मनुखाह बनि मरखाह

बनि सकैए। किएक तँ पानि नहि, पीबैक माने किछु खेलाक पछाइत पानि पीबसँ अछि। मुदा से नहि, कृषक बीच अखनो एहेन चलैन अछि जे सभसँ पहिने मुँह-कान धोनौं वा बिनु धोनौं खाली पानि पीबाक चलैन अछि। बिनु मुँह धोने माने भेल बाइसे मुहेँ बसिया पानि पीब। तँए हुनकर खतियान एहेन बनि गेल छैन जे भोरमे सभसँ पहिने मन भरि पानि पीबी। पछाइत चाह-पान चलत। तैठाम चाहक संग पानिक चलैन किए रहत? मुदा से नहि, मंगली काकीक मन जीवन कक्काक रूप देखि थरथरा गेल रहैन तँए बाजल छेली।

जीवन काका मंगली काकी दिस टकटक देखए लगला जे यएह माए अपन कोखिक सन्तानकेँ भिखमंगाक सन्तान बनबए चाहि रहली अछि। मुदा मनक विचारकेँ मनेमे अरोपि बजला-

“चाहो पीब आ किछु गपो-सप्प करब। तँए अपनो चाह एतै नेने आउ। संगे-संग पीबो करब आ...।”

ओना संगे-संग चाह पीबैक साहस मंगली काकीक मनमे घटि रहल छेलैन। तँए बहन्ना बनबैत पहिने हिनकेटा-ले गिलासमे चाह नेने पहुँचली।

पतिक हाथमे गिलास पकड़ा मंगली काकी अपने चोटे घुमि आँगन आबि गेली। आँगन आबि चाह तँ पीबए लगली मुदा मन थरथराइते रहैन। मन थरथराइक कारण रहैन दुनू गोरेक बीचक ने परिवार छी, तखन चाहमे किए..?

मंगली काकी घोंटे-घोंटे चाहो पीबैथ आ मनकेँ घटे-घट सकतेबो करैथ। चाह पीला पछाइत दरबज्जापर आबि जीवन कक्काक आगूमे ठाढ़ भेली। ओना, तैबीच काकीक मनमे ईहो जगि चुकल छेलैन जे जहिना पति छैथ तहिना ने बेटो अछि। जहिना पतिकेँ खुश राखब अप्पन दायित्व छी तहिना ने बेटोकेँ राखए पड़त।

तँए निर्भिक रूपमे मंगली काकी जीवन कक्काक आगूमे ठाढ़ भेली।

पत्नीकेँ आगूमे ठाढ़ देखि जीवन कक्काक मन चकभौर लिअ लगलैन। जहिना धारक मोनिक चकभौरमे कियो-कियो डुमबो करैए, तहिना अकासमे गीध चकभौर लैत चारू दिशा देखबो करैए आ पाहि लगा पहियेबो करिते अछि। जीवन कक्काक मनमे पहिल दिशाक चकभौरमे जगलैन जे पति-पत्नीक बीचक ने परिवारो छी आ सन्तानो छी। मुदा तँए सोभावमे अन्तर नहि अछि सेहो केना मानल जाएत। पुरुखक सोभाव होइए जे जँ अपने वा परिवारक सन्तानेक आगू अबैत बाधा मे सन्तानकेँ संरक्षण दैत अपने आगूमे ठाढ़ भऽ सामना करब, भलेँ परिणाम जेहेन होइ, मुदा पत्नीक की ई सोभाव नइ अछि जे आक्रमिक आगूमे ठाढ़ भऽ सन्तानकेँ दुनू हाथे दुनू हाथ पकैड़ मारि खुआ दइए। ओना, ऐठाम एहेन प्रश्न अछिए जे संरक्षणक रूप केहेन अछि?

फेर दोसर चकभौर जीवन कक्काक मनमे उठलैन। उठलैन ई जे श्यामाक जहिना 'पिता' भेलिऐ तहिना ने पत्नियोँ 'माए' भेलखिन। तैठाम अप्पन चाह की अछि आ पत्नीक चाह की छैन? केकरो बात सुनला पछाइत ओइपर नीक जकाँ विचारबो तँ जरूरी अछिए। विचारक पछाइत हँ-नइक ने निर्णय करब। आकि कियो बाजल जे 'कौआ कान नेने जाइए' आ ओकरा सुनि अपन कान बिनु देखनहि जँ कौआक पाछू-पाछू दौगब, ई केहेन हएत..?

दू भौक टपैत-टपैत जीवन कक्काक मन कनी थमलैन। ओना, ने जीवन काका किछु बजै छला आ ने मंगलीए काकी किछु बजै छेली। मुदा भीतरे-भीतर दुनू बेकतीक मनमे समुद्री तूफान चलिये रहल छेलैन। पत्नीक अलिसाएल-मलिसाएल चेहराक रंग देखि जीवन कक्काक मन सेहो पसीज रहल छेलैन। जे एकाएक मन

बिहुसि उठलैन। जीवन काका बजला-

“एकटा पनचैती अहाँसँ कराएब अछि, घरक बात छी तँए पहिने घरेक लोक ने ओइपर विचार करत। जँ घरमे नइ फरिछाएत तखन ने समाज आकि संसार देखब।”

पतिक विचार सुनि मंगली काकीक मनमे एकाएक चमक एलैन। चमक अबिते मनमे उठलैन जे परिवारेक विषयमे ने पतियो विचार करए कहि रहल छैथ। जखने परिवारमे पति-पत्नी मिलि, वैचारिक एकरूपता आनि परिवार चलौत तखने ने ओ परिवार अपना बले ठाढ़ हएत। जइसँ जिनगीक धारा एकबट्ट होइत आगू बढ़ैत चलत। ओना, तैबीच परिस्थितिवश तोड़-जोड़ सेहो चलिते रहत। परिस्थितिक अर्थ भेल- ‘परि+स्थिति’, तँए, जखने परक स्थिति आगूमे औत तखने कनी-मनी डोल-पात हेबे करत...।

मंगली काकी बजली-

“बाजू, की कहै छी?”

मंगली काकीक विचार सुनि जीवन काका समधानल प्रश्न रखैत बजला-

“अपना दुनू गोरेक बीच केते सन्तान अछि?”

मंगली काकी बजली-

“तीन।”

बजैक क्रममे तँ मंगली काकी बाजि गेली मुदा लगले मन बेटाक संग समाज दिस बढ़ि गेने तत-मत करए लगली।

पत्नीक ततमती देखि जीवन काका बुझि गेला जे पछुआ दाबि रहल छैन। ठिकिया कऽ जीवन काका दोसर प्रश्न रखला-

“एतेटा दुनियाँमे अहाँकेँ सभसँ लग के अछि?”

अतीतोमे जे अतीत अछि। जेकर जेहेन परतीत तेकर तेहने ने अतीतो। किए कियो अपन छोड़ि अनका-ले मरैए आ किए कियो अनका छोड़ि अपना-ले मरैए..? धरती-अकासक बीचक क्षितिजमे जहिना केहनो-केहनो उड़न-चिड़ैया फँसि जाइए तहिना मंगली काकीक मन एकाएक फँसि गेलैन। दुनियाँमे सभसँ लग के? अतीतमे वौआइत मंगली काकीकेँ बिआहक अपन मरबा मोन पड़ि गेलैन। मोन पड़लैन जे ओही मरबापर ने माए-बापक संग समाजो पतिक हाथ पकड़ा कहलैन जे दुनियाँ मेटि जाए मुदा पतिक संग नइ छोड़ब...।

मंगली काकी बजली-

"बुझलो बात अनठा किए बजै छी। हमरा बकलेल-ढहलेल बुझै छी?"

मंगली काकीक चपचपाएल बोल सुनि अपन चपचपी मिलबैत जीवन काका बजला-

"अहाँ केना बुझि गेलिऐ जे हम अनठा कऽ बजलौं हेन। जे कहैक अछि से पहिने चेतौनी दैत चेता देब।"

जीवन कक्काक वाणीमे जेहेन ओज छेलैन तेहने मनो ओजस्वी छेलैन्हे जइसँ मंगली काकीक मनमे भय सेहो जगलैन। भयकेँ जगिते ज्वर-बुखार नपैबला थर्मामीटरक पारा जहिना गरमी पेब चढ़ैए आ ठण्ढी पेब उतैरतो अछि तहिना मंगली काकीकेँ भेलैन। बजली-

"अहाँसँ हम कोनो हटल छी। जे कहै छी, जेना कहै छी तहिना ने सुनबो करै छी आ करबो करै छी।"

पत्नीक विचार सुनि जीवन कक्काक मनमे उठलैन जे आइ जे समस्या परिवारक सोझामे उपस्थित भऽ गेल अछि ओ नान्हिटा नहि

अछि। पत्नीसँ परिवार होइत समाज धरिक बीचक समस्या छी, तँए नान्हि-नान्हिटा विचारमे ओझराएब उचित नहि...।

जीवन काका बजला-

"सुनबामे आएल अछि जे अहूँ श्यामाकेँ अपन सन्तान नहि बुझि तियाग करैले तैयार छी?"

पतिक बात सुनि मंगली काकी सहैम गेली। करेजक संग विचारो डोलायमान हुअ लगलैन। की बाजब आ की नइ बाजब तैबीच मंगली काकीक विचार ओझराए लगलैन। किछु बजैक साहसे ने भऽ रहल छेलैन।

मंगली काकीकेँ चुपी साधल देखि जीवन काका बजला-

"चुप रहने काज चलत! मुँह खोलि बाजू जे अहाँ की चाहै छी। कियो अपने विचारक ने मालिक अछि।"

थरथराइत मने मंगली काकी बजली-

"अपन बेटो आ समाजोक लोक श्यामाकेँ अपन नहि बुझि दोसराक कहि रहल अछि! तैबीच..?"

पत्नीक झूकैत विचार सुनि जीवन काका दृढ़ भऽ बजला-

"चाहे ओ बेटा हुअए वा समाज, कान खोलि कऽ सभ सुनि लिअ जे श्यामा हमर सन्तान छी, सन्तान बनि रहत। ई हमहूँ बुझै छिऐ जे श्यामा नि:सन्तान रहत, मुदा तँए ओ मनुक्ख नहि छी आ मनुक्खक जिनगी नहि जीब सकैए, हम तेकरा मानैले तैयार नहि छी।"

पतिक दृढ़ विचार सुनि मंगली काकीक मनमे सेहो दृढ़ता आबए लगलैन, एकाएक अपन कोखिक संतप्त श्यामापर मन एकाग्र हुअ लगलैन। एकाग्र होइते मनमे उठलैन- श्यामेटा एहेन

सन्तान थोड़े छी, दुनियाँमे एहेन बहुत लोक अछि जेकरा प्रकृत्ति प्रकोपसँ सन्तानोत्पतिक शक्ति नइ छइ। तँए ओकरा परिवार वा समाजसँ वहिष्कृत करब कहाँ धरि उचित हएत...।

तैबीच जीवन काका बजला-

"पहिने अहाँ ई कहू जे अहाँक मनमे की अछि। की श्यामाकेँ अपन सन्तान नइ बुझि छोड़ैले तैयार छी?"

पतिक दृढ़ विचार पेब बिना किछु आगू-पाछू तकने मंगली काकी बजली-

"श्यामा की कोनो हमरेटा सन्तान छी आ अहाँक नहि छी।"

ढलानपर सँ टघरैत पानिक रोकाबकेँ देखि जीवनानुभवी लोक जहिना छील-छील कऽ चिक्कन बना-बना एकबट्ट करैत छिड़ियाएल पानिकेँ धरिया धाराक रूपमे आगू बढ़बै छैथ तहिना जीवन काका मंगली काकीक छिड़ियाएल विचारकेँ समेट बजला-

"पूबक सूर्ज पच्छिम किए ने उगइ, जमीनक पानि अकास सिर किए ने चढ़इ मुदा श्यामाकेँ अपन सन्तान छोड़ि ने अनकर बुझब आ ने अनका हाथ जाए देब।"

विस्मित होइत मंगली काकी बजली-

"लोक की कहत..!"

मंगली काकीक विचार सुनि जीवन कक्काक अन्तरात्मा जेना ओहन बिजलोका जकाँ चमकलैन जेहेनमे ठनका खसैए। बजला-

"लोक की कहत! लोक पहिने अपन ठेकान करह। जेकरा अपन ठेकान नइ से अनकर ठनका रोकि सकैए आकि अपनाकेँ बँचा सकैए।"

पतिक विचार सुनि मंगली काकी सिरसिराए लगली। एकाएक

देहमे सिरसिराएल कँपन हुअ लगलैन। कँप-कँपाइत पुछलखिन-

“की लोकक ठेकान?”

पत्नीक जलियाएल विचार सुनि जीवन कक्काक मनमे कुवाथ नहि भेलैन। तेकर कारण अछि जे जीवन कक्काक विचारक सागरमे लहैर जकाँ उठि गेल छेलैन। लहराइत विचारमे आबि रहल छेलैन जे जँ मनुक्ख छोट-सँ-छोट आ पैघ-सँ-पैघ अपन जिनगीक रस्ताक बाधाकेँ अपना आँखिये ठिकिया मनसँ हटबए चाहत तँ ओ जरूर हटा जिनगीकेँ बाधामुक्त कऽ सकैए। जखने जिनगी बाधामुक्त भेल तखने ने ओ जिनगी घोड़ाक चालिमे सरपट दौड़ लगौत...।

जीवन काका बजला-

“जे समस्या अपना परिवारमे उपस्थित भऽ गेल अछि ओ खाली अपने परिवार-टा मे भेल आकि आइये भेल अछि आ पहिने नइ भेल हएत से केना बुझै छिऐ? सभ दिन होइत आबि रहल अछि आ आगूओ होइत रहत। महादेवकेँ सेहो अर्द्धनारीश्वर कहल जाइ छैन। जखने अर्द्धनारीश्वर तखने ने सन्तान विहीन! कार्तिक आ गणेश तँ तखन भेलैन जखन महादेव आ पार्वती दुनू दू छला। मुदा जखन दुनू सटि एक भेला तखन कोनो सन्तान नइ ने भेलैन। तँए की हुनका देववंशसँ कियो हटा देलकैन आकि हटा देतैन?”

ओना, मंगली काकीकेँ महादेव-पार्वतीक ओ कथा (माने अर्द्धनारीश्वरबला कथा सुनल रहैन मुदा एना भऽ कऽ नहि, ई नइ बुझल रहैन जे अर्द्धनारीश्वर की। तँए, धार-कातक पँकियाएल चपचपीमे जहिना चँङ्गुराएल चिड़ौयो आ पैरबला जानवरक संग लोको चपि कऽ गड़ि जाइए, तहिना मंगली काकी सेहो चपि कऽ गड़ि मुँहपर हाथ लैत बजली-

“ऐँ.अ..अ..!”

जीवन काकाकेँ जेना सहगर खेतक लभगर हाल भेटलैन तहिना बजला-

“ऐँ-टैँ नइ करू! वएह शिवजी महादेव छैथ जे देखलखिन जे जे कृष्णजी महिला संगठनक नेता छैथ ओ महिला छोड़ि पुरुखक प्रवेश रोकने छैथ, तखन ओ की केलैन से बुझल अछि?”

विचारक बोनमे हेराएल-भोथियाएल बेटोही जकाँ मंगली काकी बजली-

“नइ! अहूँ ने तँ कहियो कहने छेलौं।”

जीवन काका बजला-

“कोनो कि एकेटा गप अछि जे ओ छुटि गेल ते बड़ जुलुम भऽ गेल। जखने जागी तखने परात..!”

उत्सुकाएल मंगली काकी बजली-

“पहिने शिवशंकर दानीक कथा कहि दिअ।”

पत्नीक चपचपी देखि चपचपाइत जीवन काका बजला-

“शिवसँ शिबानी बनि कृष्णजीक महिला संगठनमे शामिल भऽ गेला..!”

मंगली काकीकेँ जेना एकाएक भक् खुजलैन तहिना बजली-

“एहेन बात जे अहाँ पेटमे रखने छेलौं आ कहियो एतबो सिनेह नइ भेल जे हमरो कहितौं..!”

पत्नीक झुझुआइत मनकेँ जीवन काका पकैड़ बिच्चेमे बजला-

“पेटमे कि एतबे अछि। अच्छा जखन अहाँ पेटक बात लिअ चाहै छी ते सुनू। ई तँ शिवशंकर महादेवक विषयमे कहलौं। आब सुनू महाभारतक विषय।”

‘महाभारत’क नाओं मंगली काकी सुनने जरूर छैथ आ द्रौपदीक चिरहरणक सिनेमो देखने छैथ। तँए, महाभारतक नओं सुनि आरो जिज्ञासा बढ़ि गेलैन। बजली-

“सुनाइये दिअ। जिनगीक कोनो ठेकान अछि, जँ मन लगले चलि जाएत तखन तँ अनेरे ने भूत बनि लपकबै।”

मुस्की दैत जीवन काका बजला-

“जखन महाभारत होइत रहै ने, तइमे एकटा वीर रहै शिखंडी, ओहो अपने श्यामा जकाँ छल। ओ की केलकै से बुझल अछि?”

मुड़ी डोलबैत मंगली काकी बजली-

“नइ..!”

जीवन काका बजला-

“कृपाचार्योकेँ आ कृतवर्मोकेँ छेरा-छेरा भरौलक!”

मंगली काकीक मनमे जेना आत्मबल फुलाए लगलैन तहिना बिहुसैत बजली-

“अरे वा..!”

जीवन काका मंगली काकीक मनमे पसि बजला-

“ऐँ., एतबेमे हदिआइ छी! भगवान राम जखन बोन जाए लगला तँ अन्तिम विदाइ अयोध्यावासी लैत-दैत पुरुख-नारी कहि तँ सभकेँ विदा कऽ देलखिन आ अपने दच्छिन मुहेँक रस्ता धेलैन, आ बीचमे किछु गोरे ओहिना ठाढ़े रहि गेल, ओ की केलक से बुझल अछि?”

मंगली काकी बजली-

“नइ..!”

जीवन काका बजला- “ओ सभ–जे ठाढ़ छल से–के सभ

छल? जे पुरुख-नारीक बीचक अछि। जेकरा शखा-सन्तान नइ हएत। जखन रामचन्द्रजी, लक्ष्मण आ सीताक संग घुमि कऽ अयोध्याक आड़िपर पहुँचला तखन वएह सभ दुनू भाँइक गट्टा पकैड़ कहलकैन जे 'अहाँ हमरा किए ने विदाइ देलौं? जइ आशामे अहीं जकाँ चौदह बर्ख हमहूँ सभ टपला खेलौं?"

मंगली काकीक मनो आ शरीरो जेना शान्त भऽ गेलैन। बजली-

"जे अहाँ करबै सएह ने हमहूँ करब।"

रणभूमिक संगी पेब जीवन काका बजला-

"श्यामा हमर सन्तान छी। अपना जीबैत ओकरा भीख माँगैत देखब, की ओहन लाजक विचार लोक अपने नइ करत। दुनियाँ एक दिस भऽ जाए, मुदा...। जाबे धरि श्यामा पढ़ए चाहत, समांग बुझि सहयोग देबइ। जहिया ओ पढ़ाइ छोड़त तहिया अपना आँखिक सोझमे ओकरा मनोनुकूल जीबैक साधन बना देबइ। अपना पैरपर ठाढ़ कऽ समाजक ओहन मनुक्ख बना देबै जे अपन श्रमसँ अपन सुभिमानी जिनगी बना जीबत आ ओकर रक्षा करैत रहत।"



शब्द संख्या : 2767, तिथि : 28 जनवरी 2018

# बाबाक बाग-बगिया

दस कट्ठाक कलम-बाग बाबाक आइ सुखि रहल छैन, टुटि-टुटि झड़ि-झड़ि खसि रहल छैन। बाबाक बाग-बगियाक ओ रूप नहि रहल जे कहियो छेलैन।

गोबरधन दासक जन्मक तीन सालक पछाइत पिताक मृत्यु भऽ गेल छेलैन। बपटुग्गर गोबरधन दास अपन माइक संग दिन काटए लगला। एगारह बर्खक जखन गोबरधन दास भेला तैबीच माइयोक मृत्यु भऽ गेलैन। एगारह बर्खक गोबरधन दासक मनमे उठलैन- जेकरा माए-बाप, स्त्री-बच्चा छै से ने परिवार आ परिवारक मायामे ओझराएल रहत, हमरा कोन माया अछि जे समाजक वा परिवारक कोनो बान्ह-छान लागत...।

लगले फेर गोबरधन दासक मनमे उठलैन जे अपना सन कि कोनो हमहींटा छी आकि आरो लोक अछि। जहिना दुनियाँमे सभ अपने सन अछि तहिना ने हमहूँ छी। नइ रहब ऐ गाममे। जेकरा लाब-लस्कर  छै तेकरा ने माया-मोह रहतै, हमरा किए रहत। एकटा टुटल घर अछि, सेहो घराड़ी अपन नहियेँ छी, जेकर छिऐ ओ कखनो लऽ लेत। जाबे देने अछि ताबैये तक ने अपन घर अछि, जहिया जमीनबलाक मन हेतै तहिया लऽ लेत।

संजोग बनल, किछुए दिनक पछाइत कुम्भ मेलाक संग त्रिवेणी असनानक समय आएल। गोबरधन दासक मनमे उठल जे बाबाजी सभकेँ गाड़ीमे टिकट नहियेँ लगै छै, हमहूँ कोनो बबाजीक

जत्थाक लाट पकैड़ लेब, बिनु टिकटे त्रिवेणी घाट पहुँच जाएब। गंगामे असनान करि माता-पितासँ लऽ कऽ पूर्वज धरिक स्मरण करैत डूम लऽ लेब। घुमतीकाल फेर कोनो बबाजियेक लाट पकैड़ लेब, मन हएत तँ बबाजीए बनि जाएब नइ तँ केतौ कोनो नोकरीए पकैड़ लेब। जखन हाथ-पएर दुरुस्त अछि तखन गुजर नइ चलत! चलबे करत। भेल तँ छह सात बर्खक खेल अछि। जखने जुआन हएब तखने बिआह-दान करैक छूट भेटिये जाएत। पछाइत बुझल जेतइ...।

दुनू दिसक बाट गोबरधन दासक मनमे उठि गेलैन। माने बबाजियो बनैक आ पारिवारिको बनैक। मुदा बबाजीक लाट पकड़ैले ते बबाजी बनइ पड़त। माने कोनो साम्प्रदायिक गुरु मंत्रक संग कण्ठी लेला पछातिये ने बबाजी हएब। खाएर.., काजो तँ कोनो तेहेन कठिनगर नहियेँ अछि। हल्लुके अछि। मुदा हल्लुको काज एते धड़फड़ीमे हएत केना? परसूए लोक गाड़ी पकड़त, आइ बीतिये रहल अछि, अदहासँ बेसी समय बीति चुकल अछि। अखन विचारिये रहल छी। भेल तँ बीचमे मात्र काल्हि भरि समय अछि। तेहीमे बटखरचोक ओरियान करए पड़त। अनका जकाँ माँगि-माँगि खाएब सेहो केहेन हएत। अखन जनैम कऽ ठाढ़े भेलौं अछि, अखने जँ आत्मामे आगि लगा लेब–माने माँगि-माँगि खाएब शुरू कऽ लेब, एकरा लोको नीक थोड़े कहत। आ जँ माँगि-माँगि खेनिहार नीको कहत तँ अपन मन थोड़े नीक कहत। जेकरा माँगि-माँगि खाइक आदत छै आकि ठकि-फुसिया कऽ खाइक आदत छै, ओ भलेँ नीक कहि सकैए मुदा से नीक थोड़े भेल।

एक संग गोबरधन दासक मनमे तीनटा प्रश्न उठि गेलैन। पहिल- कुम्भ मेलामे त्रिवेणी-असनान करब, दोसर- कण्ठी बान्हि बबाजी बनब आ तेसर- रस्ताक खर्चक ओरियान...।

परसू भोरे लोक गाड़ी पकड़त। बीचमे एक दिन बँचैए जइमे तीनू काज केना सम्हरत? आ जँ नहि सम्हरत तखन जाएब केना? मुदा जे राम से राम जाएब जरूर...।

लगले गोबरधन दासक मनमे उठलैन जे जखन जाइक विचार मनमे रोपा गेल तखन जाएब जरूर। अखनेसँ ओइ पाछू लगि जाइ छी। होइतो अहिना छै जे कोनो काजकेँ निआरला पछाइत ओइमे लगि गेलासँ काजक सिद्धिक सम्भावना बनियेँ जाइ छइ। नइ ओइठाम बनै छै जैठाम काजक निआर खाली विचारेक निआर रहल, माने निआर मात्र गप-सप्पक क्रममे रहल।

गोबरधन दासक मन कहलकैन जे कोनो काजक क्रमिक सूत्र होइए। जँ ओइ सूत्रकेँ पकैड़ चलल जाए तँ कोनो-ने-कोनो सूत्रक स्रोत भेटिये जाएत। जखने स्रोत भेटत तखने ओइमे लगि-भीर पड़ि जाएब। अखन ने बुझि पड़ैए जे काज जपाल जकाँ भारी अछि, मुदा पुरबैक जोगारोक समैयो तँ अछिए। भेल तँ जे काज अनका हाथमे रहल आकि अनकर हथौटी काज जे अछि ओ ने अपना साधसँ बाहर अछि। मुदा जँ अपन काजकेँ अपन हथौटी पहिरा अपना हाथे करए लगब तखने ओ अपना साधमे आबि जाएत। जखन अपना हाथमे अबैक सूत्र भेट जाएत तखने ने ओ सुढ़िया जाएत। से नहि तँ एक-एक काजक आ बीचक एक-एक समस्याक विचार करब जरूरी अछि। अखन ने तीनटा काज अछि तँ भारी बुझि पड़ैए। मुदा जखने तीनू काजकेँ तीन टुकड़ी बना करए लगब तखने ने हल्लुक भऽ जाएत।

काजकेँ हल्लुक होइत देखि गोबरधन दासक मन हल्लुक भेलैन। हल्लुक होइते एक-एक काज आ एक-एकटा समस्याकेँ बिलगौलैन।

पहिल- जखन बबाजी बनि घरसँ निकलैक अछि तखन पहिने बबाजी हएब जरूरी भेल। मुदा ओहो तँ अनके हाथक काज भेल। पहिने गुरुकेँ टोहियाएब अछि। मुदा गुरुकेँ टोहियेला पछातियो ओ चेला बनौता कि नहि, से तँ हुनका मनक ने भेल। अपना मनक तँ एतबे ने भेल जे अपनेसँ टोहिया हुनका ऐठाम पहुँचब। एक तँ गुरु तकैमे समय लागत तैपर ओ लगले भेटता कि नहि। भेटला पछातियो चेला बनौता कि नहि। तेतबे नहि, जँ चेला बनाएब गछियो लेता आ ऑफिसक हाकिम जकाँ मास दिनक समय दऽ मासे-मास दौड़ाइयो सकै छैथ। तखन परसुका गाड़ी केना पकड़ब? आ जँ परसू गाड़ी नइ पकड़ब तँ कि हमरा गरजे लगले-लगले कुम्भ-असनान हएत..?

गोबरधन दासक मन आगू-पाछू हुअ लगलैन। आगू-पाछू होइक कारण एकटा आरो भेल, ओ ई जे गोरबधन दास तँ आइ ने 'गोबरधन दास' भेला, मुदा आइसँ पहिने 'गोबरधना' छला। खेतकेँ गोबरेला पछाइत ओइमे अन्न वा कोनो आने फसल जहिना बेसी उपजैए तहिना गोबरधनासँ बदलैत गोबरधन दासक मनमे कुम्भ असनानक विचार एलासँ भेलैन। कुम्भे ने कलश सेहो छी जेकरा पेब मनुक्खो कलशैए।

एकाएक गोबरधनक मनमे उठलैन- किछु बीत जाएत मुदा परसुका गाड़ी जरूर पकैड़ लेब। संकल्पेक संग ने बिकल्पक रस्ता लोक तकैए। जँ संकल्पे नहि तखन विकल्पक जड़ि केतए..! से विकल्प गोबरधनकेँ भेटलैन। विकल्प ई भेटलैन जे गुलाव केतबो नीक फूल किए ने हुअए मुदा ओकर धड़क भेख थोड़े बनत। ओ तँ बनत करबीर, तुलसी, बेली, जुही, कुश इत्यादियेसँ। आगू-पाछू करैत गोबरधनक मन एकाएक बिहुसि उठलैन। बिहुसैक कारण भेलैन जे जखन संगेमे वैद तखन मरब बेकूफी। भेल तँ बेली फूलक

एकटा डारिक कण्ठी बना ओइमे प्रेमसँ जनेउ पहिरा माला बना लेब। जखने जनेउ कण्ठी पहिरत तखने माला बनि जाएत। ओकरे पूजो करब आ जपबो करब। जेही हाथे कण्ठी बनाएब तेही हाथे गरदैनमे धारणो कऽ लेब। बस भऽ गेलौं बबाजी। बबाजियो बनब कि बड़ भारी अछि। रौदियाह समय होइते सहरगंजा लोक कण्ठी पहिर लइये आ बरसाती उजैहिया देखिते ओकरा तोड़ि माछ खाए लगैए। भेल तँ एतबे ने सालमे करए पड़त जे एक बेर पहिरब आ एकबेर उतारि कऽ कोठीक कान्हपर राखब। जइ दुनियाँमे एहेन-एहेन खेल अछि तेही दुनियाँमे ने अपनो छी। अपने हाथे बबाजी हएब...।

गोबरधनक मन मानि गेलैन आ कण्ठी पहिर 'गोबरधन गोबरधन दास' बनि गेला।

गोबरधन दास बनला पछाइत बटखरचापर नजैर उठौलैन। नजैर उठिते मनमे एलैन जे जखन गामे छोड़ि जा रहल छी तखन थारीए-लोटा केकरा-ले रहए देब। एकटा बेच कऽ बेसाहि-बेसाहि खाएब आ दोसर अपना काज-ले राखब।

'एकटा बेच लेब दोसर अपना-ले राखब' एतए तकक विचार सरपट दौड़मे गोबरधन दासक मनमे आबि गेलैन मुदा कोन राखब आ कोन बेचब, माने थारी राखब कि लोटा तइमे ओझरा गेला। मनमे उठलैन जे जँ लोटा नइ राखब ते पानि कथीमे पीब, आ जँ थारी बेच लेब तखन खाएब कथीमे? एकटा भेल पानि पीबैक वौस, दोसर भेल खेनाइ खाइक वौस। खगता दुनूक अछिए। जँ दुनू बेच लेब, तेतेक खगतो नहियेँ अछि आ दुनू राखि लेब तखन बेसाहब कथीसँ? संकल्प जेना गोबरधन दासक मनकेँ हौंर देलकैन। जहिना छाँछमे मोहीसँ मक्खन मथल जाइए, भलेँ ओ अपन नाओं छाँछे किए ने रखि लिअए, तहिना संकल्प गोबरधन दोसक मनकेँ मथलकैन। मथिते संकल्पक संग विकल्पक कारण जगलैन जे मात्र खाइये बेरमे

ने थारीक खगता हएत, ओ तँ केरो पातसँ काज चलि सकैए, नइ केरा पात भेटत तँ कुटो-कागज चलि सकैए। मुदा लोटाक खाँहिस तँ पानियोँ पीबै काल हएत, परो-पैखाना जाइ काल आ नहेबो काल हएत। मानि लिअ नहेबा काल जँ थारी लऽ कऽ नहाएब तँ नहियोँ कोनो बात मुदा पैखाना करए जँ थारीमे पानि लऽ कऽ जाएब, तेकरा जे देखत ओ की कहत..? जँ लोक नहियोँ किछु कहत तँ थारी भरि पानि लइयो केना जाएब? लैयो जाएब तँ ओ सभटा हाथमे केना औत..?

विचारक मथानी गोबरधन दासक मनकेँ मोहि-मोहि मना लेलकैन जे थारी भेल पसारी, जेकर विकल्पो ढेरी अछि मुदा लोटा बिना नइ बनत। तहूमे जखन बबाजी बनि घरसँ निकलैये चाहै छी तखन जँ पानि पीबैले एकटा लोटो संगमे नइ राखब से केहेन हएत।

लोटापर विचार अबिते गोबरधन दासक मनक समस्यामे एकटा समस्या आरो उठि गेलैन। यात्राक लेल लोटा, लोटकी नीक आकि कमण्डल? लोटा तँ गृहवासूक छी, माने घर-परिवारमे रहैबला, हम तँ घरो आ परिवारो छोड़ि यात्री बनि जा रहल छी। यात्रीक जेतेक हल्लुक जिनगी रहत ओते ने ओ सुरक्षित। किए तँ गाड़ी-सवारीमे जेरगर धिया-पुताबला जे रहल ओकरा ने कोनो स्टेशनपर एकटा बच्चा हेराइए ते कोनोपर जोड़ा लगा कऽ, आ केतौ-केतौ धोखा-धोखीमे घरोवाली हेरा जाइ छै चाहे अपने हेरा जाइए। तहिना बेसी मालो-असबाव लऽ कऽ चलनिहारकेँ ने होइए जे केतौ कियो एटैची चोरौलक तँ केतौ बैग, केतौ ई छुटल तँ केतौ ओ। मुदा बबाजी बनि जखन घर छोड़ब तखन ओतबे समान ने राखब नीक हएत जेतेकेँ सम्हारि कऽ लऽ चलब। तँए लोटासँ नीक लोटकी हएत आ तहूसँ नीक कमण्डल। कमण्डलकेँ मोटरीक डोरीसँ तेना बान्हि देबै जे हेराएत तँ सभ संगे जाएत नइ जँ नइ हेराएत आकि चौरौल

जाएत तखन सभ संगे ने रहत...।

मुदा लगले गोबरधन दासक मनमे उठि गेलैन जे जँ किसान खेती करैये काल ई ठेकान नइ कऽ सकल जे की नीकक खेती कऽ रहल छी आ की अधलाक। मुदा जखन ओ तैयार भऽ खेबापर अबैए तखन जँ कहबै जे ई अशुद्ध भेल आ ऐमे पौष्टिक तत्त्व छइहे नहि। तँ एकरा सोलहन्नी उचित कहब केतेक नीक? तँए जइ खेतिहरकेँ जेहेन खेतमे उपजत ओकर शुद्ध भोजन, माने मेहनतक भोजन वएह ने भेल। हमरो बाप-दादाक देल कमण्डल नहि लोटा अछि तँ हमरा-ले यएह ने नीक भेल। तहूमे ई केहेन हएत जे अपन बेच लेब आ अनकर कीनब।

गोबरधन दासकेँ कुम्भ असनान-ले घरसँ निकलैमे आब मात्र एकटा समस्या रहि गेलैन। ओ छी कुम्भ-असनान। मुदा से तँ ओतए पहुँचला पछातिये सम्भव अछि। मन मानि गेलैन जे परसुका गाड़ी जरूर पकैड़ लेब।

चारि बजे भोरमे गाड़ी स्टेशनसँ छुटत। ‘चारि बजे भोर’ मनमे अबिते गोबरधन दासकेँ एकटा विचार जगलैन जे जाबे तक कुम्भ-असनान करैक विचार मनमे नइ उठल छल, तैबीच जे केलौं आकि बजलौं से केलौं-बजलौं मुदा आब जखन अपने आत्माकेँ साक्षी रखि अपने हाथे कण्ठी-माला बना अपन गरदैनमे पहिर लेलौं तखन हृदय शुद्ध भेबे कएल। तँए शुद्ध हृदय जाबे खूब शुद्ध नइ बनत ताबे शुद्ध-अशुद्ध नीक जकाँ केना बुझब। से बिनु बुझने शुद्ध-विचार आकि शुद्ध बोल केना आबि सकैए? एकटा बात माए-बहिनसँ पुछै छिऐन जे जखन नैहर छोड़ि सासुर बासक लेल विदा भेली तखन दादी नइ कहने रहैन जे बुच्ची मुँहक बोलकेँ समेट फुच्चीमे रखिहह आ जेतबे खगता हुअ तेतबे निकालिहह। तहिना ने हाथोक लेल कहने रहैन। मुदा अखन की देखै छी? खाएर.., गोबरधन दासकेँ ओइ सभसँ

कोन मतलब छैन। मतलब छैन अपनासँ। तहूमे कुम्भ असनानक विचार मनमे प्रबल रूपसँ जगिये चुकल छैन तँ असनानक पछाइत आरो बुझता।

चारि बजे गाड़ी पकड़ैले साढ़े तीन बजे घरसँ निकैल गोबरधन दास विदा भेला। तखने गाड़ी पकड़ेतैन। ओना, एते गुण तँ गाड़ीमे ऐछे जे समयसँ पहिने नइ अबैए, भलेँ देरी जेतेक होउ। गोबरधन दासक अपन समय बिसबासू बनले रहैन, लगले मन आगू बढ़लैन। आगू ई बढ़लैन जे जखन वंशकर्ता वा कुलकर्ता पूर्वज जे छला ओ सभ तीन बजेसँ पहिनहि उठि अपन नित्यकर्मसँ निवृत्त भऽ अपन जिनगीक पाछू लगि जाइ छला। हमहूँ जखन कुम्भ असनानक रस्ता पकैड़ लेलौं तखन आब हमरो ने हुनके देखौंस करए पड़त।

स्टेशनपर गाड़ीकेँ अबिते गोबरधन दास गाड़ीमे कुम्भ असनान करैबला बबाजी-सभकेँ टोहियाबए लगला। जेरगर यात्री देखि कोठरीमे चढ़ला। यात्री सबहक बीच गोबरधन दास तका-तकी करए लगला। बजैथ किछु ने। नइ बजैक कारण रहैन जे गाड़ीमे चढ़ैसँ पहिनहि ने रस्ताक सम्बन्धमे आकि गाड़ीक सम्बन्धमे किनकोसँ पुछितैथ। मुदा से सभ तँ समस्या रहल नहि। स्टेशनसँ गाड़ी चलि देलक। इलाहाबाद होइते पार करत, रस्तेमे उतैर त्रिवेणी घाटपर गोबरधन दासकेँ पहुँचैक छैन।

तक्का-तक्कीमे गोबरधन दास सिमरिया पुल टपि गेला। माने गंगा टपि गेला। गंगा टपिते मनमे उठलैन जे आब चुप्पा-चुप्पीसँ काज नइ चलत। बगलमे जे बबाजी बैसल रहैन तिनका पुछलखिन-

“महात्माजी! अपने किए घर-परिवार छोड़ि तीर्थ करए जाइ छी?”

जीवन दास महात्मा उत्तर देलकैन- “पत्नी मरि गेली। असगरे

कमा कऽ आनब आकि भानस करि कऽ खाएब।”

उत्तर सुनि गोबरधन दासक मनमे उठलैन, हमहीं ने नीक छी जे घरवाली-ले कनबो तँ नहियेँ करब। बजला-

“जखन मरबापर दुनू गोरे सप्पत-किरिया खेने रही जे कहियो संग नइ छोड़ब से केना संग छोड़ि देली?”

सोझमतिया जीवन दास गोबरधन दासक प्रश्नपर धियान नइ दैत बजला-

“अहूँ कुम्भे असनान करए जाइ छी?”

गोबरधन दास-

“हँ।”

‘हँ’ सुनि ओ महात्मा अपन मुड़ी डोला चुप भऽ गेला। बगलमे बैसल दोसर बबाजीकेँ गोबरधन दास पुछलखिन-

“गोसाँइ साहैब! अपने किए बबाजी भेलिऐ?”

पारिवारिक तामस नीक जकाँ कर्म दासकेँ अखनो तक नइ मेटाएल छेलैन। बजला-

“अपना घराड़ी नइ अछि, अनके जमीनमे बाबू ई कहि घर बान्हने रहैथ जे जाबे जीब ताबे अहाँक चाकरी करब, जहिया मरि जाएब तहिया अपन घराड़ी लए लेब।”

गोबरधन दास बजला-

“पिताअपने जिनगी भरिक कहा-बद्धी केने छला, बाल-बच्चाक नहि?”

कर्मदास-

“से जँ केने रहितैथ तँ पैछला साल ओ मुइला। आ हुनका मुइलाक किछुए दिनक पछाइत घराड़ीबला घराड़ी छोड़ैक चेतौनी

किए देलैन।”

गोबरधन दास- “माए छैथ की नहि?”

कर्मदास-

“गुण भेल जे बाबूसँ पहिने माइये मरि गेल छेली।”

गोबरधन दास-

“की गुण भेल?”

कर्मदास-

“भरि दिन बाबू कमाइ छला आ हम घर-अँगनाक काजो करै छेलौं आ भानसो करै छेलौं। जइसँ भानस करैक लूरि भऽ गेल। गामेमे एकटा ठकुरवारी अछि, ओहीमे रहै छी।”

गोबरधन दास गपो-सप्प करै छला आ मने-मन विचारितो छला जे जे दुखनामा हिनका सबहक छैन ओ तँ अपन नइ अछि। स्वेच्छासँ बबाजियो भेलौं आ कुम्भो असनान करए जा रहल छी।

गाड़ी इलाहाबाद पहुँच गेल। उत्तर भारतमे बबाजी सभ-ले गाड़ी फ्री अछिए। दच्छिन भारतमे ने गाड़ीसँ टी.टी. उतारि दइए। गाड़ीसँ उतैरते गोबरधन दास देखलैन जे प्लेटफार्मसँ त्रिवेणी घाट धरि बबाजीए सभसँ भरल अछि। बबाजीक करमान देखि गोबरधन दासक मनमे उठलैन- जिनका गाम-घर आकि परिवार-समाजसँ मोह छैन ओ ने हेरेता-ढेरेता, आ जे बबाजी बनि घरसँ निकलले छैथ ओ केना हेरेता, केतए करता। भने अपन जान हल्लुक अछि।

तीन दिन गोबरधन दासकेँ कुम्भ मेलामे केना बीत गेलैन से नहि बुझि सकला। मुदा एते अपन नियम बनौने रहला जे अपने जे बेसाहैले पाइ रखने रहैथ ओहीसँ बेसाहि-बेसाहि खेबो करैथ आ दिन-राति घुमबो करैथ। ओना, भूखल-दुखल-ले केतौ अन्न तँ केतौ

वस्त्रक दान होइते छल मुदा से सभ लइसँ गोबरधन दास परहेज रखने रहला।

आइ चारिम दिन मेलाक उसरन भेल, सभ यात्री घरमुहाँ विदा भेला। पैछला सभ संगी गोबरधन दासक हेरा गेलैन। विदा होइते बगलमे जे बबाजी रहैन हुनका पुछलखिन-

“गोसाँइ साहैब, अहाँ मेरियामे छी कि असगरे?”

जिनगी दास बजला-

“जखन दुनियाँमे असगरे जन्मो नेने छी आ जीबैक भरोसो रखने छी तखन असगर की आ लसगर की?”

जिनगी दासक विचारमे गोबरधन दासकेँ की भेटलैन से तँ ओ जनता मुदा एते तँ बजबे केलाह-

“हमहूँ असगरे छी, अहीं संग हमहूँ चलब। रहैक स्थान केतए छी?”

जिनगी दास कहलकैन-

“काशी, कबीर आश्रम।”

जिनगी दासक संग गोबरधन दास काशी आबि आश्रममे रहए लगला। आइ पनरहम दिन छिऐन। पनरहे दिनक आश्रमक विचारो आ क्रियो-कलापसँ गोबरधन दासक मन एते सबल भऽ गेलैन जे पुन: अपन गाम अबैक विचार मनमे जगि गेलैन।

सोल्हम दिन महंथजीक चरण छुबि असीरवाद लैत चरणक चरणामृतकेँ जीवनामृत मानि गोबरधन दास अपन घरक बाट पकैड़ विदा भेला। गामक सिमानपर अबिते मन ततमत करए लगलैन। एक मन जहिना मनाही केलकैन जे जइ गामकेँ छोड़ि देलौं तइ गाम पुन: घुमि कऽ नहि जाएब..? तहिना दोसर मन कहलकैन- ‘तखन करब

की?’

गामक बगलेक गाम हरिपुरमे गोकुल दासक स्थान अछि। स्थान कि अछि जे असगरेक परिवार बना ओइठाम गोकुल दास रहै छैथ। हेराएल-भोथियाएल बबाजियो आ बाटो-बटोही सभ अबैत-जाइत रहैए। जखन जे रहल तखन तेकरे सबहक सहयोगसँ दूटा गाइयोक सेवा करै छैथ आ मण्डूल दवाइक कारोबार सेहो करै छैथ। जखन जे रहल तेकरे सभकेँ एक परिवार जकाँ मानि-मिलि झामकेँ कुटि-कुटि मण्डूल बनबै छैथ। जइसँ केतेको रोगक इलाज गोकुल दास करैत रहला अछि। तँए महात्माक संग वैद सेहौ छैथ। कोसिकन्हासँ लऽ कऽ सहरसा-पुर्णियाक संग नेपालोक कहाली सभ अबैत रहै छैन। मणडूलक प्रसिद्धिसँ स्थानमे नीक आमदनियोँ होइत रहल अछि।

सुबहक समयमे गोबरधन दास गोकुल दास ऐठाम पहुँचला। काशी स्थानक अनुभव गोबरधन दासकेँ रहबे करैन, अपन नियमानुकूल अभिवादन करैत बजला-

“गुरु-गोसाँइ, अपनेक दरबारमे हम चौकीदार बनि रहब।”

सभ स्थानक अपन-अपन नियम अछि, अपना नियमानुसार गोकुल दास पुछलकैन-

“बेरागी! अखन अहाँक बालपन अछि। तँए, पुरनिक पात परक पानि जहिना गोली बनि-बनि गुड़कैत रहैए आ जेतेकाल पातपर रहल तेतबे काल ओ अपन स्वच्छ रूप रहि चमकैत रहैए मुदा पातसँ निच्चाँ होइते ओकरा धरती सोंखि निपत्ता कऽ दइ छै, तहिना अखन अहाँक अवस्था अछि। तँए अपन नियमकेँ जँ अपने रक्षा करैक भार उठाबी तखन किछु भऽ सकैए।”

गोकुल दासक विचार सुनि, नवकवरिया गोबरधन दास टाँहि-

दे बजला-

“स्थानक जे नियम हएत तेकरा हम सोल्होअना अंगीकार करब।”

खिलैत गोबरधन दासक चेहरा देखि फुलैत गोकुल दास बजला-

“बाउ, दुनियाँमे बहुत लोको छैथ आ बहुत रंगक व्रतो अछि! तँए...।”

बिच्चेमे गोबरधन दास टोक देलकैन-

“की व्रत?”

गोकुल दास बजला-

“कियो झूठ नइ बजैक व्रत लइ छैथ तँ कियो झूठेक ठीकेदारी करै छैथ, कियो चोरिकेँ अधला बुझि परहेज करैक व्रत लइ छैथ आ कियो चोरिकेँ खनदानी पेशा बुझि परम्पराक निर्वाह सेहो करै छैथ।”

गोकुल दासक विचार सुनि गोबरधन दासक मन लाल-पीअर हुअ लगलैन। जइसँ चेहराक रंग कखनो फुलित, कखनो प्रफुलित, कखनो फलित आ कखनो कलित हुअ लगलैन। जे गोकुल दास बुझि गेला। तँए अपन विचारकेँ रोकि चित्रकूटक घाट पकैड़ लेलैन। जइ घाटपर पहुँचल यात्रीक यात्रा केहेन होएत, ई तँ पहुँचल फकीरे ने बुझि पबता। मुदा गोबरधन दासक बालपन से-सभ नहि बुझि बिहुसैत बाजल-

“गोसाँइ साहैब! अपनेक जे आदेश हेतै से शिरोधार्य जरूर करैत रहब।”

मुस्की दैत गाकुल दास कहलकैन-

“स्थानक कोनो व्रत बान्हल नइ अछि, जेहने हम छी तेहने

बनि अहूँ रहू।"

समय बीतल, गोकुल दास गौलोक गेला। समय सेहो आगू बढ़ि थोड़-थाड़ लतैर-चतैर गेल। शुरूहेसँ गोकुल दासक संग गोबरधन दास गाँजाक संग अफीम सेहो अपन जिनगीक क्रियामे जोड़ि नेने छला। खान-पान, रहन-सहन सभ किछु गोकुल दासक अपना ऊपर गोबरधन दास उतारि नेने छला।

गोकुल दासकेँ मुइला बाद महंथाना-ले माने मुख्य कर्ता बनैले पुर्णिया-स्थान जकाँ मारि-पीट सेहो नहियेँ भेलैन। किए तँ सबहक स्थान बुझि सभ अपन-अपन दुख-भूख लऽ कऽ अबिते-जाइत रहै छैथ। स्थानक मुख्य कर्ता गोबरधन दास भेला।

स्थानक प्रमुख कर्ता बनला पछाइत गोबरधन दास गाइयोक संख्या बढ़ा लेलैन आ वैदागिरीक क्षेत्र सेहो बढ़ि गेलैन। जइसँ स्थानक चला-चलती आरो बढ़ि गेल। आमदनी तेजीसँ बढ़ल। रंग-रंगक भनडारा, रंग-रंगक लोक सबहक आबाजाही सेहो बढ़ल। अफीम खेला पछाइत गोबरधन दास गाँजा पीबै छला आ मन जखन फ्रेश होइ छेलैन तखन मुँह-मंगा दान करए लगै छला। जइसँ पाइ-कौड़ीक कोनो थिरी-थमन नइ रहलैन मुदा बाड़ी-फुलवारी लगबैले जे एक बीघा जमीन स्थानक आगूमे कीनलैन से जरूर बँचल रहलैन।

साठि बर्खक उम्रसँ जखन गोबरधन दास ऊपर टपला तखन एकटा विचार मनमे जगलैन। विचार जगैक कारण भरिसक आगूक मृत्युपर नजैर पड़ब छेलैन। किए तँ गोकुल दास सेहो सत्तैर-बहत्तैर बर्खक अवस्थामे मरल रहथिन। गोबरधन दासक मनमे जगलैन जे जँ दसो कट्ठाक बाग-बगिया लगा ऐगला पीढ़ी-ले नइ देने जेबै तखन अपन कृत्तिपने की रहत। यएह सोचि दस कट्ठामे गोबरधन दास बाग-बगिया लगौलैन।

जहिना ऋृषि-मुनि जिनगीकेँ देखि मनन करैत आबि रहला अछि, तहिना गोबरधन दास सेहो केलैन। पाँच कट्ठामे रंग-रंगक पैघ गाछक फलबला वृक्ष आ पाँच कट्ठामे ओहन फल लगौलैन जे फलक साइजमे तँ एकरंगाहे छल मुदा गाछ-बिरीछ जकाँ नहि, बल्कि झाड़ीदार पौध सन। ओना किछु फलक गाछ साले भरिक पछाइत फल दिअ लगलैन, मुदा दसम बर्ख पुरैत-पुरैत सभ बोन-झारसँ लऽ कऽ वृक्ष-बन धरि फड़ए लगलैन। ओना अन्तिम वृक्षक जे फल छल, ओ जखन फुलेक अवस्थामे रहै तही बीच गोबरधन दासक मृत्यु भऽ गेलैन।



शब्द संख्या : 3089, तिथि : 3 फरवरी 2018

## अब-तब

फागुनक आखरी समय। परसूए फगुआ छी। ओना वसन्त पंचमीक जँ हिसाब जोड़ब तँ डेढ़ माससँ ऊपरे वसन्तक आगमनक समय बीति गेल मुदा शीतलहरी चपेटक जे रूप माघमे छल तोहूसँ बिकराले रूप अखन भऽ गेल अछि। तेकर कारण भेल जे भण्डार कोण क हवा तेहेन बरफ-वारी कऽ काल्हि बरिसौलक जे शीतलहरी आरो मोटा कऽ धुना गेल। ओना, धुनाएल शीतलहरी जे अन्हार जकाँ छल तइमे किछु कमी जरूर भेल मुदा बरफाएल तेहेन हवा बनि गेल अछि जे माघोसँ बत्तर हाल मौसमक बनि गेल अछि। जइसँ वसन्तक जुआनीक कोनो रूप-रंग देखमे नइ आबि रहल अछि।

दिन अछैते माने चारियेे बजे बेरु-पहरमे अल्लूलाल बाँसक सुखाएल पातो आ कड़चियोक घूर अपना दरबज्जापर पजाइर देलैन।

घूरक धुआँ देखि टोलबैया बुझि गेल जे अल्लूलाल भैया घूरमे पजार दऽ देलैन। टोलक सभ एकाएकी ससैर-ससैर घूर लग आबए लगल। सभसँ पहिने कोबीकान्त आएल। तइ पाछू टमाटरनाथ आ बैगनराम सेहो पहुँचल।

जहिना जमगर घूर तहिना जमगर तापस तपनिहार सभ चारूकात बैसला, समय-सालपर गप-सप्प शुरू भेल। गप-सप्प नीक जकाँ पाहि पकड़बो ने केने छल कि बिच्चेमे धनियाँलाल दौड़ल आबि फरिक्केसँ हकाएल जकाँ बाजल- “अल्लूलाल काका, अदौरी

बाबा अब-तबमे छैथ..!”

‘अब-तब’क माने घूर लग बैसल सभ-कियो अपना-अपना काने सुनबो केलक आ अपना-अपना बुधिये विचारबो केलक आ अपना-अपना मने अरथो बुझलक। सबहक मन अपन-अपन, तँए अपना-अपना मनमे सभ सभरंग बुझलक। होइतो अहिना छै किने जे जँ कियो केकरो नीक केने रहल तँ ओकर नीकक छाँह मनमे अबै छै आ जँ अधला केने रहल तँ अधला अबै छै, सबहक अपन-अपन जिनगी, अपन-अपन जीबैक ढंग तँए अपन-अपन सबहक सम्बन्ध। अपन-अपना सम्बन्धे सभ अपन-अपन विचार केलक।

धनियाँलाल दिस मुड़ी उठा कऽ तकैत टमाटरनाथ पुछलखिन-

“की ‘अब-तब’मे छैथ अदौरी बाबा?”

अपना ऐठाम अदौरी अदौसँ भोज्य पदार्थमे रहल अछि। बेकतीगत रूपमे सेहो आ सामाजिक रूपमे सेहो रहल अछि। सामाजिक रूप भेल सामुहिक भोज। ओना, बेकतीगत रूपमे बेकतीगत भोज सेहो होइए, माने एक-आध गोरेकेँ नौत देलिऐन आ भोजक रूपमे ओकरा प्रस्तुत केलौं। मुदा अखन से नहि। भोजनमे भात-रोटीक संगी बना अदौरीकेँ सेहो उपयोग करैत एलौं अछि आ कैयो रहल छी। ओना, एक रूपमे रहितो अदौरी बहुआयामी भोज्य-पदार्थ सेहो छीहे। जेना असगरो अदौरीकेँ दालि जकाँ झोरदार तीमन सेहो बनाएले जाइए। जहिना बरीक झोरदार तीमन भेने बरीकेँ फुटा झोरीकेँ फुटा माने दुनू रूपमे फराक-फराक चलैन सेहो भोज-काजमे अछिए। मुदा जे से.., अदौरीक बेवहार हम सभ दुनू रूपमे कइये रहल छी। माने ई जे झोरदार बना तीमन जकाँ सेहो आ कम झोरदार माने रसदार तरकारीक रूपमे सेहो।

अदौरीक आगमन अपना सबहक भोजनमे ओइ दिन शामिल

भेल जइ दिनमे दालिक चलैन चलि चुकल छल। दालियो दालिक रूपमे आबि चुकल छल। तइसँ पहने ओहो उसने रूप पकड़ने छल। उसना भेल जे दलिहनकेँ–माने बदाम, राहैड़, खेरही इत्यादिकेँ–गोटे रूपमे उसैन खाएब। ओना चाउरकेँ सेहो अगबो उसैन कऽ माने भात बना खाएले जाइए आ तैसंग दूध-चीनी मिला सेहो खाएल जाइए, जेकरा खीर कहै छिऐ। आ तैसंग नोन-तेल, मिरचाइ इत्यादि मिला सेहो खाएले जाइए। तहिना दलिहनकेँ सेहो अछिए। मुदा सोल्होअना नहि, चाउरक खिच्चैड़ जकाँ तँ जरूर अछि मुदा दूध-चीनी मिलौल खीर जकाँ नइ अछि। ओना, बनौल नहि जा सकैए सेहो नहियेँ कहल जाएत। किएक तँ जहिना चाउरक भुसबा, चाउरक पहिल ठोस  मिठाइ छी तहिना दालिक कुटुर-मुटुर नइ छी सेहो केना नइ कहबै।

ओना, दुनूक चलैन एक्के दिन शुरू भेल सेहो नहियेँ कहल जा सकैए, किए तँ भुसबा जेतए गुड़सँ बनैए, तेतए कुटुर-मुटुर चीनीसँ बनैए। गुड़ पहिने भेल तँए भुसबा पुरान अछिए। खाएर जे अछि, मुदा ऐतिहासिक रूपमे अपन स्थान अदौरी-वंशक नइ रहल सेहो नहियेँ कहल जा सकैए।

जहिना अपना ऐठामक भोजन-विन्यास अपन इतिहास ठाढ़ केने अछि तहिना ने गामक घरो आ घरमे रहनिहार घरवारियोक इतिहास नइ ठाढ़ अछि सेहो नहियेँ कहल जा सकैए। जहिना भोज्य पदार्थमे दुनू दृष्टिये- एक दृष्टि भेल नव भोज्य-विन्यासक खोज आ दोसर भेल पदार्थकेँ नव विन्यास बनाएब। जेना, दालिक अदौरी आइक समयमे लगलो बनि सकैए किए तँ जात वा मिलमे पीसा दालिकेँ अदौरी बना लेब तेहेन बात पहिने नइ छल। दालिसँ अदौरी बनैमे जेकर सहारा पानि अछि, आ अदौरीसँ बरी बनैमे केते समय लगल अछि, ओ तँ ठीक-ठीक नहियेँ कहल जा सकैए मुदा तँए

ठिकिया कऽ कहल नहि जा सकैए सेहो तँ नहियेँ अछि। भोजमे जहिना-जहिना विन्यास सभ परैस-परैस भोजन करौल जाइए तहिना-तहिना विन्यासो समयक संग आबि-आबि शामिल होइत गेल। गाममे घरोक इतिहास तहिना रहल अछि। एक दिस बाधमे जहिना रखबार बाँस-खढ़क–फुसि-फाइसिक–घर बना दिवस गुदस करैए तहिना दोसर दिस सभ सुविधा सम्पन्न घर नहि अछि तेकरो नकारल नहियेँ जा सकैए। अही बीचमे ने जिनगीक इतिहास सेहो चलिये आबि रहल अछि।

टमाटरनाथक प्रश्न सुनि धनियाँलालक मनमे उठल- ई टमटरा कोनो आइक बतबनौन अछि, अही दुआरे अदौरी बाबा एकर कोनो मोजर नइ दइ छथिन। सभकेँ–माने बैगन, अल्लू, कोबी इत्यादिकेँ–अदौरी बाबा अपन पार्टनर बनौलैन मुदा एकरा कहियो अपन मेजन छोड़ि संगी नइ बनौलैन किए? अही दुआरे। कहू! जे ‘अब-तब’क माने नइ बुझत ओ ‘कब-तब’क माने थोड़े बुझत। आ जे अपन-सन बात अपने नइ बुझत ओ हमरा बुझौने बुझत..!

ओना, धनियाँलालक तामस टमाटरनाथपर ईहो रहै जे जानियेँ कऽ तँ हमर जनम मसाला वंशमे भेल अछि, तँए की अपन गुण-धर्म छोड़ि देब। ई  तँ किछु छीहे नहि। आड़ि परहक बगुरक गाछ जकाँ अछि जे जेमहर-जेमहर सुर्ज घुमता तेकर उनटा अपन छाँह बढ़ौत..!

ओना, टमाटरोनाथक मन चेतल। चेतल ई जे अखन अल्लूलाल भैयाक ऐठाम ने बैस कऽ घूर तपै छी, जैठाम सभकेँ-सभ माने कोबी, बैगन सभ कियो छैथ, तखन हमहीं किए अनेरे बकठाँइ जोती। प्रश्न अदौरी बाबाक छिऐन, अपन ओ बुझता...।

मुदा धनियाँलालक मनमे थोड़ेक तामस बढ़िये गेल छल, किएक तँ मने-मन टमाटरक जिनगीक गति-विधि आँकि नेने छल।

आँकि ई नेने छल जे, हमर तँ वंशे मसल्ला-चटनीक रहल। ओना, धनियाँ पूर्ण रूपेँ मसल्ले छी, सुआद गुणे पातकेँ चटनियोँ बनौल जाइए आ तीमनो-तरकारीमे देल जाइए। ई तँ बलिहारी हमर भेल, से टमाटरकेँ थोड़े हेतैन। कखनो नून-मिरचाइक संग चटनी बनि जाइ छैथ तँ कखनो गुड़क संग खटमिट्ठी! तेतबे नहि ने, कखनो बैगनकेँ धोखा दऽ कऽ दोसर संगीक संग भऽ तरकारी बनि जाइ छैथ तँ कखनो ओहिना–माने बिनु आगिक मुँह देखनहि जीविते–सलादक रूपमे थारीमे चलि जाइ छैथ..!

टमाटरनाथकेँ मुँह बन्न केने देखि धनियाँलाल सेहो अपन मुँह बन्न करैत ओम्हरसँ आँखि हटा अल्लूलाल दिस देलक।

धनियाँलालक नजैर पड़िते अल्लूलाल पीड़ाएल मने बजला- “धनियाँलाल बौआ, अदौरी कक्काक सम्बन्धमे की बाजल छेलह?”

धनियाँलालकेँ जेना बुकौर लागि गेल। ओना, अल्लूलालक मन भीतरे-भीतर कलैप रहल छेलैन। कलैप ई रहल छेलैन जे अदौरी काका सन लोक जे समाजो आ करो-कुटुमक बीच लब्ध प्रतिष्ठ भोज्य विन्यास बनि अपन इतिहास बनौने छैथ, आइ ओ इज्जत हीन बनि सभ दिससँ कटि-कटि मरि रहला हेन! समाजक संग कर-कुटुमकेँ के कहए जे परिवारोक भोज्य विन्याससँ माने तीनू दिससँ क्षणे-क्षण, पले-पल कटैत पनरहअना कटि चुकल छैथ! मात्र एकअना आब जीवित रहि गेल छैथ। आखिर ऐमे अदौरी कक्काक कोन दोख भेलैन जे मरि रहला अछि! की ओ मरैबला छैथ? की लोकक खान-पानमे बढ़ोत्तरी नइ भेल अछि? की अदौरी दूषित भोज्य पदार्थ छी..? तखन हुनका एहेन बेलना किए बेलए पड़ि रहल छैन जे अछैते औरदे कण्ठ लगमे प्राण चलि आएल छैन..!

मनक संग अल्लूलालक विचार सेहो थोड़ेक आगू बढ़लैन।

आगू बढ़िते मनमे उठलैन जे निरदोस अदौरी काका दालिक चपेटमे चपटा गेला अछि। मरब अनिवार्य छैन। लोकक खानो-पान एहेन बनि रहल अछि जइमे अदौरीकेँ महत्तहीन मानि-मानि भोज्य विन्याससँ निकालि रहल अछि। की सभ कियो बिसैर गेला जे दादी-नानी केना तेबखाकेँ पहिने कनी रौद चटा जाँतमे दरैड़ भरि दिन पानिमे असनान करा डोमरौउ बासनमे पोखरिक घाटपर खोंइचा बेरा, पानि गाड़ि, रौदमे सुखा, जाँतमे पीसै छेली। पछाइत पवित्र-पानिमे सानि अदौरी खौंटे छेली आ घरमे जोगा-जोगा राखि मासक मास दिन खाइ छेली। की लोक ईहो बिसैर गेला जे अदौरी सुखि कऽ शुद्ध अन्नक रूप पकैड़ लइए..! जहिना अन्नकेँ समय-समयर फटकलो जाइए आ रौदमे सुखौलो जाइए, जइसँ ओ सालक-साल अपन रूपमे जीवित रहैए तहिना ने अदौरीक सेहो अछि।

ओना, दलिहनमे तेबखा रहितो अपन गुण-धर्ममे आन दालिसँ भिन्न सेहो अछिए। भिन्न ई अछि जे जैठाम आन-आन दालिमे लसपन नइ अछि वा तेतेक कम अछि जे छिलका आ अन्न अलग भऽ जाइए मुदा तेबखामे से नइ अछि। ओकरामे

लसपन एतेक अछि जे एक तँ जातमे दरड़ने नइ दर्ड़ल जाएत, तैपर खोंइचा आ गुद्दा तेना सटि जाइए जे फटकने नइ फटकल जाएत। तँए कनी आन दालिसँ मेठनियाँ अछिए। ओही मेठनियाँक चलैत तेबखा अदौरीक रूपमे प्रतिष्ठित भोज्य विन्यासमे शामिल भेल। ओना तेबखा अपन चालिमे कट्टर सेहो अछिए। कट्टर ई अछि जखन दालिक उजैहिया चढ़ल आ दालि सभ तेलमे छन-छना बरी बनए लगल तखन तेबखा तेल असनानक लोभ नइ केलक। तँए बरीसँ बरा गेल। मुदा ओ की सोझे कट्टर अछि, हवा-बिहाड़ि देखने थोड़े डेरा जाइए। नहि। केहनो विपरीत हवा-पानिसँ लड़ैले सदिखन तैयार रहैए। अधिकांश दालि जखन बरी बनि गेल

आ तेबखाकेँ धकिया देलक, तखन ओहो हनुमानजी जकाँ एक्केबेर समुद्रमे कुदि बर बनि गेला। बरीसँ बर नमगरो-चौड़गर आ स्वादिष्टो होइते अछि। बरी तँ दहोँ-दिसिया छी जे तेलो आ पानियोँक संग रहैए, मुदा बर तँ बर छी, तँए ने ई बड़ भेल। ओ बर तँ बड़ बनल गामक भत-भोजमे, मुदा गामो तँ गामे छी किने। गामक किछु भाग बजरियाए नै गेल अछि सेहो नइ ने कहल जा सकैए। ओहो तँ बजरियाइये गेल अछि तँए अदौरी, बर भलेँ छुटि जाए वा कमि जाए मुदा डोसा तँ प्लेटमे एबे करत किने।

ओना, गामो-समाजक भोजमे बदलाउ नइ आएल अछि सेहो थोड़े नइ कहल जाएत। भलेँ हम सीता मैयाकेँ जनकपुरक फुलवारीमे फूले लोढ़ैक गीत किए ने गाबी, मुदा तेकरा लोक बुझि केतेक रहल अछि आ मानि कऽ मानि दए मानि केतेक रहल अछि..? आइक परिवेशमे समाजक भोजक ई रूप बनि गेल अछि जे बजारसँ समान कीनि चौबीस घन्टाक पेसतर नमहर-सँ-नमहर भोज कए लइ छी मुदा भत-भोज सएह नइ ने छी। एकटा अदौरी विन्यासक प्रक्रिया आठ दिनक अछि। अहिना आनो-आन विन्यासक प्रति कर्म अछि। जेतेक समय लगा भोजैत भोजनक पंचदान करै छैथ ओतेक ने हुनकामे अन्य पंचक प्रति सिनेहो जगै छैन आ पंचो अपन रचल-बसल पूर्वजक इतिहासकेँ गहराइसँ देखै-सीखै छैथ।

धनियाँलालकेँ किछु ने बजैत देखि अल्लूलाल बुझि गेला जे बेचाराकेँ बुकौर लागल छइ। बजला- “बौआ, समय तँ देखिते छहक जे केहेन दुर्काल अछि। तेहेन धुनि लागल अछि जे पूब-पच्छिम, उत्तर-दच्छिन सभ दिशा अन्हराएल अछि। जैठाम नजरिये अन्हरा जाएत तैठाम कियो केते दूर देखत।”

ओना, अल्लूलालक पेटमे आरो बात छेलैन जे बजैक क्रममे बजितैथ, मुदा बैगनरामक कान तेते भरि गेलैन जे अल्लूलालक

विचारक बिच्चेमे बजला- “धनियाँलाल, पहिने ई कहह जे अदौरी कक्काक प्राण छुटि गेलैन आकि हुकहुकियो बँचल छैन?”

धनियाँलाल बाजल-

“काका, साँस तँ कनी-कनी चलै छैन, मुदा देहपर जे माछी बैइसै छैन से नइ बुझि पबै छैथ!”

बैगनराम-

“बाजब केहेन छैन?”

धनियाँलाल-

“बाजब की रहतैन, बोलती बन्न भऽ गेल छैन!”

‘बोलती बन्न’ सुनि बैगनरामक मन तरैस कऽ पसीज गेल। मोन पड़लै अपन जीवन साथी। समाजक  महापर्व मे दुनू गोरे संगे-संग प्रतिष्ठित संगी बनि केता युगसँ संगे आबि रहल छेलौं, आइ संगी मरि रहल अछि! आब असगरे..! ओना, आरो-आरो संगी सभ छथिये मुदा जहिना गाछक फड़ हम छी तहिना ने अदौरी काका सेहो मनुक्खक कलाकारीक गाछक फल छैथ। ओना, कहैले आकि खाइयो-ले रंग-रंगक अदौरी, तेबखाक कोन बात जे आनो-आनो दालियो आ अदहा-छिदहा चाउरो पीस कऽ मिला बनौल जा रहल अछि, आ लोको खाइते अछि, मुदा जँ अदौरीक वंशपर नजैर दइ छी तखन ओहिना बुझि पड़ैए जेना चानक बीच बसल अशोभक गाछक निच्चाँमे बैसल बुढ़िया दादीकेँ सूत कटैत देखै छिऐन।

तैबीच अल्लूलाल बाजल-

“बैगनराम, जे राम से राम! हिया नइ हारह, जहिना अदौरी काका अन्तो-अन्त तक अपन चालि पकड़नहि रहि गेला तहिना अपनो सभकेँ निमाहब..!”

मिरमिराइत बैगनराम बाजल-

“हँ, से तँ बरबेस भैया कहलह, मुदा किछु भेला तँ संगिये भेला किने। हुनका संगे अपन जान नइ जाएत, मुदा संगीक प्राण प्राणमे मिलल नइ रहत सेहो केहेन हएत। ई तँ अपनो मन मानैए जे ऐगला पीढ़ी बिसरनमा अबैए, लगले बिसैर जाएत।”

बैगनरामक मनक क्लेश पेब अल्लूलालक मन सेहो क्लेशसँ कलैप उठलैन, बजला-

“बैगनराम! तूँ छोट भाए समतूल भेलह। मुदा जहिना हमहूँ कोनो गाछक फल छी, कोबी जकाँ फूल आकि पालक जकाँ पातक साग नहि, तहिना ने तोहूँ छह!”

सह पेब सहैट कऽ बैगनराम बाजल-

“हँ से तँ छीहे भैया, एकरा के काटत!”

बैगनरामक विचारमे सक्कतपन देखि अल्लूलालक मन सेहो थोड़ेक सकताए लगल। ओना, बैगनरामक अपेक्षा अल्लूलाल सभ दिन सकताएले रहला, मुदा बैगनरामक वैचारिक सक्कतपन अल्लूलालक आशकेँ बढ़ा देलकैन। बजला-

“बैगनराम! जहिना तोरा आगिमे पका, सिलौटपर रखि लोढ़ीसँ थकुचि-थकुचि भुरता बनबै छह, तइसँ की हमर गनजन कम अछि?”

‘गनजन’ सुनि बैगनराम नजैर उठा अल्लूलालपर दैत बजला-

“से तँ ठीके, मुदा..?”

‘मुदा’ सुनि अल्लूलाल भरोष दैत बजला-

“जीता-जिनगी अहिना होइ छै, तइले अनेरे चिन्तो करब नीक नहि। जहिना एक दिस लोक तोरा सिलौट-लोढ़ीपर भुरता बनबै छह

तहिना ने तेलमे तरि-बघैर मान-प्रतिष्ठा सेहो दइते छह।”

अल्लूलालक विचार सुनि बैगनरामकेँ सबुर भेल। बजला किछु ने मुदा मनक मुसुकपनी मुँह होइत जरूर निकलए लगलैन। तैबीच धनियाँलाल बाजल-

“अल्लूलाल काका, आब ते देखिते छहक जे प्राण छुटला पछातियो तीन-तीन दिन लहास घरमे, परदेशिया अबै दुआरे पड़ल रहैए, तँए जँ अदौरी बाबाक प्राण रातिमे छुटि जेतैन तैयो काल्हि भरि दिन जिगेसा-पातीमे बितबे करतैन।”

मुड़ी डोलबैत अल्लूलाल बजला-

“भने मोन पाड़ि देलह। काल्हि भोरे भेँट करबैन।”



शब्द संख्या : 2076, तिथि : 7 फरवरी 2018

# अगिलह

पूर्णिमाक हिसाबसँ चारि दिन पहिनहि चैत मास चढ़ल। फागुनक पूर्णिमा-पाबैन  पाँचमे दिन भेल मुदा सकराँइतक हिसाबसँ अखन फागुने छी आ पनरह दिन आरो रहत तेकर पछाइत चैतक आगमन हएत।

आने साल जकाँ अहू बेर आमक गाछियो आ कलमो अदहा-छिदहा मोजरबो कएल अछि आ अदहा-छिदहा नहियोँ मोजरल अछि। एहेन कोनो अही बेर भेल से बात नहि, किए तँ आन फल आकि फसल जकाँ आम तँ नहि, जे सभ साल किछु-ने-किछु फड़बे करत। आम तँ आम छी जे गोटे साल दूअना, गोटे साल चारिअना, गोटे साल आठअना आ गोटे साल बारहअना फड़त। ओना, कहब जे अनुकूल मौसम पौने सोल्होअना फड़त से अपना जिनगीमे कहियो ने देखलौं अछि। हँ, एते जरूर देखलौं जे 1962 इस्वीमे करीब चौदहअना गाछ फड़ल। समय अनुकूल भेनौं सोल्होअना कहियो ने फड़ल अछि। तहूमे सभसँ तारीफ ईहो अछिए जे सोलहन्नी कलमी आमक कलम आ सोलहन्नी सरही आमक गाछी नहियेँक बरबैर अछि। मुदा कलमक माने भेल जइमे सोल्होअना कलमीए आम होइ। तहिना सरही गाछीक माने भेल जइमे सोलहोअन्ना सरहीए आमक गाछ होइ। ओना, कलमोमे गोटि पङ्गरा सरही आमक गाछ रहितो ओ कलमे कहबैए।

कलमी-सरही आमक बीच अपन खास सम्बन्ध छै, जे आन-

आन चीजक गाछ-बिरीछमे नइ अछि आ पशु-पक्षीक तँ बाते भिन्न। ओ अछि जे जड़ि सरही आमक रहल माने नीचला भाग सरही आ धड़सँ ऊपर कलमी आमक रहल। एहनो सम्बन्ध कलमी-सरही आमक गाछक बीच अछि। ओना, सरहीमे सेहो केतेको नीक आम अछि, नीकक माने भेल जेकर रूपो नमहर होइ आ गुदगर-रसगर सेहो हुअए आ तैसंग खाइयोमे नीक। जँ सरही आमक गाछकेँ कलम लगा लगौल जाइए, जइमे दुनू दिस माने जड़ियो दिस आ धड़ो-मुड़ी दिस सरहीए भेल, मुदा जँ खुदा-न-खास्ते ओही गाछमे निच्चाँ दिससँ गोटे डारि निकैल गेल आ फड़ल, तखन सरहियो आम एक्के गाछमे दू रंगक फड़ि जाइए। जइसँ गाछक अनुमान करब कठिन भऽ जाइए। तहूमे जँ एकटा मीठगर आम भेल आ दोसर खटगर तखन तँ ओ परिवारे जकाँ आरो तेसर विवाद ठाढ़ कइये दइए। किए तँ एक गाछक फल रहितो रंगो-रूप आ गुणो-सुआदमे तेते फरैक जाइए जे परिवारक फरीक जकाँ बनि जाइए।

मुदा जे अछि, जेतए अछि, से तेतए रहह। फागुन-चैतक बीच पड़ल औझुका दिन गुणगुनाए लगल। गुणगुनाए ई लगल जे आमक गाछ माघमे गुजरैए, फागुनमे मोजरैए आ चैतमे टिकुला भऽ चैतेक अन्तमे अपन पहिल पाबैन  चटनीक संग सेहो मनैबते अछि। मुदा ऐबेर चारि दिन चैत चढ़ला उपरान्तो आ चारि दिन फागुन बीतला पछातियो गाछक मज्जर ओहिना मुनल अछि जेना मज्जरक शिशुपन होइ। तँए फुलाएल गाछ बुझि मज्जरक सखी-सहेली अखन लगमे किए औत। ओना, ई चैत मलेमास लगल महिना छी, जेठमे मास दिनक मलेमास पड़त। माघमे आन साल जकाँ शीतलहरी नइ भेने रौदमे सेहो कनी-मनी तीखपन आबिये गेल छल जइसँ समैयोमे किछु कड़कड़ाहट जरूर आबिये गेल अछि। उत्तर दिशासँ मधुमाछियो आ चिड़ैयो-चुनमुनीक आबाजाही दच्छिन-मुहेँ

जरूर हुअ लगल मुदा आम-जामुनक फूल सिकुड़ले अछि फड़ैक तँ बाते फराक।

सुभहक समय, पक्षधर काका सबेरे ओछाइपन सँ उठि गाछी पहुँच गाछ सभकेँ निहारए लगला जे केहेन आम ऐबेर फड़त। किए तँ आन बहुतो फल अछि जे कैयो बेर फुलाइ-फड़ैए मुदा आम तँ सालमे एक्केबेर फड़ैए। ओना, आरो केतेको एहेन फल अछि जे सालमे मात्र एक्केबेर फड़ैए...।

नोकरीदार आदमी पक्षधर काका, मासे-मासे गाम अबै छैथ। गाम अबिते अपन खेतो-पथारक जुति-भाँति लगबै छैथ आ अपन अरजल जे बीघा भरिक गाछी छैन तइमे छुट्टीक बेसी समय सेहो बितबै छैथ। ब्लौक ऑफिसक नोकरी, स्टाफक कमी दुआरे काजक बेसी भार तँए मासमे एकटा सी.एल. आ एकटा रबि मिला दू दिनक छुट्टीमे पक्षधर काका मासे-मास गाम अबै छैथ। सएह आएल छैथ आ गाछ सभकेँ निहारि-निहारि देखि रहला अछि। ऐगला मासमे सेवा निवृत्त हेता आ जेठसँ गामेमे रहता।

अपन जिनगीक पहिल बुझू आकि अन्तिम, पक्षधर काकाक यएह कमाइ–माने बीघा भरि जमीन कीनि अपना हाथे गाछी लगाएब–रहलैन। ओना, पक्षधर काकाकेँ पिताक देल पाँच बीघा जोतसिम खेत सेहो छैन, मुदा दस कट्ठाक जे गाछी-कलम रहैन ओ बाढ़िमे तेना घेरा गेलैन जे तीन मास धरि जड़िमे पानि लागल रहने सभटा सुखि गेलैन। तँए, अन्न-पानि उपजबैबला खेत कीनैक विचार मनमे तेना नइ उठलैन जेना गाछी-कलम लगबैक उठलैन। छोट परिवार, दरमाहासँ कहियो अभाव नइ रहलैन। जइसँ मनमे अतृप्ति कहियो ने भेलैन। तहूमे दुनू कन्यादान सस्तेमे निपैट गेलैन, तँए आन कन्यागत जकाँ पक्षधर कक्काक देहो-पीठ नहियेँ सड़कलैन।

आजुक परिवेशमे भलेँ बिनु दहेजक बिआहकेँ लोक सस्त कहैए मुदा ओ सस्त नहि जिनगीक कृत्तिक बेवहारिक रूप अदौसँ रहल अछि। दुनू बेटीसँ जेठ बेटा- ज्ञानधन, जे अपना विचारे बी.ए. केलाक बाद हाइ-स्कूलमे शिक्षक छैन। अपन पिताक देल पाँचो बीघा जोतसिम जमीन बटाइ लगौने छैथ।

शुरूक जिनगीमे, जखन माता-पिता पक्षधर कक्काक जीविते रहैन आ धिया-पुता नहि भेल छेलैन, तही समयमे जे दरमाहासँ बचत भेलैन ओही रुपैआसँ एक बीघा खेत सड़कक कातेमे कीनि लेला। ओना खेत गहींर छल, जेकरा साले-साल भरबैत बीस सालक नोकरी चलि गेलैन। तैबीच ईहो भेलैन जे बाल-बच्चाकेँ पढ़बै-लिखबैसँ लऽ कऽ बिआह-दान करैत पचीस बर्खक नोकरी खपि गेलैन। असगरे दुनू परानी–माने पक्षधर काका आ विचारी काकी–दरबज्जाक ओसारपर बैसल रहैथ, बेरुका तीन-चारि बजेक समय रहै, चाह पीब दुनू परानी अपन जिनगीक खोद-वेद करए लगला। विचारी काकी बजली-

“एते दिनक नोकरी तँ माता-पिताक सेवासँ बाल-बच्चाक सेवामे चलि गेल, आब अपना सेवा-ले किछु करू।”

विचारशील पत्नीक विचार सुनि पक्षधर कक्काक मनक भूलल-विसरल सरिताक वेगमे पत्नीक विचारकेँ बसा आगूक बाट दिस ताकए लगला। एकाएक विचारक धारमे गति एलैन, जइसँ पत्नीक विचारमे सहमत जतबैत पक्षधर काका बजला-

“बेस बात कहलौं! ओना, अपनो विचारमे छल जे अन्न-पानिक खेत अछिए मुदा कलम-बाग नइ अछि।”

पतिक मुहसँ ‘कलम-बाग’ सुनि विचारी काकी चौंकली, मुदा लगले मनमे भेलैन जे अनेरे किए चौंकै छी। जखन बजनिहार

सोझहेमे छैथ तखन किए ने मुँह खोलि पुछिये लिऐन। लगले मन घुमलैन, घुमिते बजली-

“कनी सोझ मुहेँ बजियौ।”

हिमालय पहाड़सँ दच्छिन मुहेँ आ उत्तर मुहेँ साइयो धार बहैए। जइमे छोटसँ छोट आ पैघसँ पैघ रंग-रूपक धार अछि। ओना, पहाड़क एक झड़नासँ झहरैत जलधर एक धारा बनि आगू बढ़ैए, जइमे अनेको जलधर मिलैत-जुलैत मोटाइत आगू बढ़िते अछि। तहिना अनेको शुद्ध निर्मल क्षीणकाय धारा सेहो अपन रूप-रंग बना नहि बहैए सेहो नहियेँ कहल जा सकैए। ओहने क्षीणकाय धाराक धारवाह पक्षधर काका सेहो छैथ। जेहने अपन जीबैक सुबल रखने छैथ, तेहने कुबलसँ परहेज नइ केने छैथ सेहो नहियेँ कहल जा सकैए। जइसँ अपन जिनगीकेँ अपन विचारी-हाथमे समेट अपन जीवन यात्रा करिते आबि रहला अछि।

पत्नीक विचार सुनि, पक्षधर काका अपन हाथक आँगुरपर हाँइ-हाँइ हिसाब जोड़ए लगला। आँगुरपर-आँगुर चलिते ठोरपर पटपटी आबिये गेल रहैन। विचारक एक सिमानपर जा हिसाबकेँ अँटका पक्षधर काका बजला-

“बारह बर्ख नोकरी बाँकी अछि, जहिना एतेटा जिनगी नोकरीमे बीतल तहिना आब आधा समय सरकारक काज करबै आ आधा अपन करब। सरकारकेँ जँ स्टाफक अभाव छै तँ ओ अपन स्टाफ बढ़ा लिअ। मुदा आठ घन्टासँ एक्को मिनट बेसी समय ऑफिसमे नइ देब। एक घन्टा जे गाम अबै-जाइमे लगैए से समय अपना समयमे सँ लगाएब।”

पतिक विचारकेँ विचारी काकी नीक जकाँ नइ बुझि सकली, मुदा तैयो बजली- “बारह बर्ख नोकरीकेँ कम बुझै छिऐ?”

विचारक आवेगमे पक्षधर काका बढ़ि रहल छला, जइसँ गतिहत मन गतिशील भइये रहल छेलैन। बजला-

“कम किए बुझबै, मुदा बड़ बेसी भेल सेहो केना मानब..! फले सबहक गाछकेँ देखै छिऐ जे अनरनेबा सन-सन फल साले भरिमे  फड़ैए, आमक गाछकेँ पान सालक पछाइत फड़ैक गात बनैए, मुदा ताड़ तँ बारह बर्ख बीतला पछातिये ने फड़ब शुरू करैए। जँ ताड़क फल-जोकर गाछ रोपए चाहब, तइले ते एक्को क्षण गमाएब फलसँ दूर रहब हएत किने?”

विचारी काकी बजली-

“नीक नाहाँति अहाँक बात नइ बुझलौं।”

ओना, विचारी काकीक बात पक्षधर काकाकेँ केतेक नीक लगलैन आकि अधला लगलैन से तँ पक्षधर काका जानैथ, मुदा बुझि पड़ल जे अपन जिनगीक कलम-बाग दिस नजैर दौड़ रहल छैन। तैबीच पक्षधर काका बजला-

“बातक बात ने ओहिना बुझब मुदा काजक तँ काजसँ हएत। जाबे सरकारी नोकरीसँ सेवा निवृत्त हएब, तैबीच बीघो भरि जँ गाछी-कलम लगा लेब तहीसँ जीवन कटि जाएत।”

बारह बर्ख पूर्व पक्षधर काका अपन गाछी-कलम लगा चुकल छला। आइ ओहीमे घुमि-घुमि देखि रहल छैथ। अपन लगौल बीघा भरिक कलम-गाछी पक्षधर कक्काक छैन। ओना पिताक अमलदारीमे दसे कट्ठाक रहैन, मुदा नइ रहैन सेहो नहियेँ कहल जा सकैए। हँ, ई जरूर भेलैन जे बाढ़िक पानि गाछीमे जमने पक्षधरे कक्काक नहि, गामक केतेको लोकक गाछी-कलम नष्ट भेलैन। गामक पानि, गामक सड़क बनने बन्हा गेल, जइमे बरखोक पानि आ बाढ़िक पानि सेहो आबि उपो-उप भरि देलक, जइसँ चौर-चाँचर

जकाँ पानि बसि गेल। जखन उपजाउ जमीन चौर-चाँचरक रूप लेत तखने ओकर उपजाक संग गाछो-बिरीछ आ चिड़ैयो-चुनमुनी बदलिये जाएत। तैसंग पशुसँ मनुक्ख धरिक जिनगीमे सेहो बदलाव ऐबे करत।

गुलाबखास आमक गाछकेँ पक्षधर काका निहारि-निहारि देखि रहल छला। देखि रहल छला जे गाछ तँ खूब मजरल अछि मुदा अखन धरि मज्जर फुलाएल किए ने? ओना, पक्षधर काका अपन नजैर गाछक मज्जरपर देने छला मुदा मन समयक हिसाबपर पहुँच गेलैन। चारि दिन चैतकेँ चढ़ना भऽ गेल मुदा अखन धरि मज्जरक कोढ़ी फलकल किए ने? जरूर किछु कारण अछि। केतौ-ने-केतौ कोनो रोगक प्रकोप जरूर भेल अछि। जे मज्जर फागुनमे फुला कऽ चैतमे दाना क रूप पकैड़ लइए, ओ चारि दिन चैतकेँ बीतला पछातियो अखन धरि फुल किए ने भेल? एकाएक पाछू नजैर घुमेला। ..पाछू दिस नजैर घुमबिते पक्षधर कक्काक मनमे उठलैन जे मासे तँ ने पछुआ गेल अछि? साले-साल तँ नहि मुदा तीन सालपर जहिना मलेमास बनि, बिनु हिसाबेक निकैल जाइए तहिना ने दाहा-मुहर्रम पाछू मास मास दिस धुसैक जाइए। मन कहलकैन- बैशाखक पछाइत ऐगला मास एक मासक मलेमास हएत, माने भेल जे एक मास पाछूक मासक मौसम भरिसक छी। तखन तँ भेल जे चारि चैत नहि, चारि फागुन छी। माने फागुनक शुरूआतक समय छी। माघमे पल्लव गुजरबे करैए, जइमे फलक मज्जरो आ पल्लवक कलशो छिपल रहैए, ओही छिपलमे सँ कोनो-कोनो मजैर फड़बो करैए आ कोनो-कोनो कलैश-कलैश बढ़बो करैए...।

विचारिते-विचारिते पक्षधर कक्काक मन मानि गेलैन जे समयक हिसाबसँ मज्जरमे फूल नइ पकड़लक हेन। ऐमे गाछक कोनो दोख नइ अछि। आगू बढ़िते पक्षधर कक्काक नजैर सपेता

आमक गाछपर गेलैन। सपेता गाछ लग पहुँचते पक्षधर कक्काक मनमे उठलैन, गाछीमे सभसँ निम्मन आम यएह अछि। मुदा लगले मनक विचारक आगू दोसर विचार आबि ठाढ़ भऽ गेलैन।

..ठाढ़ ई भेलैन जे अही आमकेँ लोक मालदहो कहैए। मुदा, की दुनू एक्के छी? दुनू तँ एक तखने ने हएत, जखन दुनूक सभ गुण एकरंग होएत तखन ने दुनू एक हएत। जँ से नहि, तखन नामे किए एक हएत। हँ! ई भऽ सकैए जे एक सपेता दोसर मालदह भेल। दुनूक नामो तँ भिन्न अछिए। तहीकाल सात-आठ बर्खक एक बचिया पक्षधर कक्काक लगमे आबि कहलकैन-

“बाबा, बाबी गामपर अबैले कहलैन अछि।”

पक्षधर काका बजला-

“किए?”

बच्चिया कहलकैन-

“पाहुन एला हेन।”

‘पाहुन’ सुनि पक्षधर काका गुन-धुनमे पड़ि गेला। गुन-धुनक कारण भेलैन जे परिचित पाहुन छैथ कि अपरिचित। ओना, पाहुनकेँ दरबज्जापर आएब शुभ भेल। मुदा ओइ शुभमे परिचित-अ-परिचित पाहुनक अन्तरो अछिए। दरबज्जापर पाहुन एला अछि, मुदा अपनो तँ काजेमे छी। केहेन पाहुन छैथ जइले अपन काज बाधित करब। तहूमे नोकरीक अन्तिम मास छी, छुट्टी बीतते ऑफिस नइ जाएब सेहो केहेन हएत। एते-दिनक नोकरी जखन नीकेसँ निमाहि चुकलौं तखन अन्तिम मासमे कोनो नोछार लगा लेब, सेहो केहेन हएत। जखने कोनो नोछार लगत तखने देखल आम देखले रहि जाएत।

अपन बाधित होइत विचारकेँ नीक जकाँ पक्षधर काका समेटबो ने केने छला कि विचारक आगू पत्नी आबि गेलखिन।

पत्नीपर खौंझ उठलैन, खौंझ ई उठलैन जे जँ पाहुन अगुताएल आएल रहितैथ तँ भेँट करैक बात करितैथ। वएह बच्चा संगे नेने अबितैन। एतबो अपना उकीत नइ भेलैन जे जाबे हम घुमि कऽ जइतौं तैबीच आगत-भागत  करैत कहितथिन जे जाबे अहाँ चाह पीब ताबे कलम-बाग देखि आबि जेता।

गुन-धुन करैत पक्षधर काका गाछ देखब छोड़ि घरमुहाँ भेला। मुदा मनमे फेर वएह बात उठि गेलैन। केहेन पाहुन छैथ? पाहुन बनि भगवान रामो अयोध्यासँ मिथिला आएल रहैथ...।

ओना, पाहुनक प्रति पक्षधर कक्काक मन थीर रहबे करैन, मुदा अपन बाधित होइत समय देखि मन झुझुआइते रहैन जे काजक समय ने अकाजमे चलि जाइन। मुदा लगले पक्षधर कक्काक मन आगू बढ़लैन। आगू बढ़िते विचार उठलैन जे काजक आ अकाजक समय तँ एकरंग काज करैक दौरमे होइए, ऐठाम तँ से नइ अछि। एक दिस दरबज्जापर पाहुन आएल छैथ दोसर दिस अपने गाछी-कलम देखि रहल छेलौं। दुनू काजक बीच, धरती-असमानक अन्तर अछि। मनुक्ख-मनुक्ख भेला, गाछी-कलम गाछ-बिरीछ भेल।

पक्षधर काका दरबज्जासँ कनी फरिक्के रहैथ कि दरबज्जाक कुरसीपर सँ उठैत चाहक गिलास नेने मुनीलाल डेढ़ हाथ जोड़ि पक्षधर काकाकेँ प्रणाम करैत बाजल-

“भाय साहैब, गोड़ लगै छी।”

ओना, पक्षधर कक्काक नजैर सेहो मुनीलालपर पड़लैन। मुदा नजैर पड़िते, मनमे जेना अस्सी मन पानि पड़ि गेलैन। भनकसँ पता चलि गेल छेलैन जे मुनीलाल पचपन बर्खक अवस्थामे दोसर बिआह करत। जे सभ किछु ठीक-ठाक भऽ गेल छइ। अन्तिम विचार करए आएल अछि। तँए मुनीलाल सन पाहुन देखि पक्षधर कक्काक मनमे

ओते जिज्ञासा नइ भेलैन जेते नव पाहुन वा मराएल-हेराएल पाहुनकेँ देखि खुशी होइ छेलैन। ओना, ने अपना मुहेँ मुनीलाल बिआहक सम्बन्धमे कहने छेलैन आ ने अपना काने पक्षधर काका सुनने छला, तँए खुलि कऽ किछु बाजबो उचित नहि बुझि पक्षधर काका दरबज्जापर आबि बिनु किछु असीरवाद देने चौकीपर बैस बजला-

"बौआ! की हाल-चाल? ऐगला मास सेवा-निवृत्त भऽ जाएब।"

ओना, पक्षधर काका दुनू पक्षक विचार रखि बाजल छला मुदा मुनीलालकेँ अपन काजक उत्साह छेलै तँए सेवा-निवृत्तिक विचार छोड़ि बाजल-

"भाय साहैब, हाल-चाल सभ नीके अछि। एकटा विचार कहए एलौं।"

'एकटा विचार कहए एलौं' सुनि पक्षधर कक्काक मन चनकलैन, मुदा अपनाकेँ सम-गम रखैत बजला-

"की?"

मुनीलाल-

"भाय साहैब, अहाँकेँ तँ बुझले अछि जे पैछला साल पत्नी मुइली। पैछले महिना साल लगि गेलैन। दोसर बिआह करए चाहै छी।"

मुनीलालक विचार सुनि पक्षधर कक्काक मन लहैर गेलैन। लहरैक कारण भेलैन जे मुनीलालकेँ दूटा बेटा, जे दुनू पढ़ि-लिखि परिवारक संग बाहर रहैए आ पैंतीस बर्खक जेठ बेटी विधवा भऽ अपने ऐठाम रहै छइ। जेकरा सखा-सन्तान नइ छइ। ओना बेटीकेँ वैधव्य भेला पछाइत माने पति मुइला पछाइत मुनीलाल अपनो आ गामो-समाजक केतेको गोटे दोसर बिआह करैले कहबो केलखिन

मुदा सावित्री एकेठाम सभकेँ कहलकैन- ‘सृष्टि-कर्ता जे भोग उठा लेलैन, तइ भोगक पाछू आब नइ पड़ब। दुनियाँ बड़ीटा अछि। भीख-दुख मांगि गुजर करब मुदा दोसर पुरुखक मुँह नइ देखब।’

पक्षधर काका मुनीलालक आँखि दिस तकैत बजला-

“आब तोहर उमेर बिआह करैबला छह जे बिआह करबह?”

“भैया! अहाँ तँ सभ हाल जनिते छी, बिनु घरनी घर भूतक डेरा।”

मुनीलालक बात सुनि एकाएक पक्षधर कक्काक नरसिंह तेज भऽ गेलैन। नरसिंह तेज होइते देहमे कम्पन्न आबए लगलैन। बजला-

“जँए सभ हाल जनै छी, तँए ने मनाही करै छिऔ। एतबो ने तोरा शर्म होइ छौ जे पैंतीस बर्खक बेटीक मुहसँ की निकलल आ अपना मुहसँ कि निकलैए। परिवारो आ समाजोमे किए अगिलह जकाँ काज करै छेँ।”

अपन विचारमे सोंगर लगा मजबूत करैत मुनीलाल बाजल-

“भैया, देवन भाय जे पचपन बर्खमे दोसर बिआह केलैन?”

पक्षधर काका देवन भाइक पक्ष लैत बजला-

“जहिना देवनक परिवार तहिना तोरा परिवार छौ। जहिना तूँ पिसिऔत भाए छिएँ तहिना ओहो ममियौत भाए छी। तोरा की बुझि पड़ै छौ जे देवनकेँ नीक बुझि नीक केलिऐ आ तोरा अधला बुझि अधला कहै छियौ..!”

मुनीलाल अपन आँखि तेज करैत मधुर स्वरमे बाजल-

“आँखिक सोझमे दू रंग करबो केलौं आ दुसबो करै छी..!”

मुनीलालक विचारकेँ अपना विचारमे समेट पक्षधर काका बजला- “अखन धरि नजैरमे एतबो पानि नइ एलौं हेन जे बुझबिही

देवनकैँ पत्नी मुइने परिवारमे कियो ने रहलै। तैसंग ईहो जे जेकरासँ ओ बिआह केलक, ओहो वेचारी असगरे विधवा परिवारमे छलि, तैठाम जँ दुनूक सम्बन्ध भेल तँ ई बिसवास दुनूक बीच जगिये गेल ने शेष जे जिनगी अछि ओ मिलि-जुटि कटि जाएत।”

पक्षधर कक्काक विचार सुनि मुनीलाल चुपचाप उठि कऽ विदा भेल। पक्षधर कक्काक मन कड़ुआइये गेल छेलैन तँए किछु ने बजला। मुदा उधेड़-बुनमे पड़ल विचारी काकी एक नजैर मुनीलालपर दैत आ दोसर पक्षधर कक्काक मुँहपर दैत देखए लगली।



शब्द संख्या : 2472, तिथि : 11 फरवरी 2018

# कुकुरपन

आठ-नअ बजे चौकपर सँ घुमलौं। गामक लोक तँ मोजर नहियेँ दइए मुदा ओकरे मोजर देने मोजर हएत सेहो तँ नहियेँ अछि। अपन मोजर मोजराबैले लोकक बिनु कहनौं चौक-चौराहाक पनचैतीमे मुड़ियारी दइते छी। किए ने मुड़ियारी देब? चौक-चौराहा कि कोनो एके गोरेक छी आकि सबहक छी, तहूमे जे चौकपर बैइसैए तेकर तँ आरो बेसी भेबे कएल।

ओना, आन दिन सात-आठ बजे सबेरे चौकपर सँ घुमि जाइ छेलौं मुदा आइ कनी देरी भऽ गेल। देरीक कारण भेल जे बुधनी काकीक पनचैती चौकपर आबि गेलैन। बुधनी काकी बेटापर पनचैती बैसौलैन। एकेटा बेटा बुधनी काकीकेँ छैन तँए भीनो हेबाक विकल्प नहियेँ छैन। ओना, आब एहनो देखिते छी जे बेटाक कोन बात जे लोक दुनू परानियोँमे–पति-पत्नीक बीच–भीन होइते अछि। बुधनी काकीकेँ जँ दुइयो तीनटा बेटा रहितैन तखन ने कोनो विकल्प भेटितैन, मुदा से रहलैन नइ। नौऊए-कौऊए एकटा बेटा, एकटा पुतोहु छैन। बेटी सासुरे बसै छैन।

चौकपर पहुँचते बुधनी काकी नाओं धऽ-धऽ बजली जे फल्लाँ-फल्लाँकेँ कहै छिअ जे हमर बातो सुनह आ पनचैतियो करह। तइमे हमरो नाओं बाजि चुकल छेली, तँए अपनाकेँ गमैया पंच, माने चुनावसँ जीतल नहि होइतो सामाजिक पंच तँ भेबे केलौं किने, एकटा वकालतनामा लगौने तँ वकील कोर्टक लड़ाइमे मोकिरक संगी

बनि ठाढ़ होइते छैथ, ऐठाम तँ सभ सबहक चिन्हरबे छी, तहूमे जिनकर झंझट छिऐन से अपना मुहेँ मनोनीत कइये देलैन अछि।

पंचक बीच बैसते बुधनी काकीकेँ पुछलयैन-

“काकी! एकेटा बेटा, एकेटा पुतोहु अछि तखन झगड़ा केकरासँ भेल?”

डाँटैत बुधनी काकी बजली-

“एकटा रावण ते ओतेटा लंकाकेँ आगिमे झड़का देलक आ हमर एकटा-बेटा-पुतोहु कम अछि?”

मनमे अपसोच भेल, अनेरे जागल बिढ़नीक छत्तामे गोला फेकलौं। सोझ-साझ पुछितिऐन जे काकी की भेल। से तँ केलौं नहि...।

अपन विचारकेँ समटैत बजलौं-

“काकी, पहिने अपन बात बजबै तखने ने पंच पनचैती करता।”

चाहे दोकान परक गप छी। पान-सात गोरे जे रही सएह बुधनी काकीक पंच भेल रहिऐन। माइये-बेटाक विवाद, तँए सबालो नमहर नहियेँ छल। ओना, जँ एहेन-एहेन विवाद-सभ परिवारमे उठए लगै तखन एहेन अनुमान हएब सोभाविके अछि जे देशेटा खण्डित नहि अछि, समाजो आ परिवारो अछिए। जँ से नइ अछि तखन एक परिवार रहितो माए-बेटामे विवाद हएब केतेक नीक भेल। जखन ओही परिवारक नीक  माइयो चाहि रहली अछि आ बेटो। एक रस्ता रहितो एँड़ी-दौड़ी लगैक की कारण अछि। एँड़ी-दौड़ी तँ विपरीत दिशासँ अबैत यात्रीक बीच लगैए। एकमुँहरी चालिमे एना किए हएत। एकमुँहरी चालिमे विवाद तखने ने हएत जखन एकमुँहरी घूर-बहूर हएत।

ओना, बुधनी काकी असगरे अँगनासँ बजैत चौकपर तक आएल छेली, संगमे दोसराइत कियो ने छेलैन..! बुधनी काकी पंचवेदीमे बजली-

“हमर छौड़ा भारी मौगमेहरा बनि गेल अछि!”

काकीक बातक कोनो भाँजे ने पेलौं। मुड़ी उठा अपन संगी–राधेश्याम–पर नजैर देलौं। संगीपर नजैर दइक कारण भेल जे बुधनी काकी की कहली से अहाँ की बुझलिऐ। मुदा राधेश्यामो हमरे जकाँ अकबकाएल छला, तँए ओहो मुड़ी गोंतने बैसल छला। मने-मन ईहो हुअए जे केहेन घटिया पंच हमसभ छी जे जखन पनचैती बैसौनिहारक बाते नइ बुझि पेब रहल छी तखन पनचैती की करब! मुदा से पंचक बीच पंचकेँ बाजबो केतेक उचित हएत। हम नइ बुझलौं तँ पछातिये गप-सप्प खुजला बाद बुझि लेब मुदा बैसलौं हेन पनचैतीए करैले आ अपने पनचैतीक मुद्दा बनि झंझटक जड़ि जँ बनि जाइ सेहो केहेन हएत..! नजैर खिरा-खिरा आनो-आन पंच सभपर दिऐन तँ बुझि पड़ए जे सभ हमरे जकाँ लाल-बुझक्कर सभ छैथ। बजलौं-

“काकी, एना झाँपि-तोपि कऽ बाजब तखन पंच की पनचैती करता। साफ-साफ बजबै तखन ने पंच विवादक बात बुझता आ बुझि कऽ निराकरण करता।”

बुधनी काकीक मन जेना कनी शान्त भेलैन। बजली-

“बौआ सभ, तोरो सभकेँ माए-बाप छेथुन, तूँ सभ केना माए-बाप बुझि दुनूक विचारसँ चलै छह। आ हमर जे छौड़ा अछि से मौगीक बात सुनि मौगमेहरा बनि कहैए जे ‘तूँ बुझबे ने करै छीही’, से केहेन भेल?”

बुधनी काकीक बात सुनि मन ठनकल। ठनैकते उठल- जे

बात बुधनी काकी बजली, ई की कोनो बुधनीए काकी-टाक छैन आकि समाजक चलैनमे आबि रहल अछि। जे समाजक चलैनमे प्रवेश केने जा रहल अछि ओ ओहिना थोड़े भऽ रहल अछि आकि ओइ पाछू कोनो परिवेशो क्रियारत अछि। परिवेशो तँ परिवेश छी, नीकक नामपर अधला बनि जाइए आ अधलाक नाओंपर नीकक कण्ठ मोकैए। सघन बोनमे हेराएल एहेन-एहेन प्रश्न समाजक चलैनमे सघन रूपमे नहि पकड़ने अछि सेहो नहियेँ कहल जा सकैए। अछिए। अछिए नहि, घनघोर रूपमे पसैरियो रहल अछिए। मुदा बीचमे एकटा गड़ भेटल, गड़ ई भेटल जे जेकरा विषयमे बुधनी काकी बजली ओ सोझहामे नइ छल। तँए पंचक भारपन देखैत बजलौं- “काकी! अहाँ मुद्दै भेलिऐ, मुद्दालहक परोछमे किछु बाजब केहेन हएत?”

हमर बात बुधनी काकीकेँ जँचलैन। जँचैक कारण अपन बेटा-पुतोहुक मोह भेलैन आकि हमरा विचारक प्रभाव पड़लैन से तँ ओ जनती। मुदा एते जरूर भेल जे पंचवेदीसँ उठि-पुठि कऽ अँगनमुँह होइत बुधनी काकी बुदबुदेली-

“भिनसुरका समय छी, काज-उदमक बेर छी, तँए अपन छोट काज-ले एते पंचकेँ बरदाएब नीक नहि, मुदा सभ अपन-अपन कानपर रखै जैहह।”

न्यायालयमे जहिना कहियो न्यायाधीश अपन बाध्यता देखा समय लइ छैथ तहिना न्याय पौनिहारो अपन बाध्यता देखा समय नइ लइ छैथ सेहो नहियेँ कहल जा सकैए। तहिना अपनो मनमे भेल। बुधनी काकीकेँ अरियातैत बजलौं-

“काकी, अहाँ मिसियो भरि मनमे कुवाथ नइ राखू। निचेनसँ अहाँक पनचैती हेबे करत।”

बुधनियोँ काकीकेँ जेना नीक लगलैन तहिना कनियेँ-कनियेँ घुनघुनाइत अँगनाक बाट पकैड़ आगू बढ़ली।

चाहे दोकानपर रही। जे चाह पहिने पीने रही से चाहेक दोकानपर सठि गेल, तँए गामपर सँ जे चाह पीबैले अबैकालक मन छल, फेर तेहने भऽ गेल। दोकानदारकेँ कहलिऐ-

"तोहर चाह तोरे दोकानपर पचि कऽ बिला गेल। दोहरा कऽ एक गिलास आरो पीयाबह जे खनहन मने गामपर जाएब।"

चाह पीब घर दिस विदा भेलौं। विदा होइते बुधनी काकी मनमे नाचि उठली। कहू जे जइ परिवारमे माए-बेटाक चीन-पहचीन मेटाएल जा रहल अछि ओ परिवार केते दिन ठाढ़ भऽ आगू मुहेँ ससरत?

तरे-तरे मन मलिन हुअ लगल। मुदा लगले मनमे खुशी उपकल जे बुधनी काकी सन लोककेँ बुझा-सुझा विदा केलौं, ईहो की नान्हिटा बात तँ नहि भेल। बाल-बोधकेँ कोनो बात बुझाएब जेते सहज होइए, बुढ़-पुरानकेँ बुझाएब ओते सहज थोड़े अछि। जइ हिसाबसँ जिनगीक हर क्रिया आ क्रियाक ढंग बदैल रहल अछि तइमे परिवारकेँ टुटब सोभाविके अछि। मुदा परिवार नाश भऽ जाए सेहो तँ केतौसँ उचित नहियेँ कहौत। तखन तँ भेल जे दुनूक बीच सामंजस रहैत केना चलत।

घरपर पहुँचबो ने कएल रही, रस्तेमे रही कि किछु फरिक्केसँ हल्ला होइत सुनलिऐ। मन टनटना गेल। टनटना ई गेल जे जँ भरि गाम झगड़े हएत तँ फरिछौत के? दरबज्जाक अगुआरेमे रही कि पत्नीकेँ देखलयैन जे सुधनी भौजीसँ गारि-गरौवैल कऽ रहली हेन। सुधनियो भौजी किछु बाँकी नहि रखि रहल छेली। जहिना-जहिना पत्नी गारिक बौछार छोड़ने जाइ छेली तहिना-तहिना सुधनियो

भौजी उनटा गारि बरिसबै छेली..!

ओना, झगड़ाक जड़ि किछु ने बुझल छल मुदा गारि-गरौवैल सुनि मन तरैंग गेल। आगू बढ़ि पत्नीक पक्ष लैत अपनो सुधनी भौजीकेँ अनधुन गारि पढ़ए लगलयैन। सुधनियो भौजी, एक-एककेँ उनटबैत गेली।

जहिना शान्त मनमे तामस उठला पछाइत गारि उठैए तहिना गारा-गारीसँ मन शान्तो तँ होइते अछि। सएह भेल। गारि-गरौवैल तँ थमि गेल, मुदा सोहन भाय बिचमानि करैत सौंझुका पनचैतीक समय बना देलखिन।

मन जखन शान्त भेल तखन इच्छा भेल जे झगड़ाक जड़ि खोधी जे किए पत्नी झगड़ब शुरू केलैन। जँ कोनो तेहेन बात छेलैन तँ हमरा कहितैथ। सुनला पछाइत जे नीक बुझितिऐ से करितौं। मुर्गी आकि नढ़िया-कुकुर जकाँ एकक मुहसँ आवाज निकैलते दोसर-तेसरक संग समूहे आवाज दिअ लगैए तहिना जँ विवेकी मनुक्खो करए, ई केते उचित भेल। मने-मन ग्लानि हुअ लगल। मुदा आब ग्लानि भेनहि की हएत। मुद्दा तँ पनचैतीक बनि गेल अछि। पनचैतीमे जाइए पड़त आ अपन कएल काज कहइ पड़त। समस्या उत्पन्न होइसँ पहिने किछु विचार नइ केलौं आ जखन समस्या ठाढ़ भऽ गेल तखन उपाये की..!

फेर मनमे भेल जे धिया-पुता जकाँ लगले खेलौं आ लगले बिसैर गेलौं, तेहने ने भेल। कहू जे दसे मिनट पहिने पंचवेदीसँ आएले छेलौं आ लगले बिसैर गेलौं! जँ पत्नीए सुधनी भौजीसँ कहा-कही करै छेली तँ अपने दुनूक बीचमान बनि बात बुझि निराकरण करितौं तँ अपनो ने पंचक प्रतिष्ठा भेटैत। कहू जे लगलेमे पंचक प्रतिष्ठा आबए लगल आ लगले ओकरा समाप्त करैत अपराधी बनि

गेलौं, ई केहेन भेल? आब जँ दोसर कोनो अपराधमे पनचैती करए जाएब आ जँ अपराधीए कहि दिअए जे जे अपने अपराध करैबला अछि ओ निर्अपराध बुझि केना सकैए, तखन केहेन मुँह हएत..!

मन घोर-घोर हुअ लगल। मुदा उपायो तँ दोसर रहल नहि। पंचवेदीमे जाइये पड़त। पत्नीकेँ सोर पाड़ि पुछलयैन-

“किए झगड़ा केलौं?”

पत्नी बजली-

“दुनू गोरे, हमहूँ आ सुधनियो दीदी, कलपर पानि भरए गेल छेलौं। परसू तिलासकराँइत पाबैन छेलइ।”

बिच्चेमे बजा गेल-

“हँ से तँ छेलैहे। मुदा तइले किए कहा-कही भेल?”

पत्नी बजली-

“अपना सभ गाममे परसू पाबैन भेल आ नेपालमे काल्हि भेल। सएह बजलौं।”

बजलौं-

“हँ से तँ भेबे कएल। ऐबेर एना भेल भारत-नेपालक बीच भेल मुदा पौरुकाँ तँ अपनो सभ गाममे दू-दिना पाबैन भेबे कएल छल।”

बजैक क्रममे तँ बाजि गेलौं, मुदा लगले मन घुमल। मन घुमिते विचार उठल जे मकर संक्रान्ति सन पाबैन, माने जे सालक दिशा निर्देश करैए। तिले संक्रान्ति दिनसँ ने सुर्ज मकर रेखा छुबि उत्तरायण होइ छैथ। आ से जँ दू-दिना भेल तखन तँ सालक सभ तिथियो आ पाबनियोँ डोलम-डोल भइये जाएत! जखने जड़िये डोलि गेल तखन डारि-पात तँ डोलबे करत। सुधनी भौजी आ पत्नी बीचक झगड़ा तँ एक-दोसरक बिच्चेटाक नहि, दुनियाँ भरिक छी...। मुदा लगले मन

कहलक- अनेरे कोन चमरछोंछमे पड़ि गेलौं..!

तरे-तर मन बिसाइन-बिसाइन हुअ लगल। मुदा आब उपाये की, जँ केकरो कहबो करबै जे बिनु बुझलमे एना भऽ गेल तँ कोन पंच हमरा बातकेँ मानत। ओ तँ कहबे करत किने जे एहने-एहने काज ने बुधियार सभ करैए। दोसरकेँ गारियो पढ़ि देत आ कहत जे हमरा तँ किछु बुझले ने छल। तखन गारि किए पढ़लिऐ..!

केतबो मनकेँ जीत दिस तर्कसँ बढ़बए चाही मुदा ओ पछैर कऽ निच्चाँ खसि पड़ए। कोनो गड़ नहि देखि जोरसँ पत्नीकेँ कहलयैन-

"अपन घरक मोटा उठबे ने करैए आ देश-दुनियाँक मोटा जे उठबए गेलौं से अहाँ सन भेल?"

पत्नियोकेँ जेना ठोरेपर रहैन तहिना बजली-

"कोनो कि आइयेटा सुधनी दीदीसँ पाबैन-तिहारक गप-सप्प भेल आकि सभ पाबनियो आ आनो-आनो उपास-फलहारमे होइते आबि रहल अछि। जखन दुनू गोरे कलपर एकठाम भेलौं तखन मुँह सीब लइतौं आकि हाल-चालमे हाले-चालक गप करितौं।"

पत्नीक विचारमे केतौ एहेन गड़े ने भेटल जे अपन दोख हुनकापर ठेलि अपने निरदोस बनितौं। बजलौं-

"पाबैनक गप-सप्पमे गारि-गरौवैल किए भेल?"

पत्नी बजली-

"जहिना काबिल लोक एकटा विचारकेँ दस दिसक तर्कसँ बान्हि-छानि जीयतगर बनबैए तहिना ने अपन विचारकेँ जीयतगर बनबैले सुधनियो दीदी आ अपनो, अपन-अपन जुक्ति लगेलौं। तैबीच जँ जोरसँ कहा-कही होइत गारि-गरौवैल भऽ गेल तइमे हमर

कोन दोख?”

पत्नीक विचारमे केतौ लहछीए ने लगै छल जे अपन दोख हुनका कपारपर रखि अपने पंचवेदीमे गलती मानि लेब। किछु छी तँ समाजेक बीच छी किने। ओ थोड़े कहता जे गलती केलौं तँ गामेसँ चलि जाउ। पहिल गलती छी जँ बहुत कहता तँ चेतौनी दैत कहता जे एहेन गलती आगू दिन नै करब। मुदा अपन मन तैयो झखिते रहए जे पत्नीक बीचक जे गारि अछि ओ तँ ई कहिते शान्त भऽ जाएत- ‘स्त्रीगण बीचक बात छी, लगले गारि-गरौवैल करत आ लगले मिलान कऽ कनफुसकी करए लगत, तँए ओहन-ओहन पनचैती करैले पंचकेँ ओते समय छइ। छोड़ू एहेन-एहेन गप्पक पनचैतीकेँ।’ मुदा अपने जे सुधनी भौजीकेँ गारि पढ़लयैन, जे सोहनो भाय अपना काने सुनबो केलैन आ अपना मुहेँ मनाही करैत सौंझुका पनचैतीक सिमान खिंचलैन, तेकर की हएत?

जेम्हरे नजैर दी तेम्हरे रस्ता बन्न देखिऐ। कोनो उपाय सुझबे ने करए। जहिना पानिमे हेराएल पाइकेँ लोक हँथोरिया दऽ दऽ तकैए जे भेटबो करै छै आ नहियोँ भेटै छइ। मुदा जखन सौरखी आकि करहरकेँ ऊपरका पात देखि डन्टीकेँ पकैड़ पानिमे हौंथरैत ताकल जाइए तँ किछु-ने-किछु, माने सौरखी चाहे करहर भेटबे करै छइ। तहिना ने मनुक्खो पात भेल आ ओकर मनुखता भेल सौरखी-करहर, जेकरा पकड़ैले पहिने ओकर जड़ि पकड़ए पड़त...।

मनमे एकटा जुक्ति फुरल। फुरल ई जे पनचैती तँ पंचवेदीमे होइए किने। अखन तँ से नइ बनल अछि। अखन तँ मात्र पनचैती आ समयक रेखा खींचल गेल अछि। से नइ तँ पहिने सुधनीए भौजीकेँ किए ने कहि पंचवेदी बनबसँ रोकि दिऐन। ओना, अपनो मनक तामस सोल्होअना नइ मेटाएल छल मुदा एहेन बेरमे रखबो तँ नीक

नहियेँ होएत।

सुधनी भौजीक आँगन गेलौं। पुछलयैन- “भौजी, अनेरे दुनू गोरे पंचक मकड़जालमे किए फँसब। देखिते छिऐ जे पंच सभ केहेन मुँह देखि मुंगबा परसैए।”

पनचैतीक बात सुनैसँ पहिनहि सुधनी भौजीक मनसँ झगड़ा मेटा गेल छेलैन। मेटाइक कारण भेलैन जे स्त्रीगण बीच अहिना होइते अछि। कोनो कि आइये भेल कि सभ दिनसँ होइत आबि रहल अछि आ जाबे धरि धरतीपर स्त्री जाति रहत ताबे धरि होइते रहत। तइले पर-पनचैतीक कोन खगता..! सुधनी भौजी बजली- “पनचैती कथीक हएत। दिनक दोख छल, भेल आ मेटा गेल।”

सुधनी भौजीक निधैनी बात सुनि मनमे सवुर भेल। सवुरक कारण ईहो छल जे असगरे ने सोहन भाय पनचैतीक समय बनौलैन। पनचैती-ले पहिने पंचवेदी बनत तखन ने पनचैती हएत। अखन से तँ नइ बनल अछि आ सुधनियो भौजी बनबए नहियेँ चाहि रहली हेन। बजलौं- “भौजी, किछु छी तँ अपन दुनू गोरेक परिवार पड़ोसी परिवार छी किने, तँए मिलि-जुलि कऽ रहलासँ बेसी नीक हेबे करत..!”

सूहकारैत सुधनी भौजी बजली-

“ई की कोनो नवका गप छी जे नइ बुझब।”

सुधनी भौजीक विचार सुनि मन हल्लुक भेल। सोचलौं जे सोहनो भायसँ मुँह-मिलानी कइये ली। कोटक सोलह लगलाहा केस जकाँ अनेरे लटकल रहब नीक नहि...।

सोहन भाइक ऐठाम विदा भेलौं। दरबज्जाक आगूमे सोहन भाय हाँइ-हाँइ कुट्टी कटैत रहैथ। लगमे पहुँचते पुछलयैन-

“भाय, एना जे हाँइ-हाँइ कुट्टी कटै छी, आ जँ हाथमे कुट्टी

कट्टा लगि जाए तखन तँ सभ काज अनेरे ढंस भऽ जाएत।”

दुनू हाथ बागि सोहन भाय बजला-

“हाँइ-हाँइ ऐ दुआरे कुट्टी काटए पड़ि रहल अछि जे ई काज साँझू पहर करै छी, अखुनका दोसर काजक बेर अछि। मुदा तोहर पनचैती दुआरे सौंझुका काज अखने पुरबए पड़ि रहल अछि।”

सोहन भाइक सौंझुका भार उतारैत बजलौं-

“अहाँ ने सौंझुका समय पनचैतीक बनौलिऐ, मुदा सुधनी भौजी पनचैती-ले तैयार कहाँ छैथ।”

सोहन भाइक जान जेना हल्लुक भेलैन। नमहर साँस छोड़ैत बजला-

“भने पनचैती टरि गेल। मुदा तोरा संग भैयारीक सम्बन्ध अछि तँए कहि दइ छिअ जे एहेन-एहेन कुकुरपन चालि छोड़ह। नहि तँ समाजमे कहियो मुँह उठा कऽ ताकल नइ हेतह।”



शब्द संख्या : 2229, तिथि : 28 फरवरी 2018

# हेराएल जिनगी

अंगरेजकेँ देशसँ भगला पछाइत दस सालक बाद कमलपुर गामक कल्याण कक्काक परिवारमे हीराननक जन्म भेल। तेसर बेटाक रूपमे हीरानन छल, तइसँ जेठ बौआनन आ हेरानन छल।

सौन मासक सुहावन समय, तैपर समगम मौसम। समगम मौसमक माने भेल- ने अधिक पानि भेने दहार आ ने नइ पानि भेने रौदी। ओना, दुनू परानी कल्याण कक्काक मनमे रहैन जे ऐबेर बेटी हएत। तँए दुनू परानी आपसमे विचारि नेने छला जे बेटीक नाओं 'बुधियारि' राखब। मुदा से भेलैन नहि। दुनू परानीक मनमे रहैन जे भगवान सभकेँ बेटा-बेटी दइते छथिन तँए दूटा बेटा देलैन आ तेसर बेटी देता...। ओना, भगवानोक नेत एकरंग नहियेँ छैन। केकरो घर भरि बेटा दइ छैथ तँ केकरो घर भरि बेटीए दइ छैथ। मुदा ईहो दोख तँ हुनका नहियेँ देल जेतैन जे एकरंग बँटवारा करैत जेते बेटा तेते बेटियो नइ दइ छथिन। सेहो दइते छथिन। माने चारि सन्तानमे दू बेटा, दू बेटी सेहो दइते छथिन।

हीराननक जन्म भेने दुनू परानी कल्याण कक्काक मनमे ओतेक खुशी नइ भेलैन जेते पहिल बेटा भेने वा दू-चारि बेटीक पछाइत बेटा भेने होइ छइ। तैसंग दुखो ओते नहियेँ भेलैन जेते बेटी-पर-बेटी होइत गेलासँ होइए। किछु भेल तँ बेटे भेल किने। दुनियाँमे के एहेन अभागल अछि जेकरा बेटा आ सम्पैत अधला लगै छइ। मुदा गामक जनिजातिमे तेसरे हवा चलि रहल छल। ओ चलि रहल

छल जे भगवन्ताकेँ भदबारिमे महींस बिआइए आ अभगलाकेँ बोहु...। भदबारि भादो मास भेल। किएक तँ बर्खाक शुरू मास ‘सौन’ भेल, भादो ढेनुआर भेल आ आसीन उतार। अखन साउने छी। ओना, बरखा सेहो हेबे करैए मुदा ओ होइए गोटि-पङ्गरा। झड़ी जकाँ सदिकाल झड़झड़ाइत नइ रहैए। तइले भादो अछि। मुदा तहूमे ई निसचित रूपेँ नहियेँ कहल जा सकैए जे झड़झड़ेबे करत। किए तँ जेना कालिदास मेघकेँ दूत बना अखाढ़मे पठबै छैथ तेना पठौलासँ सौनो भादव जकाँ बिचले मास भेल, तँए भदबारि जकाँ झड़झड़ाइयो नइ सकैए सेहो नहियेँ कहल जा सकैए। खाएर जे होइए ओ साल-सालक किरदानीक खेल छी। ऐबेर से नइ भेल। ऐ बेरक सौन कालिदासक अखाढ़केँ जन्म मास नहि मानि अपने जन्ममास बनि गेल।

समगम सुहावन सौन मासक सतमीकेँ हीराननक जन्म भेल। ओना धानक खेती अदहासँ बेसी गाममे भाइयो गेल छल आ जे बाँकी अछि ओहो लगले-सुढ़िमे आठ-दस दिनक पछाइत भऽ जाएत। नीक समय भेने धानक बीरार नीक जकाँ उमझल अछि। रोगो-वियाधि बीआमे नइ अछि आ जर्मिनेशनो नीक भेल तँए बीआ पुरहगर अछिए। तँए जहिना खेतबला-सभकेँ खुशी तहिना खेती लगौनिहारो-सभकेँ खुशी छइहे। ई तँ भेल खेती-खोलाक उपजा-बारीक गप मुदा मनुक्खक उपजा-बारीक की स्थिति अछि तइ दिस ने देखब। किए तँ मनुक्खो तँ अही माटि-पानिक ने उपज छी।

दस बर्ख आजादीक भऽ गेल, गुलामीक पंजासँ निकैल स्वतंत्र हवाक साँस देशो लेलक आ देशवासी सेहो लेलैन। तहूमे आजादी लेनिहार सेनाक संख्यामे दू-चारि प्रतिशत घटबी किए ने भेल हुअए मुदा छियानबे-अनठानबे प्रतिशत तँ जीवित छथिये, जिनका मनमे अखनो ई बसले छैन जे आजादी पबिते–माने गुलामीसँ मुक्त होइते,

धुआँ-धार देशोक कल्याण हएत आ देशवासीक सेहो। तइले अपन आँट-पेट देखलासँ ने भाँजपर चढ़त।

देश आ देशवासीक प्रश्न अछि तँए आनो-आनो गुलाम देश, जे स्वतंत्र भेल, ओ पहिने केहेन स्थितिमे छल आ स्वतंत्र भेला पछाइत साले-साल कोन रूपमे आगू बढ़ल आ दस बर्खक आजादीक पछाइत केतेपर पहुँचल। ई तँ भेल एक देशकेँ दोसर देशक तुलना, मुदा एक-एक देशवासीक जिनगीक तुलना करब जँ छोड़ि देब तखन तँ जड़िये हेरा जाएत! एक-एक जन मिलि ने देश ठाढ़ केने छी आ ओइ बीच अपनाकेँ ठाढ़ करैत आगू-मुहेँ, आजादीक दिवाना जकाँ, कदम-कदम बढ़ैक परियास कऽ रहल छी। तइमे के केतए ठाढ़ छी से जँ नइ देखब तखन तँ अनेरे ने दिशाहीन देखबक संग मुँह ताकब सेहो हएत। जखने मुँहतक्की भेल तखने ने मनुक्खक कदम, कदमक गाछ जकाँ छुच्छे जमीनपर ठाढ़ भऽ सुखि-सुखि-टुटि-टुटि कऽ झड़ैत-झड़कैत रहब। जखन से भेल तखने ने गति मत हति मन बति जाएत?

कल्याण कक्काक परिवार दस बीघा जमीनबला, गामक मध्यम किसान परिवार छैन। मध्यम श्रेणीक परिवार दुनू मानेमे छैन। सम्पैतिक मानेमे सेहो आ जातिक मानेमे सेहो। सम्पैतिक मानेमे ई जे पान साए परिवारक गाममे पौने चारि साए परिवार सम्पैत-विहीन अछि। जइमे किछु गोरेकेँ बाड़ीक संग घराड़ियो छैन, किछु गोरेकेँ घराड़ीए-टा छैन आ किछु गोरेकेँ सेहो ने छैन। तहिना किसानोक परिवार अछि। पाँच गोरेकेँ बीस बीघासँ ऊपर खेत-पथार छैन आ बाँकीकेँ बीस बीघासँ निच्चाँ छैन। ओना, ओहू पाँचो परिवारमे–माने जिनका बीस बीघासँ ऊपर खेत-पथार छैन, पाँचोकेँ पाँच रंग सम्पैत छैन। तीन गोरेकेँ बीस-तीस बीघाक बीच खेत छैन, बाँकी दूमे एक गोरेकेँ साए बीघासँ ऊपर आ एक गोरेकेँ साए बीघाक निच्चाँ छैन।

तहिना बीस बीघाक निच्चाँ जे परिवार अछि, ओइमे खाली पाँचेटा परिवार ओहन अछि जे हालेमे भिनौजी भेने दुनू तीनू भाँइक बीच एकरंग जमीन छैन बाँकीकेँ सभरंग। ओना, ओहूमे तीन रंगक किसान भेला। जेठरैयत, मध्यम आ सीमान्त। माने जिनका दस बीघासँ ऊपर जमीन छैन ओ जेठरैयैत किसान भेला, दस बीघासँ कम आ चारि बीघासँ ऊपरबला मध्यम किसान भेला आ चारि बीघासँ कमबला सीमान्त। तैबीच एकटा बात ईहो तँ अछिए जे पैघ किसान माने बीस बीघासँ ऊपरबलाकेँ समांगो  बेसी छैन सेहो नहियेँ छैथ। समांगक हिसाबसँ सेहो परिवार सभ गजपट अछिए। बेसियो सम्पैतबलाकेँ समांग कम छैन आ कम्मो खेतबला वा बिनु खेतोबलाकेँ समांग बेसी अछिए।

जहिना कल्याण कक्काक परिवार सम्पैतिक हिसाबसँ मध्यम परिवार छैन तहिना जातियोक हिसाबसँ मध्यमे परिवार छैन। ओना, मोटा-मोटी तीन रंगक जाति समाजमे अछि। पहिल ऊँच जाति, दोसर मध्यम जाति आ तेसर नीच जाति। ऊँच जाइतिक बीच सेहो केते रंगक भेद-भावक दूरी अछिए। जे खेनाइ-पीनाइसँ लऽ कऽ कथा-कुटुमैतीमे स्पष्ट झलैक जाइए। तैसंग जीविको आ बेवसाइयोमे सेहो झलैकते अछि। तहिना मध्यम परिवारक बीच सेहो अछिए। ओना, आर्थिक रूपमे जे मध्यम छैथ ओ जाइतिक रूपमे सेहो ऊपर-निच्चाँ भइये गेल छैथ। गाममे मध्यम परिवारक संख्या जहिना आर्थिक रूपेँ तहिना जाइतिक रूपेँ बेसी अछिए। से दुनू रूपमे-आर्थिको रूपमे आ जाइतिक बेवहारक रूपमे सेहो।

तेसर जे सम्पैतियोक रूपेँ आ जातियोक रूपेँ छैथ ओ जाइतिक रूपेँ नीच जाति, हरिजन वा अछोप जहिना कहबैत छैथ तहिना आर्थिक रूपेँ सेहो बोनिहार वा मजदूर वा सर्वहारा सेहो कहैबते छैथ। ओना, ओहू बोनिहार-मजदूर वा सर्वहाराक बीच सेहो

एकरूपता नहियेँ अछि। जाइतिक जे ऊँचपन-नीचपनक आड़ि अछि ओ टुटि कऽ एकबट्ट भइये गेल अछि। ऊँचो जातिमे बोनिहार-मजदूर छैथ आ मध्यमो तथा नीचलो जातिमे सम्पैतिक हिसाबसँ अगुआएलो किसान-सभ छथिए।

नीच जाति, माने अछोप-हरिजन जाइतिक बीच सेहो अनेको जाति आ अनेको धर्म अछि जइमे सभ बँटाएलो छथिए। ओना, बेवहारो आ बेवसायमे सेहो बँटाएल छथिए। खाएर जे छैथ, मुदा एते तँ स्पष्ट पहचान अछिये जे जीवन-मरणमे सेहो एकरूपताक संग बहुरूपता सेहो अछिए। एकरूपता भेल ई जे एक जाइतिक भोजो-भात आ कथो-कुटुमैती ओहीक बीच होइए। ओना, बीचमे ई दीगर भेल जे नीच जाइतिक सम्बन्ध  उच्च जातिसँ नइ अछि वा मध्यम जातिसँ नहि अछि, सेहो नहियेँ कहल जा सकैए। सेहो अछिए, जइसँ जीवन-मरणमे संगी बनियेँ जाइ छैथ। ओना, जीवन-मरणमे संग पूरब सामाजिक भेल, जैपर समाज ठाढ़ भऽ आगू-मुहेँ बढ़त, मुदा एहेन सम्बन्धक बीच सेहो केतेको दराइर अछिए। आर्थिक सम्बन्ध रहितो सामाजिक बेवहारमे दूरी बनलो अछि आ दिन-दिनक चहल-पहलक हवामे बनियोँ-बिगैड़ रहल अछि।

गाम-गामक अपन-अपन माटियो-पानि एक गामसँ दोसर गामक बीचक दूरी सेहो बनौनहि अछि। बजैक क्रममे सभ मिथिलेक गाम भेल आ एके जिला-जबारक सेहो भेल, मुदा कोनो गामक माटि बेसी उर्वर अछि आ कोनो गामक उस्सर। आ तैसंग एहनो तँ अछिए जे या तँ बाउलसँ बलुआएले अछि वा ऊससँ ऊसराहे अछि। तँए, कोनो गाम बारहो मास फलो-फूल आ अन्नोक उपजसँ सम्पन्न अछि आ कोनो गामक बालुक रेतसँ रस्तो-पेरा बन्न अछि आ उपजा-बारीक तँ बाते नहि..!

ई तँ भेल मिथिलाक माटिक सम्बन्ध। मुदा पानियोक सम्बन्ध एके-रंग अछि सेहो नहियेँ कहल जा सकैए। कोनो गाममे धारक छुतियो ने अछि आ कोनो गाममे सत-सतटा धार बहैए। सभ रंगक माटि-पानि रहने सभ रंगक भौगौलिक रूप सभ गामक बनले अछि। ऐठाम एकटा बात आरो अछि, ओ ई जे एक-दोसर पड़ोसी गाम जे अछि ओ ओहन नहियेँ अछि जइमे एक गाममे सत-सतटा धार बहैए आ दोसर गाममे धारक छुति नहि। इलाका-इलाकाक बीच एकरंगाह सम्बन्ध सेहो अछिए।

कमलपुर ओहन गाम अछि जइमे धार-धुर तँ नहि अछि मुदा माटियोक सेखी नीक नै छइ। तेकर कारण अछि कमलपुरक बगलेक गाम होइत एकटा बरसाती धार बहैए। बरसाती धार भेल जे बरखा भेला पछाइत धार होइत पानि बहने जीवित (जीयाल) धार बनि जाइए आ बरखा सटकने धारक गति सटकए लगैए आ सटकैत-सटकैत सुखि जाइए। मुदा जे होइए, एते तँ कमलपुरकेँ केनहि अछि जे भदबारिमे बाढ़िक रूप बना कमलपुरोक खेतक रस चुसि, उर्वरा शक्तिकेँ धोइ-पोछि शक्तिहीन बना देने अछि। ओना, कोनो-कोनो गामकेँ बाढ़ि पाँक आनि जोरगर सेहो बनैबते अछि। मुदा से कमलपुरमे नहि अछि। जहिना कमलपुरक माटि शक्तिहीन अछि तहिना पानिक समुचित बेवस्था नइ रहने सेहो उस्सर जकाँ अछिए।

हजार बीघामे पसरल कमलपुर गामक खेतीवारी सोल्होअना बर्खापर आश्रित अछि। ने गाममे नहर पानिक बेवस्था अछि आ ने एकोटा बोरिंग। बरखोक हिसाब ओहन नहियेँ अछि जे सभ साल नियमित रूपसँ एकरंग बरसबे करत, जइसँ किसान अपन मनक आँकड़ा–खेती करैक तरीकाक संग ओकर उपजो–ठीक-ठीक बैसा करत। गोटे साल खूब बरखा भेने गाममे दहार भऽ जाइए आ गोटे साल कम बरखा भेने रौदी सेहो भइये जाइए। तैसंग कोनो साल

समुचित बरखा भेने नीक ऊपज नइ होइए सेहो नहियेँ कहल जा सकैए।

गामक भौगौलिक बनाबट सेहो एकरंग नहियेँ अछि। आधासँ बेसी जमीन नीचरस अछि। जइमे अधिक बरखा भेने वा बाढ़ि एने छह-छह मास तक पानि बसल रहैए। ओहू पानिक एक हिसाब नहियेँ अछि। खेत-पनियासँ लऽ कऽ भरि डँरपनियाँ तक भऽ जाइए। ‘खेतपनियाँ’ भेल जे जइ खेतमे ओतबे पानि रहल जइसँ धानक उपज भऽ गेल। ओना, धानेटा ओहन अन्न अछि जे पानिमे उपजैए। आन-आन अन्नकेँ हालेटा चाही, जमकल पानि नहि चाही। जखने खेतमे पानिक जमाव हएत तखने ओ फसल नइ उपजत।

मोटा-मोटी कमलपुर गाम ओहन अछि जइमे सोल्होअना खेतिए-वारीपर निर्भर अछि। जे कि गोटे-गोटे साल उपजा-बारी नीक होइए, नहि तँ धारे-कोन खेतियो होइए आ धारे-कोन उपजो होइए। ‘धार-कोन’ भेल, सोलहअनाक बदला चौदहअना, बारहअना, आठअना, चारिअना। सोलहअना खेतियो आ सोलहअना उपजो नइ भेने गामक जे सम्पैत  अछि ओ सोल्होअना उपयोगी नहियेँ भेल। सोल्होअना उपयोगीक अर्थ भेल जेतेक सम्पैत अछि आ ओकर जे उपजक रेशियो  अछि तेते नइ हएब। खाएर जे अछि मुदा कमलपुरबलाक जीवनक तँ यएह आधार छिऐन।

कल्याण काकाकेँ आठ बीघा जमीन पैत्रिक छेलैन आ अपन मेहनतक बले परिवार चलबैत दू बीघा आरो कीनलैन। जइ हिसाबसँ गामक किसानक जमीनक फेर-फार भेल तइ हिसाबसँ कल्याण कक्काक नहि भेलैन। फेर-फार भेल, मलगुजारीक अभावमे जमीन निलाम हएबक संग बर-बेमारी, पढ़ाइ-लिखाइक संग बिआह-दानमे बेचब-बिकनब। आठ बीघा जमीन जे कल्याण काकाकेँ छेलैन ओ

ऊँचाइ-नीचाइक हिसाबसँ तीन मेलक छेलैन। किछु नीचो छेलैन, किछु मध्यमो छेलैन आ किछु ऊँच-उपराइर सेहो छेलैन। जइसँ एते लाभ होइते छेलैन जे जइ साल रौदी भेल तइ साल नीचला खेतमे नीक उपज भऽ जान्हि आ जइ साल दहार भेल तइ साल ऊपरका खेतमे नीक उपज भऽ जाइ छेलैन। समटल परिवार, सभ अपन-अपन किसानी जिनगीसँ जुड़ि मेहनत करै छला आ बिना कोनो बाहरी दाब-चापसँ स्वतंत्र जिनगीक परिवार बना जीबैत आबि रहल छला।

कल्याण काका अपने साधारण पढ़ल-लिखल लोक छला। किताबो पढ़ि लइ छला आ नाम-गामक संग जोड़-घटाउ, गुणा-भाग सेहो भऽ जाइ छेलैन। जइसँ खेतोक नाप-जोख आ अनो-पानिक तौल-जोख कइये लइ छला। अपन पढ़ब-लिखब कल्याण कक्काक मनकेँ एते आकर्षित कइये नेने छेलैन जे पढ़ाइ-लिखाइकेँ परिवारक अनिवार्य काज बुझै छला। दुनू शासनक– अंग्रेजी शासनसँ लऽ कऽ देशी शासनक बीचक सीमापर कल्याण कक्काक जिनगी रहलैन। माने उतरैत अंग्रेजी शासन आ चढ़ैत देशी शासन। जइसँ देशक गुलामीक संग स्वतंत्र जिनगीक बीचक जिनगी कल्याण कक्काक रहबे केलैन। ओना, स्वतंत्र जिनगी लोक अपने निर्माण करै छैथ, मुदा तइमे बाहरी प्रभाव–माने शासनक प्रभाव नहि पड़ैत अछि, सेहो कहब अनुचिते हएत। शासने-सूत्रसँ सत्ता चलैए आ ओही सत्ताक बीच जीवन चलैए। ओही जीवन-जापनक बीच परिवार अछि। जे वंशगत आधारपर ठाढ़ होइत आबि रहल अछि। परिवारक अर्थ भेल देशक सभसँ छोट अंग– माने सभसँ छोट संस्था, जेकर संचालन-सूत्र  परिवारे-जनक ऊपर रहितो अछि आ रहितो आबि रहल अछि।

1947 इस्वीसँ पूर्व कल्याणपुरमे लोअर प्राइमरी स्कूल मात्र छल। ओना, किछु परिवार एहेन जरूर छल जे खानगी पढ़ाइक

बेवस्था अपना दरबज्जेपर केने छला आ किछु गोरे अपन धिया-पुताकेँ बाहर भेज पढ़ौलैन, मुदा ओ गोटि-पङ्गरा परिवार छल। गामक हिसाबसँ माने सामाजिक रूपमे सिरिफ एकटा लोअरे प्राइमरी स्कूलटा छल। कमलपुरसँ कोस भरि हटल, दोसर गाममे मिडिलो स्कूल, हाइयो स्कूल आ संस्कृत महाविद्यालय सेहो छल।

देश स्वतंत्र भेला पछाइत कल्याणपुरमे सेहो मिडिल स्कूल खुजल। जइमे चारि क्लासक पढ़ाइ शुरू भेल। चौथासँ लऽ कऽ सतमा धरि। चौथा-पाँचमामे विद्यार्थीकेँ फीस नइ लगै छेलै आ छठमा-सतमामे अढ़ाइ रुपैआ महिनाक हिसाबसँ फीस लगै छेलइ। जे सातम दशकमे बन्न भेल। बिहारमे जनवादी सरकार बनला पछाइत हाइयो स्कूलक फीस बन्न भेल, जइसँ मैट्रिक तकक शिक्षा सभकेँ उपलब्ध भेल।

कल्याण कक्काक पहिल आ दोसर बेटा, माने बौआनन आ हेरानन हाइ स्कूल तक जरूर पहुँचल मुदा मैट्रिक पास नइ केलक। एगारहम क्लास मैट्रिक होइ छल, जइमे दू सालक सिलेबस रहइ। माने दसमा-एगारमाक एक्के सिलेबस रहइ। दसमा तकक परीक्षामे विद्यार्थीकेँ नहि रोकल जाइ छल, माने फेल नइ कएल जाइ। एगारहमाक परीक्षा सरकारक अन्तर्गत होइ छल, जे साले-साल होइ छल। नअ विषयक पढ़ाइयो आ परीक्षो होइ छल। नम्बरक हिसाबसँ श्रेणीक बँटबारा छल। नअ रंगक नअटा विषय छल जइमे एक्को विषयमे फेल केने विद्यार्थी फेल होइ छल।

पाँच बर्खक हीरानन जखन गामक स्कूलमे प्रवेश पेलक तखन आन-आन विद्यार्थीसँ नीक वातावरण परिवारमे भेटलै। नीक वातावरणक माने भेल जे अधिकांश लोकक परिवार ओहन छल जइमे शिक्षाक प्रवेश नइ भेल रहइ। मुदा हीराननकेँ से नहि, साक्षर पितो आ जेठ दुनू भाइयो परिवारमे रहथिन। ओना, कल्याण काका

जहिना बौआनन आ हेराननकेँ अक्षर-अंकसँ लऽ कऽ किताब पढ़नाइ सिखेलखिन तहिना हीराननकेँ सेहो सिखौलैन। जइसँ स्कूलमे हीरानन आन विद्यार्थीक अपेक्षा तेजगर-बुधिगर छल।

मिडिल स्कूलक अन्तिम परीक्षा तकमे हीरानन प्रथम होइत रहल। हाइ स्कूलमे प्रवेश पबिते, पाँचटा मिडिल स्कूलसँ आएल पाँचटा प्रथम विद्यार्थीक बीच हीरानन आबि गेल। ओना, हाइ स्कूलक फीस जहिना समाप्त भेल तहिना अंग्रेजी विषयकेँ सेहो कम कएल गेल। अधिक-सँ-अधिक विद्यार्थी अंग्रेजीमे फेल करै छल। एक तँ विदेशी भाषा-साहित्य, दोसर बाल-मनक ऊपर आरो-आरो विषयक दाब छेलैहे। तइ बीच एकटा आरो भेल, ओ भेल परीक्षामे चोरीक आगमन। माने चीट-पुरजीसँ देखि कऽ लिखब।

ओना, अंग्रेजीक पढ़ाइ हाइ स्कूल (आठमा) सँ शुरू होइ छल, मुदा तेकरा पाछू घुसका मिडिल स्कूलमे सेहो आनल गेल। माने छठा क्लाससँ अंग्रेजी शिक्षा शुरू भेल। भाषा आ विषयक समस्या हाइ स्कूलमे जबरदस छल। जहिना भाषा-साहित्यक रूपमे अंग्रेजी, हिन्दी, संस्कृत, मैथिली छल तहिना विषयक रूपमे आर्ट-साइंस-कामर्सक अनेको विषय सेहो छेलैहे।

प्रथम श्रेणीमे हीरानन मैट्रिक पास केलक। तइमे किछु पढ़बोक जोग छेलै आ किछु चोरियोक। ओना, परीक्षामे केतबो चोरी किए ने बढ़ल मुदा तैयो प्रथम श्रेणीक रिजल्ट कमे होइ छल। दोसर श्रेणीक रिजल्ट बेसी होइ छल। कल्याण कक्काक परिवारमे पहिल-पहिल प्रथम श्रेणीमे उत्तीर्ण विद्यार्थीक जन्म भेलैन। तँए परिवारमे सबहक मन उत्साहित भइये गेल छेलैन। तैबीच शिक्षण संस्थानक क्षेत्रमे सेहो उछाल आएल। जेकरा हम सभ आइ मधुबनी जिला कहै छिऐ ओ दरभंगा जिलाक अनुमण्डल छल। साठिक अन्तिम दौर आ सत्तैरिक दशकक शुरूआती दौरमे शिक्षाक प्रति जागरणक एकटा

नव रूप उभरल। जइसँ स्कूलोक संख्या बढ़ल आ कौलेजोक। स्वतंत्रतासँ पूर्व (1947) दरभंगा जिलामे मात्र दूटा कौलेज, एकटा दरभंगामे सी.एम.कौलेज आ दोसर मधुबनीमे आर.के. कौलेज छल, तइमे उछाल आएल। एकाएक चारिटा कौलेज– बाबूबरही, सरसो, झंझारपुर आ निर्मलीमे खुजल। ओना, क्षेत्रक हिसाबसँ निर्मली सुपौल जिला छी जे ओइ समय सहरसा छल।

विज्ञानक विद्यार्थीक रूपमे हीराननक प्रवेश निर्मली कौलेजमे भेल। घरसँ अढ़ाइ कोसपर कौलेज...।

हीरानन जखन हाइये स्कूलमे छल तखने बिआह सेहो नेपालक सप्तरी जिलामे भऽ गेल छेलइ। ओना, जइ इलाकामे हीराननक बिआह भेल ओ पहिने भारतेक सटल राज्य छल। जेकरा मिथिला राज्य कहल जाइए। ओना, ओहू समयमे आ अखनो किछु लोकक मनक धारणा एहेन छैन्हे जे सम्पैतसँ अधिक महत शिक्षाकेँ दइ छैथ आ किछु लोकक एहेन धारणा छैन्हे जे सम्पैतकेँ अधिक महत दइते छैथ। मध्यम श्रेणीक परिवार रहने दुनू दृष्टिसँ, शिक्षो आ सम्पैतोमे नीक परिवार हीराननक छेलैन्ह। तँए अपनासँ बीस सम्पैतियो आ शिक्षोबला परिवारमे हीराननक बिआह भेल। ओना, मध्यमो आ ऊँचो परिवारमे एकटा जबरदस रोग प्रवेश कइये चुकल छल जइसँ स्वस्थ मनुक्खक निर्माणमे बाधा भेल। माने ई जे श्रमहीनता बढ़ल। नोकर-चाकर, जन-बोनिहारक हाथे खेतीसँ परिवार धरिक काज लेने रोग बढ़बे कएल।

बी.एस-सी. करैसँ पहिने हीरानन एम.एस-सी. करैक हिम्मत (साहस) तँ हारि चुकल छल मुदा एते मनमे आशा रहबे करै जे हाइ स्कूलमे सांइस टीचर बनबे करब। मुदा से भेलै नहि।

तैबीच पिताक मृत्यु माने कल्याण कक्काक, सेहो भऽ गेलैन आ परिवारमे तीनू भाँइक बीच भिनौजी सेहो भऽ गेलइ। दस

बीघाबला किसान परिवारक हीरानन, साढ़े तीन बीघाबला भऽ गेल। हीरानन अपना हाथे कहियो खेतीवारीक कोनो काज केने नहि, जन-बोनिहारक हाथे काज होइत आबि रहल छल, तैसंग जहिना हीराननक अपन जीवन-स्तर कौलेजिया विद्यार्थीक बनि गेल छेलै तहिना पत्नीक मनमे सेहो रंग-रंगक कामना छेलैन्हे। दुनू परानीमे किनको ओहन ऊहि नहि जागल छल जे मनुक्खक बुधि आ ओकर काजपर नजैर जाइत। गोबर-माटिसँ नीपल-पोतल जकाँ देखा-देखी समाजो आ परिवारोक सीख-लीख पकैड़ चलि रहल छल। तैपर मिथिलांचलक किसानक जिनगीक दुर्भाग्य रहल जे मौनसुन आधारित जिनगी रहल। जे कहियो बाढ़िक चपेटमे तँ कहियो रौदीक चपेटमे पड़ैत आबि रहल अछि।

एक बाढ़ि आ एक रौदीक माने साल भरिक रौदी, तहिना एक बाढ़िक माने ओहन बाढ़ि जइमे साल भरिक उपजा प्रभावित होइए, प्रभाव पाँच बर्ख धरि परिवारकेँ प्रभावित करैए। माने ई जे एक सालक नोकसानकेँ पुरबैमे पाँच बर्ख लगि जाइए, तखन ओ पूर्ववत अवस्थामे अबैए। मुदा तइ बीच ईहो समस्या तँ अछिए जे पाँच बर्खक सुभ्यस्त (खुशहालीक) समय हएत तखन ने, जँ दोहरा गेल वा दोसर-तेसर साल फेर ओहन समस्या आबि गेल तखन तँ समस्या आरो जटिल भइये गेल।

ओना एक सालक बाढ़ि-रौदीक चर्च भेल मुदा बाढ़ियो-रौदीक की कोनो आड़ि-धुर, सीमा-सरहद अछि, जे एतबे हएत। ओकरो रूप तँ साधारणसँ बिकराल धरिक अछि। माने छोट-बाढ़िसँ जहिना साल भरिक फसिल प्रभावित होइए तहिना एहनो बाढ़िक रूप तँ अछिए जे घरो-दुआर खसबै-दहबैए आ गाम देने धारो फोरि दइए। तहिना रौदियोक अछि। छोट रौदी भेने सालक उपजा जरैए आ नमहर भेने पोखैरो-झाँखैर सुखबैए आ गाछो-बिरीछ सुखैबते अछि।

समय बीतल। दुनू परानी हीरानन पचपन बर्ख टपला पछाइत बचपन दिस देखब शुरू केलैन। परिवारमे तीन सन्तान छैन। दू बेटी आ एक बेटा। जेठ बेटी, माझिल बेटा आ छोट बेटी छैन। जेठ बेटी बिआह करै-जोकर भऽ गेलैन। बेटा सेहो हायर सेकेण्ड्री पास कऽ लेलकैन आ छोट बेटी आठमामे पढ़ि रहल छैन।

दस बजेक समय। खेतसँ हीरानन आबि दरबज्जाक चौकीपर बैसला। हीयहारिणी सेहो आँगनसँ निकैल दरबज्जापर एली तँ पतिकेँ चौकीपर बैसल देखलैन। सहैट कऽ पतिक लग आबि बजली- “मन बड़ खसल अछि?”

अपन पारिवारिक स्थितिक बीच हीराननक मन बिचैड़ रहल छेलैन, जइसँ चेहराक ऊपरका सुर्खी मलिन भऽ गेल छेलैन। हीरानन बजला- “मनेटा नहि परिवारो खसि रहल अछि..!”

ओना हीरानन अपना विचारे माने पढ़ल-लिखल लोक जकाँ बाजल छला, मुदा पत्नी से नइ छथिन। साधारण नाओं-गाओं लिखै-पढ़ै धरिक ज्ञान छैन। मुदा दुनूकेँ पचपन बर्खक जिनगीक अनुभव, एकटा नव रूपमे ज्ञानकेँ जगाइये देने छैन। हीयहारिणी बजली-

“से की?”

हीरानन बजला- “आइ बुझि पड़ि रहल अछि जे आब जीब कठिन अछि।”

‘जीब कठिन अछि’ सुनि हीयहारिणी चौंकैत बजली- “से की?”

नमहर साँस छोड़ैत हीरानन बजला- “सुनीता बिआह करै-जोकर भऽ गेल जे अहूँ कहै छी, आ समाजोक लोक कहै छैथ आ करो-कुटुम कहिते छैथ।”

हीयहारिणी बजली- “से तँ भइये गेल अछि।”

हीरानन- “अपनो आँखि अछि, अपनो देखै छी। मुदा सोझे देखने थोड़े हएत। जे परिवेश बनि गेल अछि आ जे परिवार अछि तइमे दस लाखक काज भेल। तैसंग सुधीर सेहो कहैए जे एम.बी.ए.मे नाओं लिखाएब। केना पार लागत। लऽ दऽ कऽ साढ़े तीन बीघा खेत अछि। ओकरो मूल्य कमिये गेल अछि। किसान जगैत तखन ने किसानी जिनगी जगैत जइसँ खेतक मोल बढ़ैत, से तँ भेल नहि..!”

हीयहारिणी-

“तखन?”

हीरानन-

“तखन की, पाछू उनैट तकै छी तँ बुझि पड़ैए जे जिनगीए जेना हेरा गेल।”

पतिक बात सुनि हीयहारिणी किछु बजली नहि, मुदा जहिना सूर्यास्तक पछाइत अकासमे रंग-रंगक तरेगन उगए लगैए तहिना दुनूक मनमे रंग-रंगक विचार उठए लगलैन। जइसँ दुनूक मन अन्हार राति जकाँ सियाह होइत कारी-सियाह भऽ गेलैन।



शब्द संख्या : 3107, तिथि : 5 मार्च 2018

# आशापर पानि फेर गेल

परिवारमे जहिना कोनो विद्यार्थी कौलेजमे शिक्षा ग्रहण करए लेल प्रवेश करैए वा कोनो फलक गाछमे पहिल नव फल लगैए वा फूलक गाछमे पहिल फूल लगैए जइसँ जेहेन खुशीक लहैर जगैए तहिना ललित भाइक मनमे खुशीक लहैर जगलैन। जीवनमे जहिना नव कृत्ति वा नव बेवसाय एने मनमे आशाक किरण छिटकैए तहिना ललित भाइक मनमे आशाक किरण छिटकए लगलैन...।

ललित भाइक जीवन किसानी-जीवन छिऐन। पनरह बीघा खेत छैन आ भैयारीमे असगरे छैथ। ओना, तीन पीढ़ीसँ ललित भाइक ई पनरह बीघा खेत आबि रहल छैन। तेकर कारण अछि जे जहिना ललित भाइक बाबा भैयारीमे असगरे रहथिन तहिना पिता सेहो भेलखिन। गामक लोक एक-पुरखियाह परिवार बुझै छैन। परिवारमे बेटा-पक्ष तँ सभ दिन असगरक रहलैन मुदा बेटीक बाढ़ि नइ रहलैन से बात नहि अछि।

बी.ए. पास केलाक पछाइत ललित भाय किसानी जीवन धारण केलाह। ओना, आन-आन जकाँ ललित भाइक मनमे कहियो नोकरी-चाकरी नइ एलैन, जइसँ पढ़ैक क्रममे कहियो मनमे ई नइ जगलैन जे धुरफन्दा चालि पकैड़ नीक रिजल्ट पाबी। धुरफन्दा चालि भेल- नोकरीक हिसाबे पैरबी-पैगामसँ परीक्षाक रिजल्टक जोगार बैसाएब। ललित भाइक मनमे बच्चेसँ एहेन विचार जमि कऽ घर कए लेलकैन जे ज्ञान-ले पढ़ै छी। ओना, सभ ज्ञाने-ले पढ़बो वा लिखबो

करै छैथ। तँए, ललित भाय ने कहियो ट्यूशनक भीर गेला आ ने नोट-चन्द्रिकाक भाँजमे पड़ला। सभ दिन मौलिक किताब कीनि पढ़लैन।

शिक्षा ग्रहण करैसँ पूर्व जहिना ललित भाइक मन असथिर रहैन तहिना पढ़ाइक पछातियो असथिरे छैन। जहिना बिजनेसी परिवारमे बच्चाक मन असथिर बनल रहैए जे पढ़ाइक पछाइत माने स्कूल-कौलेज छोड़ला बाद, अपन पितृवत् बेवसायिक जिनगी पेबे करब, तहिना किसानोक परिवारमे अछिए। नोकरीदार परिवारमे वा पेशेवर राजनीतिक परिवारमे एहेन विचार जागह वा नहि जागह, मुदा वेपारी आ किसानी परिवारमे जागब सोभाविक अछिए। जहिना नोकरी करैबला परिवारमे दोसरक मातहतीक आशा बनैए– से चाहे सरकारीबला हुअ वा गैर सरकारी नोकरीबला, तहिना राजनीतिक परिवारमे सेहो होइते अछि। ऐठाम राजनीतिक परिवारक माने देश सेवा वा देश-भक्तिसँ नहि, बल्कि बेवसायिक प्रवृत्तिसँ अछि। देश-भक्तिक तँ विराट रूप अछि। विराट रूप ई भेल जे जहिना देशक आजादी-ले कियो फाँसीपर लटैक गेला तँ कियो जेलमे यातना सहैत अपन जीवन अन्त केलैन, तहिना कियो कश्मीर सन बर्फीली जगहमे पूस-माघ मासक जाड़क दिन कटै छैथ, तँ कियो समुद्रक पानिक तरमे अपन कर्तव्यक पालन सेहो कइये रहला अछि। मुदा की एतबे देश-सेवा आ देश-भक्ति भेल?

..जे शिक्षक स्कूलमे अपन कठिन श्रमक ज्ञान संचरण करैत अपन जीवन नव पीढ़ीक निर्माणमे लगा रहला अछि वा जाड़-बरसातमे आकि रौदमे जे किसान हर-कोदारि चला अन्न-पानि पैदा कए रहला अछि वा जे कियो पहाड़सँ पाथर काटि-तोड़ि कऽ सड़कक निर्माण कए रहला अछि वा जे कियो कोयलाक खानसँ कोयला निकालि सम्बन्धित खगताक पूर्ति कए रहला अछि, की

हुनका सभकेँ देश-भक्त नहि कहबैन? देश-भक्त तँ वएह ने भेला जे देशक कोनो अंगमे अपन अंश-दान जोड़ि जीवन-बसर कऽ रहल छैथ।

जहिना कोनो देश एक-एक जन-गणक छी तहिना देशक एक-एक अंगकेँ समृद्ध बनाएब सेहो एक-एक जन-गणक दायित्वो छीहे। जखने दुनूक बीच सामंजसक मूर्ति बनि स्थापित हएत तखने देशमे समृद्धता औत, देश समृद्ध बनत। जखने देश समृद्ध बनत तखने जन-गणक बीच सेहो समृद्धता एबे करत, जइसँ मनुक्खक जिनगी अधिक-सँ-अधिक सुखमय आ आनन्दमय बनत। जे सभ कियो चाहितो छी।

नोकरीपर आश्रित परिवार जहिना आगू-पाछू आ ऊपर-निच्चाँ होइत चलैए तहिना राजनीतिक-परिवार सेहो चलिते अछि। आगू-पाछू वा ऊपर-निच्चाँ भेल- जहिना ऊपर श्रेणीक नोकरी करैबलाक बेटा, अनेको कारणे निच्चाँ श्रेणीक नोकरीक जीवन बना आगू बढ़ै छैथ, तहिना राजनीतिक परिवारमे सेहो होइते अछि, पैछला पीढ़ी आ भविसमे ऐगलो पीढ़ी ऊपर-सँ-निच्चाँ आ निच्चाँ-सँ-ऊपर सेहो होइते चलै छैथ। तँए बेवसायिक आ किसानी जिनगीक अपेक्षा राजनीतिक आ नोकरशाहीक परिवारक जीवन धारामे ई अन्तर अछिए। ओना, कुसमय भेने ओहू दुनू परिवारमे ऊपर-निच्चाँ नइ होइए सेहो नहियेँ कहल जा सकैत अछि। मुदा दुनूक बीच तात्त्विक अन्तर अछि। नइ चाहितो लोक करिते छैथ। ओना, ईहो अकाट्य नहियेँ अछि। किएक तँ मनुक्ख अपन विचारानुकूल जीवन धारण करैत पीढ़ीगत जीवनसँ अलग होइत नव जीवन धारण करिते आबि रहल छैथ। जे समैयक गतिक संग गतिशीला गतिमानो तँ बनियेँ सकै छैथ।

ओना, धरतीपर जतेक मनुक्ख छैथ सभकेँ अपन-अपन

मनराजो छैन जे राजा मनो छैन्हे। जइ मन राजाकेँ मना चलए लेल तृप्तिक खगता छैन्हे। मुदा पारिवारिक-सामाजिक जीवनमे मनक तृप्तिक अनेको बाधा नइ अछि सेहो नहियेँ कहल जा सकैए। ओना, जइसँ अतृप्त जिनगीकेँ तृप्तिक बाट भेटै छै ओ भेल सभसँ ऊपरक वस्तु, जेकरा धर्म सेहो कहै छिऐ आ लोक अपन जीवनकेँ ओही धारा दिस मोड़ि सेहो चलिते छैथ। मुदा पारिवारिक जीवन तँ सामुहिक जीवन छी, भलेँ ओ वंशगते आधारित किए ने हुअए। जहिना परिवार मनुक्खक समूह छी तहिना पहाड़पर सँ झहरैत अनेको झरना आगू बढ़ैत समूहक रूप पकैड़ धार वा धारा नइ छी सेहो नहियेँ कहल जा सकैए। सेहो तँ छीहे। ओना, परिवारक बीच दुनू धारा चलैए। एक नोकरशाही परिवारमे जहिना उच्चकोटिक कलाकार आकि गुणमान नइ होइ छैथ सेहो तँ नहियेँ अछि। गुणमन्तक संग धनमन्त वा जनमन्त नहि छैथ, सेहो केना कहल जा सकैए। ओना, स्कूल-कौलेजमे कलाकेँ अवैज्ञानिक विषय मानि कलाक छात्रकेँ अवैज्ञानिके मानल जाइए। मुदा दुनूक बीच व्यक्त आ अव्यक्त ज्ञानक दूरी तँ अछिए। माने एकटा भेल साइंस, जइमे फिजिक्स-कैमेस्ट्री इत्यादिक पढ़ाइ अछि, दोसर भेल कॉमर्स, जइमे बिजनेस पद्धतिक पढ़ाइ अछि आ तेसर भेल आर्ट, जइमे साहित्यसँ इतिहास-भूगोल धरिक पढ़ाइ अछि। मुदा तीनू विषयक बीच व्यक्त-अव्यक्त ज्ञान अछि कि नहि अछि ई तँ प्रश्न अछिए।

जहिना नदी पहाड़पर सँ उतैर धरतीपर आबि सामूहिक रूप धारण करैत एक स्वच्छ जलधारक रूपमे प्रवाहित होइत चलैए तहिना एक्के नोकरशाह परिवारमे रंग-रंगक विचारक लोकक सामंजसो अछिए जे अपन-अपन इष्टिक अनुकूल जीवन धारण केने चलिते अछि। एहेन खाली नोकरशाहे परिवारमे अछि सेहो बात नहि, वेपारियो परिवारमे अछि आ राजनीतिक वा किसानोक परिवारमे

सेहो अछि। मुदा अछि ओ बिरल संख्यामे। अबिरल ओहन संख्या बेसी अछि जइमे एहेन स्वच्छ, निर्मल आ पवित्र धाराक प्रवाह नइ अछि। एकर माने ईहो ने भेल जे बाँकी सभ गदियाएले वा पँकियाएले अछि। ईहो तँ सोभाविके अछि जे पहाड़पर सँ झहरैत झरनाक पानि पाथरे-पाथरक रस्तासँ बहैत धरतीपर बल-बालुक रस्ता पकैड़ आगू बढ़ैए तँए ओइमे स्वच्छता छै। स्वच्छताक माने रंगक रूपमे अछि जे मीठगरो आ सादो तँ अछिए। मीठगरक माने भेल जे दोष रहित अछि। मुदा मटियाह पहाड़सँ निकलल धारा अपन रंग पकड़बे करत। जइमे पंकपन आ गदपन सेहो रहिते छै, जे धरतीपर उतैर अमृत-मृत्तिकाक बीच जे धारा प्रवाहित होइए, तइ दुनूक रंग-रूपमे अन्तर भइये जाइए। किएक तँ हिमालय पहाड़पर जहिना वर्फक ढेर अछि तहिना माटियोक ढेर अछिए। तँए ओकरा दोषपूर्ण कहल जाए सेहो सोलहन्नी उचित नहियेँ हएत किने। खाएर...। ओइसँ ललित भायकेँ अखन कोन मतलब छैन। अपन पारिवारिक जिनगी छैन आ खेती जीवन-धार छैन, ओहीमे परिवारजन सभ-तूर उमैकतो छैथ आ नहा-सोना मन पवित्र सेहो बनैबते छैथ। पवित्र भेने जहिना सबहक मनमे तृप्ति अबैए तहिना ललितो भायकेँ अबिते छैन। तँए, अपनाकेँ जगल बुझिते छैथ। मुदा तृप्तियो तँ तृप्ति छी किने, जे स्थायी आ अस्थायी दुनू अछि। जे अस्थायी तृप्ति अछि ओकर वृद्धि रूकि जाइ छइ। खाएर, तृप्ति-अतृप्तिक बीच जे अछि से अछि मुदा छी तँ दुनू भैयारीए। एक समुद्रमे मिलैए, दोसर क्षणिक अछि। क्षणभंगुर जकाँ लगले ताड़क गाछपर आ लगले साहोरक गाछपर चढ़ैत-उतरैत खसितो-पड़ितो रहिते अछि। लगले ताड़क गाछपर चढ़ि हकबाहि करए लगैए आ लगले साहोरक गाछपर सँ 'साहोर-साहोर' सेहो करिते अछि। मुदा जेकरा स्थायी तृप्ति कहै छिऐ ओ क्षीर सागर होइत अलौकिक

सागरमे पहुँच जाइए।

जिनगीक शुरूहेमे ललित भायकेँ नवपनक रोग जहिना धेलकैन तहिना अखनो धेनहि छैन। नवपनक रोग भेल दैनंदिनक जिनगीमे किछु-ने-किछु नव उपार्जन करैक इच्छा। जँ से नहि तँ जिनगी या तँ ठमैक जाएत वा ऐगला हवाक झोंकक परिवेशमे पाछू ससैर जाएत। मुदा हवो तँ हबे छी, कखनो तेज गतिये चलि ठाढ़ो मनुक्खकेँ खसा दइए आ कखनो किछु ने बिगाड़ि पबैए। तहूमे मनुक्ख तँ अखज वंशक छीहे। जे, या तँ फेर उठि कऽ ठाढ़ भऽ जाइए वा केहनो हवाक झोंकमे अपन ठौर पकड़ने ठाढ़े रहैए।

एक तँ किसानी जीवन गुलाब फूलक गाछ जकाँ अछि जे डारियो छोड़ैए आ जड़िसँ गाछो छोड़िते अछि। जइसँ मात्र गाछेटा झमटगर नइ होइए बल्कि गाछक समूहे झमटगर बनि जाइए। तेहने अछि किसान आ किसानी जीवन। आ ओही परिवारक छैथ ललित भाय।

दस बर्ख पूर्व, जहिया ललित भाय जखन हाइ स्कूलमे प्रवेश केने छला तहियो मनमे यएह रहैन जे अपन भविस किसानी जिनगीमे अछि, किए तँ वंशगत अपन किसानी परिवार रहल अछि। दोसर जीविकाक जे साधन अछि ओ किसानोन्मुखी अछिए। किएक तँ कल-कारखानाक विकास दस सालक बीच जइ तेजीसँ रूप बदललक अछि ओ किसानी जिनगीक परिवेशे बदैल देलक अछि। ओना, अपन जिनगीक जे समृद्धताक कारक तत्त्व अछि ओइपर जहिना प्राकृतिक कुठाराघात भेल तहिना मानवीय कुठाराघात नै भेल सेहो नहियेँ कहल जा सकैए। दुनू दिससँ होइत रहल अछि। जहिना एक दिस धार-धुरसँ गामक-गाम नष्ट भेल आ ओइसँ जे गामवासीक गति भेल से तँ वएह ने नीक जकाँ बुझि रहल अछि। तहिना दोसर दिस महेशवाणीए आ नचारीए ने गबै छैथ..! खाएर जे

जेतए अछि से तेतए अछि। ललित भाय गाममे छैथ, जइ देने आइ धरि कोनो धार बहबे ने कएल अछि। ओना, बाढ़ि-बरखा होइते अछि। जखन ललित भाय असगरेमे बैइसै छैथ आ अपन बालपनक रूप देखै छैथ तखन ईहो मोन पड़िये जाइ छैन जे गामक स्कूलमे जखन छेलौं स्कूलक आगूमे जे फुलवारी छल तइमे पुबरिया-दछिनबरिया कोण परक कियारी हमरे छल, जइमे गेन्दा, गुलाब सभ लगबै छेलौं। ओ आइ परती मैदान बनि क्रिकेटक फील्ड बनि गेल अछि..!

भरलपर ने मन भरिआइए मुदा जरलपर तँ जड़िएबे करत। जखने मन जड़ियाएत तखने बोखार चढ़त आ जेना-जेना बोखारक ज्वर तेज हएत तेना-तेना ओ बकबे करत।

रेडियो, अखबार, पत्रिका सभमे सुर्जमुखी खेतीक चर्च जोर पकड़लक। जखन हवा बहै छै तखन घरमे रहू कि ओसारपर रहू, हवाक सिहकी वा झोंक लगबे करत, लगिते अछि। से ललितो भायकेँ लगलैन। प्रचारेक हवामे ललित भाय धँसि गेला। मुदा डुमै-ले नइ धँसला, हेलैले धँसला। भाय! के एहेन अभागल हएत जे पोखैरसँ धार होइत समुद्रमे नइ हेलए चाहत। ओहुना लोक जगरनाथपुरीक समुद्रक कातमे ढुसि-असनान करिते अछि। यएह छी शाब्दिक ज्ञान आ अनुभवात्मक ज्ञानक बीचक दूरी। ..दसकठबा चौमास जे ललित भाइक अपन दरबज्जाक आगूमे छैन, ओइमे सुर्जमुखीक खेती करैक विचार ललित भाय मनमे रोपलैन। खेती करैक विचारकेँ नीक जकाँ पत्रिको आ रेडियोओक माध्यमसँ सुनि-पढ़ि मन सक्कत बनाइये नेने छला। समस्तीपुर फार्मसँ बीआ आनि नियत समयपर खेती करैक जोगार ललित भाय केलैन। ओना, समयमे किछु ढीलपन छेलइ। ढीलपन ई जे वसन्तक आगमनक बीस दिनक पछातियो खेतीक अनुकूल मौसम नहि बनि पएल

छेलइ।

शिवरात्रिक प्रात। आइ ललित भाय सुर्जमुखीक खेती करता। माने बीआ माटिमे देथिन। खादक संग कीटनाशी दबाइ खेतमे मिला चुकल छला। खुरपीसँ अपने रोपता। किए तँ गाममे बोनिहार रहितो काजक अनुभवी नइ अछि। केतेक माटिक तरमे बीआ पड़त आ केतेक दूरीपर पाँत लगौल जाएत से ललित भाय किताबसँ सीखि नेने छला। दोसर कियो करताइत रहबे ने केलैन। काल्हि साँझूए पहर ललित भाय कहलैन-

“बौआ किसुन, काल्हि नव काज लऽ कऽ नव किसानक रूपमे अवतरित हएब।”

पुछलयैन-

“से की यौ भाय?”

ललित भाय कहलैन-

“बीस सालक अपन किसानी जीवनमे सेरसो-तोर आ तोरीसँ आगू तेलहनमे नइ बढ़ल छेलौं, मुदा ऐबेर दस कट्ठा सुर्जमुखीक खेती करब।”

सुर्जमुखीक खेती तँ कहियो ने केने रही मुदा तैयो जहिना गीत-गाइनक पलङ्गाइ होइए तहिना बजलौं-

“भाय, शुद्ध सेरसो-तोरक जे तेल होइए तहूसँ बेसी पौष्टिक सुर्जमुखीक तेल होइए। तेतबे नहि, तोर-तोरीसँ सुर्जमुखीक उपजो बेसी होइए आ दानामे तेलक मात्रा सेहो सेरसो-तोरीसँ बेसी होइए।”

हमर बात ललित भाय कोन काने सुनलैन से तँ ललित भाय जानैथ मुदा बुझि पड़ल जे अपन काजक प्रशंसे सुनि रहल छला तँए मन भीतरे-भीतर खुशी होइते छेलैन।

दोसर दिन भोरे ललिते भाय मोन पड़ला। अबैले कहने छैथ। सात बजेसँ काजमे हाथ लगेता। जाएब अछि। मुदा लगले मन मनाही केलक जे केकरो काज करैक काल महाकाल छी, तँए ओइठाम जा काजमे बाधा उपस्थित करब नीक नहि। अपना लूरिये की अछि जे घन्टो-दू-घन्टा रोपैमे मदतिये करबैन। नीक हएत जे साँझू-पहर घुमै-फिरै बेरमे जाएब आ रोपलकेँ देखब।

मास दिन बीत गेल। बीत-बीत भरिक गाछ भऽ गेल। ढकनाएल पातसँ खेत लह-लहा उठल। ओना, एते सतरकी ललित भाय केनहि छला जे जखने गाछ जनैम कऽ धरियाए लगल तखने दड़ी सभकेँ नीक जकाँ देखि खोभि नेने छला। तँए कोनो पतिआनीमे एक्को गाछक कमी नहि भेल।

पहिल पटौनी कऽ लेलैन। खेतक उपजाक ओहन रूखि बनि गेल जे साक्षात् लक्ष्मीक वासभूमि बनि रहल छैन।

दू मास बीतैत-बीतैत सौंसे खेतक गाछ भकरार भऽ फुला गेल। मुदा वाह रे हम सभ..! जहिना भोला बाबाकेँ भाँग-धथुरसँ पूजा करै छी तहिना सुर्जमुखी फूलो तँ छीहे। ओतेटा फूल कोन देवताक चानिपर अँटतैन! तँए छोड़िये देब नीक। दानासँ फूल भरए लगल। ललित भाय नियमित लोक छथिए। तहूमे गीताक बात सेहो मानिते छैथ जे मनुक्ख कर्मे तकक भागी अछि। पछाइत ओकर हिस्सा कटि जाइ छइ। तँए साँझ-भोर दू बेर नित्य खेतक चारू आड़ि घुमि-फीरि देखबे करै छैथ।

मिथिलांचलक के कहए जे सौंसे दुनियाँक सुग्गाक आगमन खेतमे भऽ गेल! सुग्गाक उपद्रव ललित भाय देखि रहल छला। मुदा उपाय नइ सुझि रहल छेलैन। हमरा देखिते बजला-

“किसुन, आशापर पानि फेर गेल..!”

पुछलयैन- “से की भाय?”

ललित भाय बजला-

“एक्को कनमा दाना नइ हएत, सभटा सुग्गा खा गेल!”

बजलौं-

“किनकोसँ पुछि नइ नेने छेलिऐन?”

सुखाएल मुहेँ ललित भाय बजला-

“किताबेक बातमे रहि गेलौं। नइ बुझि पेलिऐ।”



शब्द संख्या : 2047, तिथि : 9 मार्च 2018

ई कथा-

‘आशापर पानि फेर गेल’

सगर राति दीप जरय- 97म कथा गोष्ठीकेँ

समर्पित

# जगदीश प्रसाद मण्डलजीक 'पंगु' उपन्यासक बादक गद्य लेखन-क्रम:

----------.

पंगु- (उपन्यास) लेखन तिथि: 11 मई 2018 सँ 6 जून 2018

749. ठका गेलौं- शब्द संख्या: 2052, तिथि: 18 जून 2018

750. हारि-जीत- शब्द संख्या: 3190, तिथि: 24 जून 2018

751. पनचैती पनपना गेल- शब्द संख्या: 1095, तिथि: 27 जून 2018

752. कुघाटक मृत्यु- शब्द संख्या: 1608, तिथि: 01 जुलाई 2018

753. एक तम्मा सिदहा- शब्द संख्या: 2014, तिथि: 5 जुलाई 2018

754. कियो ने पुछैए- शब्द संख्या: 1584, तिथि: 9 जुलाई 2018

755. केकरो कियो ने- शब्द संख्या: 718, तिथि: 11 जुलाई 2018

756. गपक पियाहुल लोक- शब्द संख्या: 1420, तिथि: 13 जुलाई 2018

757. उदय-प्रलय- शब्द संख्या: 1574, तिथि: 15 जुलाई 2018

758. हमरा नीक नहि लगैए- शब्द संख्या: 1458, तिथि: 19 जुलाई 2018

759. भारीपन भार बनि गेल- शब्द संख्या: 1471, तिथि: 21 जुलाई 2018

760. मानसरोवरक यात्रा- शब्द संख्या: 2576, तिथि: 31 जुलाई 2018

761. करतब- शब्द संख्या: 2132, तिथि: 04 अगस्त 2018

762. आमक गाछी- एक : शब्द संख्या: 3068, तिथि: 10 अगस्त 2018

763. आमक गाछी- दू : शब्द संख्या: 3553, तिथि: 17 अगस्त 2018

764. आमक गाछी- तीन : शब्द संख्या: 2484, तिथि: 22 अगस्त 2018

765. आमक गाछी- चारि : शब्द संख्या: 2291, तिथि: 28 अगस्त 2018

766. आमक गाछी- पाँच : शब्द संख्या: 2185, तिथि: 02 सितम्बर 2018

767. आमक गाछी- छह : शब्द संख्या: 4701, चोरा चान 12 सितम्बर 2018

768. आमक गाछी- सात : शब्द संख्या: 1805, तिथि: 15 सितम्बर 2018

769. अनचोकक अन्हार- शब्द संख्या: 924, तिथि: 19 सितम्बर 2018

770. आमक गाछी, आठ- शब्द संख्या: 1917, तिथि: 25 सितम्बर 2018

771. अपन बुधियारी अपने खेलक- शब्द संख्या: 1897, ति.: 23 सितम्बर 2018

772. आमक गाछी, नअ- शब्द संख्या: 1914, तिथि: 30 सितम्बर 2018

773. चटवाह- शब्द संख्या- 2134, तिथि: 4 अक्टूबर 2018

774. भगैतिया- शब्द संख्या: 2177, तिथि: 8 अक्टूबर 2018

775. अधमरू साँपक फुफकार- शब्द संख्या: 2196, तिथि: 12 अक्टूबर 2018

776. यादास्त- शब्द संख्या: 1870, तिथि: 15 अक्टूबर 2018

777. हमर मेला चोरि भऽ गेल- शब्द संख्या: 2062, तिथि: 19 अक्टूबर 2018

778. गरदैन हलैल गेल- शब्द संख्या: 1922, तिथि: 23 अक्टूबर 2018

779. दिवालीक दीप- शब्द संख्या: 2422, तिथि: 29 अक्टूबर 2018

780. हारि केना मानब- शब्द संख्या: 2054, तिथि: 02 नवम्बर 2018

781. अप्पन गाम- शब्द संख्या: 1940, तिथि: 06 नवम्बर 2018

782. परिछन- शब्द संख्या: 2661, तिथि: 11 नवम्बर 2018

783. झूठ सपना- शब्द संख्या: 2062, तिथि: 15 नवम्बर 2018

784. जिनगीक अन्तिम फल- शब्द संख्या: 2530, तिथि: 19 नवम्बर 2018

785. चरणबाबूक टैक्सी- शब्द संख्या: 2381, तिथि: 24 नवम्बर 2018

786. पुस्तकालय- शब्द संख्या: 2333, तिथि: 29 नवम्बर 2018

787. विचारभेद- शब्द संख्या: 2553, तिथि: 04 दिसम्बर 2018

788. एकरवा बानर- शब्द संख्या: 2793, तिथि: 09 दिसम्बर 2018

789. फकीरबा स्थान- शब्द संख्या: 2759, तिथि: 14 दिसम्बर 2018

790. रंगमे भंग- शब्द संख्या: 2237, तिथि: 20 दिसम्बर 2018

791. खिलतोड़ भूमि- शब्द संख्या: 2590, तिथि: 17 जनवरी 2019

792. बैगनक बगान बनरा गेल, तूँ मुँह तकै छह- श. 2590, ति. 22 जनवरी 2019

793. मटरक अजोह दाना- शब्द संख्या: 3473, तिथि: 03 फरवरी 2019

794. फुइसिक रग्गड़- शब्द संख्या: 2225, तिथि: 07 फरवरी 2019

795. उखमज- शब्द संख्या: 3964, तिथि: 16 फरवरी 2019

796. एकभग्गू बेटा- शब्द संख्या: 2286, तिथि: 19 फरवरी 2019

797. अगुताइ भेल- शब्द संख्या: 1054, तिथि: 22 फरवरी 2019

798. थैंक्यू पापा- शब्द संख्या: 965, तिथि: 24 फरवरी 2019

799. किसुनपुराक हाट- शब्द संख्या: 995, तिथि: 25 फरवरी 2019

800. धनखेतीक बैगन- शब्द संख्या: 1051, तिथि: 28 फरवरी 2019

801. चितवनक शिकार- शब्द संख्या: 1071, तिथि: 02 मार्च 2019

802. बुढ़ भेलौं तँ दुइर गेलौं- शब्द संख्या: 1086, तिथि: 04 मार्च 2019

803. धुआ साड़ी- शब्द संख्या: 1132, तिथि: 06 मार्च 2019

804. राजरोग- शब्द संख्या: 1274, तिथि: 10 मार्च 2019

805. संकल्प- शब्द संख्या: 1520, तिथि: 12 मार्च 2019

806. एकटा नमहर दुख मेटा गेल- शब्द संख्या: 1349, तिथि: 15 मार्च 2019

807. काजक मोल- शब्द संख्या: 1090, तिथि: 16 मार्च 2019

808. एतए बसव कठिन अछि- शब्द संख्या: 1010, तिथि: 19 मार्च 2019

809. स्वनिर्मित जिनगी- शब्द संख्या: 1091, तिथि: 22 मार्च 2019

810. कपटलालक मृत्यु- शब्द संख्या: 987, तिथि: 25 मार्च 2019

811. गामक ढहल समाज- शब्द संख्या: 966, तिथि: 27 मार्च 2019

812. लजगर लोक- शब्द संख्या: 1003, तिथि: 29 मार्च 2019

813. खरिहाँन उपैट गेल- शब्द संख्या: 1218, तिथि: 02 अप्रैल 2019

814. पगलपन- शब्द संख्या: 1113, तिथि: 04 अप्रैल 2019

815. छलाननक सराध- शब्द संख्या: 996, तिथि: 06 अप्रैल 2019

816. छाती बज्जर केलौं- शब्द संख्या: 1402, तिथि: 08 अप्रैल 2019

817. नाँहकमे दोख- शब्द संख्या: 1463, तिथि: 16 अप्रैल 2019

818. सग्गा पिऔज- शब्द संख्या: 1530, तिथि: 20 अप्रैल 2019

819. गाछसँ नमहर फड़- शब्द संख्या: 1003, तिथि: 22 अप्रैल 2019

820. जिनगीमे जान आएल- शब्द संख्या: 1198, तिथि: 25 अप्रैल 2019

821. जे संग नइ औत ओकरा संग नइ जेबै- श.सं.: 1080, ति.: 26 अप्रैल 2019

822. चौरस खेतक चौरस उपज- शब्द संख्या: 998, तिथि: 29 अप्रैल 2019

823. सिकिया नेता- शब्द संख्या: 1023, तिथि: मजदूर दिवस, 2019

824. मुँह खुजिते नाक कटि गेल- शब्द संख्या: 1475, तिथि: 04 मई 2019

825. जेकरे भर तेकरे डर- शब्द संख्या: 1214, तिथि: 06 मई 2019

826. ललियाएल चेहरा करियाएल मन- शब्द संख्या: 1194, तिथि: 09 मई 2019

827. पुरुखक भर- शब्द संख्या: 1109, तिथि: 12 मई 2019

828. भकमोड़मे पड़ि गेलौं- शब्द संख्या: 1411, तिथि: 15 मई 2019

829. अपन इमान मरि गेल- शब्द संख्या: 1071, तिथि: 17 मई 2019

830. गामक रूप बदैल देब- शब्द संख्या: 1004, तिथि: 19 मई 2019

831. कुभेला- शब्द संख्या: 992, तिथि: 21 मई 2019

832. देखौंस- शब्द संख्या: 945, तिथि: 23 मई 2019

833. समयसँ पहिने चेत किसान- शब्द संख्या: 1326, तिथि: 25 मई 2019

834. काजक मेहपन- शब्द संख्या: 947, तिथि: 27 मई 2019

835. पनरह किलोक कदीमा- शब्द संख्या: 941, तिथि: 29 मई 2019

836. फेर नढ़रो बेल तर जेती- शब्द संख्या: 1553, तिथि: 01 जून 2019

837. काजक धुनि- शब्द संख्या: 1065, तिथि: 03 जून 2019

838. सोरहामे सुर्रा लगि गेल- शब्द संख्या: 1618, तिथि: 06 जून 2019

839. अगराही- शब्द संख्या: 944, तिथि: 08 जून 2019

840. जेकरे-ले चोरि केलौं सएह कहैए चोरा- श.सं.: 1556, तिथि: 11 जून 2019

841. भौक- शब्द संख्या: 1403, तिथि: 14 जून 2019

842. मनतरक पावर- शब्द संख्या: 1598, तिथि: 17 जून 2019

843. हाल-चाल- शब्द संख्या: 1519, तिथि: 20 जून 2019

844. अधमरु साँपक डँस- शब्द संख्या: 1525, तिथि: 23 जून 2019

845. के मानत?- शब्द संख्या: 1721, तिथि: 29 जून 2019

846. दियादीक फेड़- शब्द संख्या: 1412, तिथि: 03 जुलाई 2019

847. वाह रे आदत- शब्द संख्या: 1455, तिथि: 06 जुलाई 2019

848. कटबी सुइद- शब्द संख्या: 1435, तिथि: 09 जुलाई 2019

849. तिलकौआ छत्ता- शब्द संख्या: 1948, तिथि: 13 जुलाई 2019

850. अपने जिनगी भार बनि गेल- शब्द संख्या: 1539, तिथि: 16 जुलाई 2019

851. कलेश- शब्द संख्या: 1509, तिथि: 20 जुलाई 2019

852. गामक आशा टुटि गेल- शब्द संख्या: 2338, तिथि: 24 जुलाई 2019

853. आब इज्जत नइ बँचत- शब्द संख्या: 2046, तिथि: 28 जुलाई 2019

854. अँगनाक बीरार- शब्द संख्या: 1856, तिथि: 31 जुलाई 2019

855. भेँट-घाँट- शब्द संख्या: 1884, तिथि: 03 अगस्त 2019

856. कोसा- शब्द संख्या: 1999, तिथि: 07 अगस्त 2019

857. दहेजक गाए- शब्द संख्या: 2076, तिथि: 15 अगस्त 2019

858. चलती- शब्द संख्या: 1770, तिथि: 18 अगस्त 2019

859. तीन बुड़िवान- शब्द संख्या: 1901, तिथि: 21 अगस्त 2019

860. एकाधिकारी जाति- शब्द संख्या: 2198, तिथि: 24 अगस्त 2019

861. अपन करखन्ना- शब्द संख्या: 1704, तिथि: 28 अगस्त 2019

862. लड़कपन- शब्द संख्या: 2150, तिथि: 03 अक्टूबर 2019

863. कुदृष्टि- शब्द संख्या: 2435, तिथि: 08 अक्टूबर 2019

864. हकार- शब्द संख्या: 2012, तिथि: 16 अक्टूबर 2019

865. दलखिच्चड़मे घी- शब्द संख्या: 2286, तिथि: 25 अक्टूबर 2019

866. दोहरी दहार- शब्द संख्या: 2154, तिथि: 02 नवम्बर 2019

867. पसेनाक मोल- शब्द संख्या: 1748, तिथि: 06 नवम्बर 2019

868. बुढ़ापा- शब्द संख्या: 2122, तिथि: 10 नवम्बर 2019

869. पुरना घराड़ी- शब्द संख्या: 2092, तिथि: 14 नवम्बर 2019

870. जगरनथिया भोज- शब्द संख्या: 2416, तिथि: 18 नवम्बर 2019

871. कृषियोग- शब्द संख्या- शब्द संख्या: 2010, तिथि: 22 नवम्बर 2019

872. काजक रोप- शब्द संख्या: 2679, तिथि: 21 दिसम्बर 2019

873. खटसमाद- शब्द संख्या: 2909, तिथि: 27 दिसम्बर 2019

874. जीबठपन- शब्द संख्या: 2577, तिथि: 02 जनवरी 2020

875. गोटी लाल- शब्द संख्या: 2364, तिथि: 06 जनवरी 2020

876. अपनाकेँ चिन्हैत चलिहह- शब्द संख्या: 2361, तिथि: 11 जनवरी 2020

877. दहेज- शब्द संख्या: 2431, तिथि: 15 जनवरी 2020

878. जेहेन मति तेहेन गति- शब्द संख्या: 2630, तिथि: 21 जनवरी 2020

879. केते लग केते दूर- शब्द संख्या: 2660, तिथि: 31 जनवरी 2020

880. अपन कर्तव्य आकि उपकार- शब्द संख्या: 2410, तिथि: 05 फरवरी 2020

881. जिनगी भौर भेलह हेन- शब्द संख्या: 2789, तिथि: 10 फरवरी 2020

882. वसन्त पंचमी- शब्द संख्या: 2767, तिथि: 16 फरवरी 2020

883. चुटका सुतरल- शब्द संख्या: 2445, तिथि: 21 फरवरी 2020

884. हारल चेहरा जीतल रूप- शब्द संख्या: 2255, तिथि: 25 फरवरी 2020

885. अग्नि परीछा- शब्द संख्या: 3097, तिथि: 01 मार्च 2020

886. आसीरवचन- शब्द संख्या: 2564, तिथि: 06 मार्च 2020

887. दहिबरी- शब्द संख्या: 2560, तिथि: 12 मार्च 2020

888. सघन बन- शब्द संख्या: 2697, तिथि: 17 मार्च 2020

889. हुसैत लोक- शब्द संख्या: 2602, तिथि: 23 मार्च 2020

890. हुसि गेलौं- शब्द संख्या: 2574, तिथि: 28 मार्च 2020

891. झूठक झालि- शब्द संख्या: 2352, तिथि: 01 अप्रैल 2020

892. दुष्टपन- शब्द संख्या: 2317, तिथि: 06 अप्रैल 2020

893. रहै जोकर परिवार- शब्द संख्या: 2297, तिथि: 15 अप्रैल 2020

894. परिपक्व निरलज- शब्द संख्या: 2232, तिथि: 20 अप्रैल 2020

895. अप्पन काज अपने चिन्हू- शब्द संख्या: 2278, तिथि: 24 अप्रैल 2020

896. लजाउ काज- शब्द संख्या: 2394, तिथि: 02 मई 2020

897. सुचिता- एक : शब्द संख्या: 4352, तिथि: 30 मई 2020

898. सुचिता- दू : शब्द संख्या: 4459, तिथि: 08 जून 2020

899. सुचिता- तीन : शब्द संख्या: 4672, तिथि: 15 जून 2020

900. सुचिता- चारि : शब्द संख्या: 4022, तिथि: 02 जुलाई 2020

901. सुचिता- पाँच : शब्द संख्या: 2757, तिथि: 08 जुलाई 2020

902. सुचिता- छह : शब्द संख्या: 3188, तिथि: 14 जुलाई 2020

903. सुचिता- सात : शब्द संख्या: 4483, तिथि: 24 जुलाई 2020

904. सीमावद्ध जीवन- शब्द संख्या: 2420, तिथि: 01 अगस्त 2020

905. कर्ताक रंग कर्मक संग- शब्द संख्या: 2757, तिथि: 06 अगस्त 2020

906. जिनगीक हिसाब- शब्द संख्या: 2711, तिथि: 11 अगस्त 2020

907. अपना जनैत- शब्द संख्या: 2881, तिथि: 16 अगस्त 2020

908. सुद्दढ़ जिनगी- शब्द संख्या: 3460, तिथि: 23 अगस्त 2020

908. मुराम जगह- शब्द संख्या: 3575, तिथि: 31 अगस्त 2020

909. गामक सूरत बदैल गेल : शब्द संख्या: 3340, तिथि: 07 सितम्बर 2020

910. दोसर रस्ता नहि- शब्द संख्या: 2808, तिथि: 13 सितम्बर 2020

911. विचारधाराक भथान- शब्द संख्या: 2659, तिथि: 19 सितम्बर 2020

912. परिवार बिलैट गेल- शब्द संख्या: 3132, तिथि: 26 सितम्बर 2020

913. अनचोकक इजोत- शब्द संख्या: 3339, तिथि: 03 अक्टूबर 2020

914. केलहा सभ पानिमे गेल- शब्द संख्या: 3199, तिथि: 09 अक्टूबर 2020

915. पएर तरक धरती डोलि गेल- शब्द संख्या: 2346, तिथि: 15 अक्टूबर 2020

916. जबुरिया कागज- शब्द संख्या: 3366, तिथि: 22 अक्टूबर 2020

917. बेटाक बिआह- शब्द संख्या: 3734, तिथि: 30 अक्टूबर 2020

918. जीवनमे जान आएल- शब्द संख्या: 3325, तिथि: 06 नवम्बर 2020

919. पोसलाक फल- शब्द संख्या: 3039, तिथि: 12 नवम्बर 2020

920. अन्तिम परीक्षा- शब्द संख्या: 2933, तिथि: 18 नवम्बर 2020

921. गाम आब ओ गाम रहल! - शब्द संख्या: 3038, तिथि: 24 नवम्बर 2020

922. जिनकर जीत तिनकर माला- शब्द सं.: 3025, तिथि: 30 नवम्बर 2020

923. नवका लोक : शब्द संख्या- 3215, तिथि: 06 दिसम्बर 2020

924. काजक उत्तर काज- शब्द संख्या: 3366, तिथि: 12 दिसम्बर 2020

925. घरक खर्च- शब्द संख्या: 3731, तिथि: 19 दिसम्बर 2020

926. समाजक भागे- शब्द संख्या: 3338, तिथि: 25 दिसम्बर 2020

927. बाबा हाथक कोदारि हल्लुक- शब्द संख्या: 4091, तिथि: 02 जनवरी 2021

928. परिवारक विघटन- शब्द संख्या: 2143, तिथि: 07 जनवरी 2021

929. हारल विचार- शब्द संख्या: 3657, तिथि: 14 जनवरी 2021

930. मोड़पर- एक : शब्द संख्या: 4422, तिथि: 25 जनवरी 2021

931. मोड़पर- दू : शब्द संख्या: 3734, तिथि: 01 फरवरी 2021

932. मोड़पर- तीन : शब्द संख्या: 3157, तिथि: 08 फरवरी 2021

933. मोड़पर- चारि : शब्द संख्या: 4844, तिथि: 19 फरवरी 2021

934. मोड़पर- पाँच : शब्द संख्या: 6382, तिथि: 06 मार्च 2021

935. मोड़पर- छह : शब्द संख्या: 2150, तिथि: 10 मार्च 2021

936. मोड़पर- सात : शब्द संख्या: 788, तिथि: 11 मार्च 2021

937. मोड़पर- आठ : शब्द संख्या: 927, तिथि: 12 मार्च 2021

938. मोड़पर- नअ : शब्द संख्या: 1127, तिथि: 14 मार्च 2021

939. मोड़पर- दस : शब्द संख्या: 585, तिथि: 15 मार्च 2021

940. मोड़पर- एगारह : शब्द संख्या: 265, तिथि: 16 मार्च 2021

941. संकल्प- एक : शब्द संख्या: 2988, तिथि: 25 मार्च 2021

942. संकल्प- दू : शब्द संख्या: 1903, तिथि: 29 मार्च 2021

943. संकल्प- तीन : शब्द संख्या: 3101, तिथि: 04 अप्रैल 2021

944. संकल्प- चारि : शब्द संख्या: 3197, तिथि: 10 अप्रैल 2021

945. संकल्प- पाँच : शब्द संख्या: 3202, तिथि: 17 अप्रैल 2021

946. संकल्प- छह : शब्द संख्या: 2026, तिथि: 21 अप्रैल 2021

947. संकल्प- सात : शब्द संख्या: 3139, तिथि: 29 अप्रैल 2021

948. संकल्प- आठ : शब्द संख्या: 2440, तिथि: 04 मई 2021

949. संकल्प- नअ : शब्द संख्या: 2368, तिथि: 08 मई 2021

950. संकल्प- दस : शब्द संख्या: 3977, तिथि: 15 मई 2021

951. अन्तिम क्षण- एक : शब्द संख्या: 2874, तिथि: 20 मई 2021

952. अन्तिम क्षण- दू : शब्द संख्या: 6126, तिथि: 04 जून 2021

953. अन्तिम क्षण- तीन : शब्द संख्या: 3669, तिथि: 12 जून 2021

954. अन्तिम क्षण- चारि : शब्द संख्या: 5817, तिथि: 24 जून 2021

955. अन्तिम क्षण- पाँच : शब्द संख्या: 4916, तिथि: 04 जुलाई 2021

956. परिवारे गजपटा गेल : शब्द संख्या: 1881, तिथि: 09 जुलाई 2021

957. समयक थपेड़मे- शब्द संख्या: 1798, तिथि: 14 जुलाई 2021

958. की सत्त की फुइस?- शब्द संख्या: 1793, तिथि: 17 जुलाई 2021

959. कुभाँज समयक भाँजमे- शब्द संख्या: 1671, तिथि: 21 जुलाई 2021

960. देखल गाम- शब्द संख्या: 1737, तिथि: 25 जुलाई 2021

961. अपना ले- शब्द संख्या: 1903, तिथि: 03 अगस्त 2021

962. तीन धक्का- शब्द संख्या: 1759, तिथि: 06 अगस्त 2021

963. अजीब खेल- शब्द संख्या: 2362, तिथि: 20 अगस्त 2021

964. नीक ठकान ठकेलौं- शब्द संख्या: 2798, तिथि: 25 अगस्त 2021

965. केकरो भरोस- शब्द संख्या: 2237, तिथि: 31 अगस्त 2021

966. बाड़ी भेल धनहर- शब्द संख्या: 1820, तिथि: 04 सितम्बर 2021

967. कुण्ठा- एक : शब्द संख्या: 2284, तिथि: 15 सितम्बर 2021

968. कुण्ठा- दू : शब्द संख्या: 2150, तिथि: 23 सितम्बर 2021

969. कुण्ठा- तीन : शब्द संख्या: 1324, तिथि: 29 सितम्बर 2021

970. कुण्ठा- चारि : शब्द संख्या: 4458, तिथि: 10 अक्टूबर 2021

971. कुण्ठा- पाँच : शब्द संख्या: 2673, तिथि: 18 अक्टूबर 2021

972. कुण्ठा- छह : शब्द संख्या: 2852, तिथि: 24 अक्टूबर 2021

973. कुण्ठा- सात : शब्द संख्या: 1901, तिथि: 18 अक्टूबर 2021

974. कुण्ठा- आठ : शब्द संख्या: 1948, तिथि: 01 नवम्बर 2021

975. कुण्ठा- नअ : शब्द संख्या: 1901, तिथि: 05 नवम्बर 2021

976. कुण्ठा- दस : शब्द संख्या: 2022, तिथि: 09 नवम्बर 2021

977. सुदृढ़ जीवन- शब्द संख्या: 2587, तिथि: 14 नवम्बर 2021

978. सागवानक बागवानी- शब्द संख्या: 2369, तिथि: 05 दिसम्बर 2021

979. बिनु खुट्टाक गाए- शब्द संख्या: 2191, तिथि: 10 दिसम्बर 2021

980. जीवनक कर्म जीवनक मर्म- शब्द संख्या: 2893, तिथि: 16 दिसम्बर 2021

981. घरैया मूस- शब्द संख्या: 2791, तिथि: 22 दिसम्बर 2021

982. टुटि कऽ खसि पड़लैन- शब्द संख्या: 2182, तिथि: 29 दिसम्बर 2021

983. मृत्युसजियापर पड़ल विवेक बाबा- शब्द सं.: 2294, ति. : 03 जनवरी 2022

984. संचरण- शब्द संख्या: 2477, तिथि: 08 जनवरी 2022

985. जिनगीसँ प्रेम- शब्द संख्या: 2278, तिथि: 14 जनवरी 2022

986. परिवारे बगैद गेल- शब्द संख्या: 2299, तिथि: 21 फरवरी 2022

987. जिनगी पिछैड़ गेल- शब्द संख्या: 2859, तिथि: 02 मार्च 2022

988. श्रमहीन- शब्द संख्या: 3105, तिथि: 08 मार्च 2022

989. समुद्रलंघन- शब्द संख्या: 3274, तिथि: 21 मार्च 2022

990. परिवारक भार- शब्द संख्या: 2402, तिथि: 28 मार्च 2022

991. हीन-हीनाइत विवेक- शब्द संख्या: 2347, तिथि: 02 अप्रैल 2022

992. चेहराक निखार- शब्द संख्या: 2496, तिथि: 06 अप्रैल 2022

993. भरि मन काज- शब्द संख्या: 2281, तिथि: 12 अप्रैल 2022
994. विचारे मरि गेल- शब्द संख्या: 2302, तिथि: 21 अप्रैल 2022
995. मृत्युक भय मेटा गेल- शब्द संख्या: 2536, तिथि: 26 अप्रैल 2022
996. घरक बात- शब्द संख्या: 2686, तिथि: 01 मई (मजदूर दिवस) 2022
997. अप्पन दलान- शब्द संख्या: 2480, तिथि: 06 मई 2022
998. कंजूसपन- शब्द संख्या: 2589, तिथि: 11 मई 2022
999. आएल आशा चलि गेल- शब्द संख्या: 1478, तिथि: 15 मई 2022
1000. अकारण- शब्द संख्या: 1918, तिथि: 18 मई 2022
1001. अछोप- शब्द संख्या: 1590, तिथि: 21 मई 2022
1002. अप्पन बेइमानी- शब्द संख्या: 1560, तिथि: 24 मई 2022
1003. उनटन- शब्द संख्या: 1581, तिथि: 24 मई 2022
1004. अर्द्धांगिनी- शब्द संख्या: 1511, तिथि: 30 मई 2022
995. बहवाँइर- शब्द संख्या: 1538, तिथि: 04 जून 2022
1006. पाक मास्टर- शब्द संख्या: 1387, तिथि: 07 जून 2022
1007. साइंस टीचर- शब्द संख्या: 1301, तिथि: 10 जून 2022
1008. इज्जत लऽ लेलक- शब्द संख्या: 1367, तिथि: 13 जून 2022
1009. निसगर पान- शब्द संख्या: 1346, तिथि: 15 जून 2022
1010. विरोध- शब्द संख्या: 1452, तिथि: 19 जून 2022
1011. जीवन दान- शब्द संख्या: 1405, तिथि: 26 जून 2022
1012. बाग-बगिया- शब्द संख्या: 1272, तिथि: 30 जून 2022
1013. विश्वास पात्र- शब्द संख्या: 1374, तिथि: 02 जुलाई 2022
1014. विचारक टिटकारी- शब्द संख्या: 1335, तिथि: 05 जुलाई 2022
1015. लत- शब्द संख्या: 1375, तिथि: 08 जुलाई 2022
1016. जीवन खटाइमे पड़ि गेल- शब्द संख्या: 1220, तिथि: 11 जुलाई 2022
1017. कर्ज- शब्द संख्या: 1256, तिथि: 13 जुलाई 2022
1018. बहादुरी- शब्द संख्या: 1268, तिथि: 16 जुलाई 2022
1019. हमरो खगता छै- शब्द संख्या: 1178, तिथि: 20 जुलाई 2022
1020. सपना- शब्द संख्या: 1241, तिथि: 23 जुलाई 2022

1021. संगे-संग एलौं संगिया मरि गेल हम भुतिआइ छी- श.: 1303, 26.7.2022

1022. उवाणि- शब्द संख्या: 1264, तिथि: 29 जुलाई 2022

1023. विचारक प्रबलता- शब्द संख्या: 1268, तिथि: 01 अगस्त 2022

1024. अपन रचित रचना- शब्द संख्या: 1481, तिथि: 07 अगस्त 2022

1025. थाहल संगी- शब्द संख्या: 1331, तिथि: 10 अगस्त 2022

1026. आत्मबल- शब्द संख्या: 1267, तिथि: 13 अगस्त 2022

1027. विश्वासहीन- शब्द संख्या: 1405, तिथि: 16 अगस्त 2022

1028. बुलन्दी- शब्द संख्या: 1329, तिथि: 19 अगस्त 2022

1029. अप्पन साती- शब्द संख्या: 1287, तिथि: 22 अगस्त 2022

1030. खिच्चड़ि- शब्द संख्या: 1624, तिथि: 26 अगस्त 2022

1031. भंगतराह कवि- शब्द संख्या: 1364, तिथि: 01 सितम्बर 2022

1032. भंगतराह कवि- शब्द संख्या: 1357, तिथि: 01 सितम्बर 2022

1033. कनियेँ-मनियेँ पूँजी- शब्द संख्या: 1315, तिथि: शिक्षक दिवस 2022

1034. पुरुखढौह- शब्द संख्या: 1263, तिथि: 08 सितम्बर 2022

1035. सिमानक झगड़ा- शब्द संख्या: 1232, तिथि: 13 सितम्बर 2022

1036. जिनगी भार बनि गेल- शब्द संख्या: 1312, तिथि: 16 सितम्बर 2022

1037. परिवारक योग- शब्द संख्या: 1295, तिथि: 19 सितम्बर 2022

1038. मनुक्ख खौक- शब्द संख्या: 1183, तिथि: 25 सितम्बर 2022

1039. साहित्यकारक विवेक- शब्द संख्या: 1141, तिथि: 28 सितम्बर 2022

1040. भाषाक बेथा- शब्द संख्या: 1231, तिथि: 01 अक्टूबर 2022

1041. बुझबे ने केलिऐ- शब्द संख्या: 1227, तिथि: 05 अक्टूबर 2022

1042. जीवनक सम्बन्ध- शब्द संख्या: 1187, तिथि: 08 अक्टूबर 2022

1043. गैंचाह लोक- शब्द संख्या: 1113, तिथि: 11 अक्टूबर 2022

1044. जिनगीकेँ पटैक भगलौं- शब्द संख्या: 1258, तिथि: 14 अक्टूबर 2022

1045. अन्तिम आशा- शब्द संख्या: 1365, तिथि: 17 अक्टूबर 2022

1046. गजपट मारि- शब्द संख्या: 1327, तिथि: 20 अक्टूबर 2022

1047. कन्हजोड़- शब्द संख्या: 1346, तिथि: 23 अक्टूबर 2022

1048. अनहोनी- शब्द संख्या: 1308, तिथि: 26 अक्टूबर 2022

1049. होनी- शब्द संख्या: 1236, तिथि: 29 अक्टूबर 2022

1050. भवितव्य- शब्द संख्या: 1130, तिथि: 02 नवम्बर 2022

1051. ओसचट बीमारी : शब्द संख्या: 1260, तिथि: 05 नवम्बर 2022

1052. पुत्र परीक्षा : शब्द संख्या: 1286, तिथि: 09 नवम्बर 2022

1053. अप्पन मन बुझाएब- शब्द संख्या: 1294, तिथि: 12 नवम्बर 2022

1054. जड़ौर- शब्द संख्या: 1304, तिथि: 15 नवम्बर 2022

1055. अलोपित- शब्द संख्या: 1360, तिथि: 18 नवम्बर 2022

1046. कुमहरक बतिया- शब्द संख्या: 1240, तिथि: 21 नवम्बर 2022

1057. सिमानक आड़ि- शब्द संख्या: 1289, तिथि: 26 नवम्बर 2022

1058. नब बनक नब फल- शब्द संख्या: 1412, तिथि: 30 नवम्बर 2022

1059. सुमारक- शब्द संख्या: 1246, तिथि: 04 दिसम्बर 2022

1060. अन्तिम भेँट- शब्द संख्या: 1277, तिथि: 08 दिसम्बर 2022

1061. अनहरिया- शब्द संख्या: 1356, तिथि: 12 दिसम्बर 2022

1062. निरन्तर- शब्द संख्या: 3025, तिथि: 21 दिसम्बर 2022

1063. शॉर्टकट रास्ता- शब्द संख्या: 1620, तिथि: 26 दिसम्बर 2022

1064. अपेछा टुटि गेल- शब्द संख्या: 1739, तिथि: 30 दिसम्बर 2022

1065. सुनयना बेटी : 01- शब्द संख्या: 1728, तिथि: 05 जनवरी 2023

1066. सुनयना बेटी : 02- शब्द संख्या: 3540, तिथि: 14 जनवरी 2023

1067. सुनयना बेटी : 03- शब्द संख्या: 3722, तिथि: 25 जनवरी 2023

1068. सुनयना बेटी : 04- शब्द संख्या: 1987, तिथि: 30 जनवरी 2023

1069. सुनयना बेटी : 05- शब्द संख्या: 3802, तिथि: 06 फरवरी 2023

1070. सुनयना बेटी : 06- शब्द संख्या: 1821, तिथि: 10 फरवरी 2023

1071. सुनयना बेटी : 07- शब्द संख्या: 925, तिथि: 12 फरवरी 2023

1072. सुनयना बेटी : 08- शब्द संख्या: 2999, तिथि: 18 फरवरी 2023

1073. सुनयना बेटी : 19- शब्द संख्या: 1926, तिथि: 22 फरवरी 2023

1074. सुनयना बेटी : 10- शब्द संख्या: 1953, तिथि: 26 फरवरी 2023

1075. आब नइ जीब-  शब्द संख्या: 2097, तिथि: 2 मार्च 2023

1076. सेहन्ता सेहन्ते रहि गेल- शब्द संख्या: 2013, तिथि: 06 मार्च 2023

1077. धुरफन्ना लोक- शब्द संख्या: 1891, तिथि: 10 मार्च 2023

1078. घरदेखी- शब्द संख्या: 1846, तिथि: 14 मार्च 2023

1079. बासभूमि- शब्द संख्या: 2639, तिथि: 31 मार्च 2023

1080. इज्जत पर पड़ि गेल- शब्द संख्या: 2698, तिथि: 07 अप्रैल 2023

1081. अहीं जीतलौं- शब्द संख्या: 2884, तिथि: 13 अप्रैल 2023

1082. गामसँ गाए उपैट गेल- शब्द संख्या: 2454, तिथि: 20 अप्रैल 2023

1083. भारक बड़बड़िया- शब्द संख्या: 1727, तिथि: 24 अप्रैल 2023

1084. रूपैँ बदैल गेल- शब्द संख्या: 1736, तिथि: 28 अप्रैल 2023

1085. वंशक धर्म- शब्द संख्या: 1881, तिथि: 02 मई 2023

1086. उपराग- शब्द संख्या: 1358, तिथि: 05 मई 2023

1087. केकरा भगाउ आ केकरा बसाउ- शब्द संख्या: 1390, तिथि: 08 मई 2023

1088. खीरा लत्तीमे रोजगार- शब्द संख्या: 1377, तिथि: 11 मई 2023

1089. टकुआटान- शब्द संख्या: 2302, तिथि: 19 मई 2023

1090. पोस्टमार्टम- शब्द संख्या: 1852, तिथि: 23 मई 2023

1091. ऐ सालक नाह बुड़ि गेल- शब्द संख्या: 1761, तिथि: 27 मई 2023

1092. सामंजस्य- शब्द संख्या: 1868, तिथि: 01 जून 2023

1093. महींसवारक गाम- शब्द संख्या: 1337, तिथि: 04 जून 2023

1094. दसअना छहअना- शब्द संख्या: 1243, तिथि: 07 जून 2023

1095. वाह रे हम- शब्द संख्या: 1291, तिथि: 10 जून 2023

1096. एक जूम तमाकुल- शब्द संख्या: 1290, तिथि: 13 जून 2023

1097. चपरासी गाम- शब्द संख्या: 1201, तिथि: 17 जून 2023

1098. बनरफाँस- शब्द संख्या: 1279, तिथि: 19 जून 2023

1099. हँस्सा ठक- शब्द संख्या: 1889, तिथि: 26 जून 2023

1100. विश्वासू मन- शब्द संख्या: 1724, तिथि: 30 जून 2023

1101. चोरनी पिल्ली- शब्द संख्या: 1883, तिथि: 04 जुलाई 2023

1102. गामक जमीने पथरा गेल- शब्द संख्या: 1837, तिथि: 08 जुलाई 2023

1103. एकलव्यपन- शब्द संख्या: 2087, तिथि: 14 जुलाई 2023

1104. केलहा साफल- शब्द संख्या: 2102, तिथि: 19 जुलाई 2023

1105. त्रिशुलपर लटकल गाम- शब्द संख्या: 2007, तिथि: 23 जुलाई 2023

1106. त्रिशंकु गाम- शब्द संख्या: 2151, तिथि: 28 जुलाई 2023

1107. चारिम कनियाँ- शब्द संख्या: 1995, तिथि: 01 अगस्त 2023

1108. वंश नाश- शब्द संख्या: 1988, तिथि: 06 अगस्त 2023

1109. लोक लाज- शब्द संख्या: 1781, तिथि : 10 अगस्त 2023

1110. धानक कमठौन- शब्द संख्या: 1580, तिथि : 30 अगस्त 2023

1111. एक चुटकी खुशी- शब्द संख्या: 2053, तिथि : 02 सितम्बर 2023

1112. अनका सिर- शब्द संख्या: 1801, तिथि: शिक्षक दिसव 2023

1113. समयक फेड़- शब्द संख्या: 1531, तिथि: 08 सितम्बर 2023

1114. कोढ़ि- शब्द संख्या: 1511, तिथि: 11 सितम्बर 2023

1115. मुहाँ-ठुठ्ठी- शब्द संख्या: 1167, तिथि: 13 सितम्बर 2023

1116. औनाकऽ मरए लगलौं- शब्द संख्या: 1060, तिथि: 13 सितम्बर 2023

1117. जेहेन आँखि तेहेन पाँखि- शब्द संख्या: 1077, तिथि: 17 सितम्बर 2023

1118. चौरचनक केरा- शब्द संख्या: 1185, तिथि: 19 सितम्बर 2023

1119. सुख-दुख- शब्द संख्या: 1708, तिथि: 04 अक्टूबर 2023

1120. दुख-सुख- शब्द संख्या: 1629, तिथि: 07 अक्टूबर 2023

1121. जीवन की आ जीवनक उद्देश्य की- श. सं.: 1571, ति.: 10 अक्टूबर 2023

1122. अंधविश्वास- शब्द संख्या: 1509, तिथि: 13 अक्टूबर 2023

1123. बखेरिया लोक- शब्द संख्या: 1528, तिथि: 16 अक्टूबर 2023

1124. नव जीवन- शब्द संख्या: 1620, तिथि: 19 अक्टूबर 2023

1125. प्रीति- शब्द संख्या: 1610, तिथि: 19 अक्टूबर 2023

1126. पुरुषार्थ- शब्द संख्या: 1667, तिथि: 25 अक्टूबर 2023

1127. मन टँगि गेल- शब्द संख्या: 1702, तिथि: 28 अक्टूबर 2023

1128. नियति आ पुरुषार्थ- शब्द संख्या: 1714, तिथि: 31 अक्टूबर 2023

1129. जे ननू से गर्भहि ननू- शब्द संख्या: 1639, तिथि: 03 नवम्बर 2023

1130. पुरुखक डीह- शब्द संख्या: 1666, तिथि: 06 नवम्बर 2023

1131. पाशापर- शब्द संख्या: 1707, तिथि: 09 नवम्बर 2023

1132. संचरण- शब्द संख्या: 1743, तिथि: 14 नवम्बर 2023

1133. कंजूस- शब्द संख्या: 1636, तिथि: 17 नवम्बर 2023

1134. बाबाक पौती- शब्द संख्या: 1640, तिथि: 20 नवम्बर 2023

1135. भँसिया गेलौं- शब्द संख्या: 1614, तिथि: 23 नवम्बर 2023

1136. उबारि देलौं- शब्द संख्या: 1645, तिथि: 28 नवम्बर 2023

1137. श्रद्धा- शब्द संख्या: 1619, तिथि: 01 दिसम्बर 2023

1138. केकरोपर आश्रित- शब्द संख्या: 1641, तिथि: 04 दिसम्बर 2023

1139. समैया लुच्चा- जारी...

❑❑❑

❑❑

❑

# Notes